राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

10 अडानी विल्मर में अपनी पूरी हिस्सेदारी बेचेगा गौतम अडानी, कई कंपनियों ...

ममता बनर्जी ने कसा तंज- मैंने अपने नाम पर कोई सड़क या स्टेडियम ... 12

वर्ष : 11 | अंक : 177 | पटना, बुधवार , 08 नवंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

कैबिनेट फैसला : आरक्षण का दायरा बढ़ाने के प्रस्ताव पर लगी मुहर, 9 को सदन से कराया जाएगा पारित

आबादी का जो आंकड़ा आया है उस अनुरूप आरक्षण बढ़ाने की जरूरत : नीतीश

प्रात : किरण

पटना। नीतीश कुमार की कैबिनेट ने सूबे में आरक्षण का दायरा 60 प्रतिशत से बढ़ाकर 75 प्रतिशत करने का प्रस्ताव पास कर दिया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार विधानसभा में मंगलवार को ही आरक्षण बढ़ाने का सुझाव दिया था, इसके कुछ ही घण्टे बाद ही कैबिनेट ने इस पर मुहर लगा दी। अब आरक्षण बिल को 9 नंबर को सदन के पटल पर रखा जाएगा। सदन से बिल पारित होने के बाद राज्यपाल को भेजा जाएगा। कैबिनेट से पास बिल के बाद पिछड़ा वर्ग को 18 फीसदी, अति पिछड़ा वर्ग को 25 फीसदी, अनुसूचित जाति को 20 फीसदी, अनुसूचित जनजाति को 2 फीसदी का आरक्षण मिलेगा। वहीं, आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों को 10 फीसदी आरक्षण मिलता रहेगा। 9 नवंबर को सदन के पटल पर इसे पारित कराया जाएगा। इस तरह से अब बिहार में कुल 75 फीसदी आरक्षण का प्रावधान हो गया। अब सिर्फ 25 फीसदी अनारक्षित रह गई है। कैबिनेट मीटिंग में कुल चार प्रस्ताव पर मुहर लगी। जिसमें सभी गरीब परिवारों को जीवकोपार्जन के लिए दो-दो लाख रुपए देने का निर्णय हुआ है। जिनके पास जमीन नहीं है उनके लिए जमीन की व्यवस्था करने और मकान के लिए1 लाख की जगह पर 1 लाख 20 हजार रुपए देने का

- आरक्षण का दायरा 60 प्रतिशत से बढ़ाकर 75 प्रतिशत करने पर सहमति

प्रावधान किया गया है। इससे पहले, बिहार विधानमंडल में सामाजिक आर्थिक रिपोर्ट पेश होने के बाद मुख्यमंत्री ने दोनों सदनों में मौजूदा 50 प्रतिशत आरक्षण को बढ़ाकर 65 फीसदी करने का सुझाव दिया था। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि जातीय गणना सर्वे से पिछड़ा और अति पिछड़ा सहित एससी और एसटी आबादी का जो आंकड़ा आया है उस अनुरूप आरक्षण बढ़ाने की जरूरत है। इसके लिए मेरा यह कहना है कि जो 50 प्रतिशत आरक्षण है, उसे हम 65 प्रतिशत कर

दें। पहले से अगड़ी जातियों को 10 प्रतिशत है तो इस 65 प्रतिशत के बाद कुल आरक्षण 75 प्रतिशत हो जाएगा। तब अनारक्षित 25 प्रतिशत बचेगा। वहीं, बिहार के 94 लाख से अधिक गरीब परिवारों के लिए सीएम नीतीश ने एक अन्य महत्वपूर्ण प्रस्ताव दिया। उन्होंने कहा कि बिहार में 94 लाख से ज्यादा ऐसे परिवार हैं जिनकी मासिक आमदनी 6 हजार रुपए तक है। ऐसे परिवारों को आर्थिक रूप से सबल बनाने के लिए बिहार सरकार उन्हें 2 लाख रुपए की आर्थिक सहायता करने का प्रस्ताव रखती है। साथ ही बिहार के आवास विहीन परिवारों के लिए सीएम नीतीश ने सदन में बड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा कि राज्य में 63,850 परिवारों के रहने का आवास नहीं है। ऐसे परिवारों के लिए राज्य सरकार जमीन खरीदने के लिए 1 लाख और मकान बनाने के लिए 1.20 लाख रुपए देने का सुझव रखती है। उन्होंने कहा कि इस पर कुल खर्च 2 लाख 50 हजार करोड़ रुपए आएगा। इसे पांच साल में पूरा करने का लक्ष्य बिहार सरकार रखती है। इसके तहत प्रति वर्ष 50 हजार करोड़ रुपए का खर्च किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अगर केंद्र सरकार द्वारा बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दे दिया जाए तो यह लक्ष्य और भी कम समय में पूरा हो जाएगा। सीएम ने जीविका दीदियों की संख्या बढ़ाने की भी बात कही। कहा कि अब बिहार में जीविका दीदियों की संख्या डेढ़ करोड़ हो जाएगी। दो जीविका से जुड़ रहे हैं, उन्हें भी बिहार सरकार मदद दे रही है। इसके अलावा सतत जीविकोपार्जन योजना में अब तक हमलोग एक लाख रुपये की मदद देते थे, इसे बढ़ाकर 2 लाख रुपये कर दिया जाएगा। वैसे जाति आधारित गणना में वैसे पंचायतों को भी चिह्नित किया जा रहा है जहां साक्षरता दर कम है। बिहार सरकार इन पंचायतों में साक्षरता दर बढ़ाने के लिए काम करेगी।

संक्षिप्त खबरें

भारत 22 नवंबर को जी20 की ऑनलाइन बैठक की मेजबानी करेगा

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में 22 नवंबर को आयोजित होने वाले जी20 के नेताओं के ऑनलाइन शिखर सम्मेलन के दौरान रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-हमास संघर्ष और ग्लोबल साउथ (विकासशील देशों) के समक्ष चुनौतियों समेत अन्य मुद्दे उठ सकते हैं। मामले से जुड़े लोगों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। सितंबर में दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन के अंत में भारत ने घोषणा की थी कि वह अपनी अध्यक्षता के अंत से पहले समूह के नेताओं की एक ऑनलाइन बैठक आयोजित करेगा। भारत ने ऑनलाइन शिखर सम्मेलन के लिए पहले ही जी20 सदस्य देशों के नेताओं को निमंत्रण भेज दिया है। समझा जाता है कि भारत समूह के लिए अपने विकास एजेंडे पर ध्यान केंद्रित करेगा जिसमें ग्लोबल साउथ या विकासशील देशों के सामने आने वाली चुनौतियों पर तवज्जो देना शामिल है। शिखर सम्मेलन के अंत में कोई संयुक्त परिणाम दस्तावेज जारी नहीं किया जाएगा।

भारत ने प्रलय मिसाइल का सफल प्रक्षेपण किया

बालासोर (ओडिशा)। भारत ने ओडिशा तट के पास अब्दुल कलाम द्वीप से सतह से सतह पर मार करने वाली कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल (एसआरबीएम) प्रलय का मंगलवार को सफल परीक्षण किया। एक रक्षा अधिकारी ने यह जानकारी दी। इस मिसाइल को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने विकसित किया है। अधिकारी ने बताया कि पूर्वाह्न करीब नौ बजकर 50 मिनट पर प्रक्षेपित की गई मिसाइल ने अपने सभी मिशन उद्देश्यों को पूरा किया। उन्होंने बताया कि समुद्र तट के पास कई उपकरणों ने इसके प्रक्षेप पथ पर नजर रखी। अधिकारी ने कहा कि प्रलय 350-500 किलोमीटर की कम दूरी वाली सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है, जो 500 से 1,000 किलोग्राम का पेलोड साथ ले जाने में सक्षम है। उन्होंने बताया कि प्रलय को वास्तविक नियंत्रण रेखा और नियंत्रण रेखा के पास तैनात करने के लिए विकसित किया गया है।

आतंकी हमले के बारे में जानकारी देने वालों को दस-दस लाख रुपये के इनाम की घोषणा

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने मंगलवार को घाटी में आतंकवादियों द्वारा हाल ही में किए गए तीन लक्षित हमलों के बारे में जानकारी देने वाले को 10-10 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की है। इन हमलों में एक पुलिसकर्मी और एक प्रवासी मजदूर की मौत हो गई थी। पुलिस ने एक सार्वजनिक नोटिस में 30 अक्टूबर से लगातार तीन दिनों तक हुए आतंकवादी हमलों के बारे में विश्वसनीय जानकारी देने वाले प्रत्येक को 10 लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की। एक हमले में पुलिस इंस्पेक्टर मसरूर अली वानी उस समय गंभीर रूप से घायल हो गए थे जब एक आतंकवादी ने उन पर गोली चला दी थी।। घटना के समय वह यहां ईदगाह के मैदान में क्रिकेट खेल रहे थे। अगले दिन पुलवामा के ट्रमची नौपोरा इलाके में एक प्रवासी मजदूर मुकेश कुमार की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके एक दिन बाद, बारामूला के वेलू क्रालपोरा इलाके में हेड कांस्टेबल गुलाम मोहम्मद की उनके आवास के बाहर गोली मारकर हत्या कर दी गई।

प्रधानमंत्री की तरह ईडी भी भाजपा की स्टार प्रचारक है : खरगे

ग्वालियर/एजेंसी। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तरह, प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) मौजूदा विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी का स्टार प्रचारक है। मध्य प्रदेश में 17 नवंबर को होने वाले चुनाव से पहले यहां एक जनसभा में उन्होंने कहा कि केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और आयकर विभाग भी भाजपा की ओर से मैदान में हैं। खरगे ने कहा, कांग्रेस के पास एक उम्मीदवार (प्रति निर्वाचन क्षेत्र) है, लेकिन भाजपा के पास चार हैं। एक (पार्टी) उम्मीदवार है जो दिखाई दे रहा है, लेकिन तीन अन्य हैं जो अदृश्य हैं ङ्क.ईडी, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तरह एक स्टार प्रचारक की तरह प्रचार कर रहा है। दूसरा उम्मीदवार है सीबीआई, जो (प्रतिद्वंद्वी) उम्मीदवारों को कमजोर करने के लिए उनके पीछे भी जाती है और तीसरा उम्मीदवार है आयकर। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, इन तीनों के अलावा, मोदी और (मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह) चौहान भी हैं। वे प्राचीन समय के नहीं बल्कि आज के पांच पांडव की तरह हैं, जो हमें हराने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हमें उन्हें सबक सिखाना होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस शासित छत्तीसगढ़ में चुनाव होने के कारण ईडी वहां पार्टी के नेताओं को परेशान कर रहा है और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को धमकी दे रहा है। उन्होंने कहा, यह कोई लोकतांत्रिक तरीका नहीं है और न ही बराबरी का मौका है, लेकिन यह डराना-धमकाना चल रहा है।

नीतीश सरकार ने विधानमंडल के दोनों सदनों में जाति आधारित गणना की पूरी रिपोर्ट की पेश

सूबे में एक तिहाई से ज्यादा आबादी गरीब, 34.13 प्रतिशत परिवारों की मासिक आमदनी मात्र छह हजार

सबसे अधिक अनुसूचित जाति में 42.93 प्रतिशत गरीब

- पिछड़ा वर्ग में यादव और सामान्य वर्ग में भूमिहार में सबसे ज्यादा गरीब
- सामान्य वर्ग में 25.09 प्रतिशत, अत्यंत पिछड़ा वर्ग के 33.58, पिछड़ा वर्ग के 33.16 फीसदी गरीब

प्रात : किरण

पटना। बिहार सरकार ने मंगलवार को विधानमंडल के दोनों सदनों में जाति आधारित गणना की पूरी रिपोर्ट पेश कर दी, जिसमें सामाजिक आर्थिक सर्वेक्षण के आंकड़े भी शामिल हैं। संसदीय कार्य मंत्री विजय कुमार चौधरी ने जाति आधारित गणना की पूरी रिपोर्ट को सदन के पटल पर रखा। रिपोर्ट के अनुसार, बिहार की एक तिहाई से ज्यादा आबादी गरीब है। करीब 34.13 प्रतिशत परिवारों की मासिक आमदनी मात्र छह हजार रुपए और छह हजार से 10 हजार रुपए प्रति महीना वाले परिवारों की संख्या 29.61 प्रतिशत बताई गई है। यानी राज्य में 10 हजार रुपए प्रति महीना तक की आदमनी वाले परिवारों की संख्या 63 फीसदी से ज्यादा है। इसी तरह 10 हजार से ज्यादा लेकिन 20 हजार प्रति माह से कम आमदनी वाले परिवारों की संख्या 18.06 प्रतिशत है। 20 हजार से 50 हजार मासिक आमदनी वाले परिवार 9.83 प्रतिशत हैं। वहीं, पचास हजार से ज्यादा कमाने वाले परिवारों का प्रतिशत मात्र 3.90 है। सर्वे के मुताबिक राज्य के 4.47 प्रतिशत परिवारों ने अपनी आय की जानकारी नहीं दी।

पिछड़ा वर्ग में यादव और सामान्य वर्ग में भूमिहार में सबसे ज्यादा गरीब : रिपोर्ट के अनुसार, बिहार में सबसे ज्यादा गरीबी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति में है। अनुसूचित जातियों में 42.93 प्रतिशत और अनुसूचित जनजातियों में 42.70 प्रतिशत परिवार आर्थिक तौर पर कमजोर हैं। इसी तरह अत्यंत पिछड़ा वर्ग के 33.58, पिछड़ा वर्ग के 33.16 और सामान्य वर्ग के 25.09 प्रतिशत परिवार गरीब है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, पिछड़ा वर्ग में यादव जाति और सामान्य वर्ग में भूमिहार जाति में सबसे ज्यादा गरीब हैं। यादवों की आबादी में 35.87 प्रतिशत परिवार और भूमिहारों में 27.58 प्रतिशत परिवार गरीब हैं। पिछड़ा वर्ग में यादवों के बाद सबसे ज्यादा गरीबी कुशवाहा(कोईरी) परिवारों में है, यह संख्या 34.32 प्रतिशत है। वहीं, सामान्य वर्ग में भूमिहार के बाद ब्राह्मणों में 25.32 प्रतिशत परिवार गरीब हैं। इसी प्रकार राजपूत में 24.89 प्रतिशत परिवार गरीब हैं। बिहार में सामान्य वर्ग में सबसे धनी कायस्थ जाति है, जिसमें मात्र 13.83 प्रतिशत परिवार ही गरीब हैं।

अनुसूचित जाति में सबसे ज्यादा मुसहर गरीब: रिपोर्ट के अनुसार, अनुसूचित जाति में सबसे ज्यादा मुसहर गरीब हैं। मुसहर में 54 प्रतिशत, भुइया में 53, रविदास (चमार, मोची) में 42, पासवान (दुसाध), धारी, धरही तथा चौपाल में 39-39, पासी में 38, धोबी (रजक) में 35 प्रतिशत परिवार गरीब हैं। इसी तरह नाई 38.37, मल्लाह में 34.56, पान, सवासी, पानर 36, धानुक 34.35, नोनिया 35.88, चंद्रवंशी (कहार) 34.08, कुम्हार (प्रजापति) 33.39, कानू 32.99 और बढ़ई जाति के 27.71 प्रतिशत परिवार गरीब हैं।

16.73 प्रतिशत लोग मजदूर-मिस्त्री के तौर पर कर रहे जीवन यापन

पटना। बिहार में शैक्षणिक स्थिति के संबंध में रिपोर्ट में बताया गया है कि राज्य में मात्र सात प्रतिशत लोग ही स्नातक (ग्रेजुएट) हैं। राज्य की 22.67 प्रतिशत आबादी क्लास 1 से 5 तक, 14.33 प्रतिशत 6-8 तक, 14.71 प्रतिशत क्लास 9 से 10 तक पढ़ी-लिखी है। रिपोर्ट के अनुसार राज्य में सबसे अधिक 16.73 प्रतिशत मजदूर/मिस्त्री के तौर पर जीवन यापन कर रहे हैं जबकि 7.7 प्रतिशत किसान/काश्तकार हैं।

वहीं, 1.57 प्रतिशत लोग सरकारी नौकरी, 1.22 प्रतिशत संगठित क्षेत्र में प्राइवेट जॉब, 2.14 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में प्राइवेट जॉब, 3.05 प्रतिशत स्वरोजगार कर रहे हैं। राज्य में 67.54 प्रतिशत गृहिणी और छात्र हैं। वहीं राज्य में 0.02 प्रतिशत लोग कचरा चुनकर और 0.03 प्रतिशत लोग भीख मांग कर जीवन गुजर बसर कर रहे हैं।

सरकारी नौकरी में सबसे ज्यादा 3.19 प्रतिशत लोग सामान्य वर्ग के : सर्वे रिपोर्ट के अनुसार, सरकारी नौकरी में सबसे ज्यादा 3.19 प्रतिशत लोग सामान्य वर्ग के हैं। सामान्य वर्ग में सबसे अधिक 6.68 फीसदी कायस्थ जाति के पास सरकारी नौकरी है। इसके बाद भूमिहारों के पास 4.99 प्रतिशत, राजपूत के पास 3.81 प्रतिशत, ब्राह्मण के पास 3.60 प्रतिशत सरकारी नौकरी है। वहीं, पिछड़ा वर्ग में भाट/भट के पास सबसे अधिक 4.21 प्रतिशत सरकारी नौकरी है। इनके बाद कुर्मी के पास 3.11, कुशवाहा (कोईरी) के पास 2.04 और यादवों के पास 1.55 प्रतिशत सरकारी नौकरी है। अनुसूचित जाति (एससी) में सबसे अधिक धोबी के पास 3.14 प्रतिशत सरकारी नौकरी है। रिपोर्ट के अनुसार बिहार में परिवारों की आवासीय स्थिति जिसमें पक्का मकान 2 या 2 से अधिक कमरा वाला परिवार 36.76 प्रतिशत है। पक्का मकान एक कमरा वाले परिवार 22.37 प्रतिशत है जबकि खपरैल/टीन छत वाले परिवार 26.54 प्रतिशत है। इसके साथ ही झोपड़ी में रहने वाले परिवार की संख्या 14.9 प्रतिशत है। वहीं, आवासहीन परिवार 0.24 प्रतिशत है।

कांग्रेस परिवारवाद का सबसे बड़ा प्रतीक : मोदी

प्रात : किरण

सीधी/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज कहा कि कांग्रेस देश में परिवारवाद का सबसे बड़ा प्रतीक बन गयी है और यही वजह है कि मध्यप्रदेश में भी इस दल के दो नेता अपने बेटों को स्थापित करने के लिए लड़ रहे हैं। श्री मोदी ने राज्य के विंध्य अंचल के सीधी में भारतीय जनता पार्टी प्रत्याशियों के समर्थन में आयोजित चुनावी सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर विंध्य अंचल के पार्टी प्रत्याशी भी मौजूद थे। श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस देश में परिवारवाद का सबसे बड़ा प्रतीक है। उन्होंने किसी का नाम लिए बगैर कहा कि मध्यप्रदेश में कांग्रेस के दो बड़े नेता आपस में इसलिए लड़ रहे हैं कि उनके बेटों का कांग्रेस पर कब्जा हो जाए। इसलिए ये नेता एक दूसरे के कपड़े फाड़ने की बात भी कर रहे हैं।

श्री मोदी ने सवालिया अंदाज में कहा कि जिन नेताओं की प्राथमिकता अपने बेटों का भविष्य है, वो आम जनता की क्या सोचेगा। उन्होंने राज्य के 18 से 25 वर्ष आयु के मतदाताओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे इस बात का चिंतन करें कि देश में आजादी के बाद छह सात दशक तक पंचायत से लेकर संसद तक हर जगह कांग्रेस की ही सत्ता थी। लेकिन अब यह पार्टी गिनती के राज्यों में क्यों सिमटकर रह गयी। श्री मोदी ने कहा कि कांग्रेस के कार्यों ने गरीबों की जेब साफ करने का काम किया है। इसलिए जिस राज्य में भी कांग्रेस एक बार गयी, वहां वह दोबारा नहीं आयी। कांग्रेस मध्यप्रदेश में भी दो दशकों से बहुमत के लिए तरस रही है। श्री मोदी ने कहा कि इसके अलावा कांग्रेस दिल्ली दरबार में हाजिरी लगाने वालों को तवज्जो देती है। कांग्रेस ने किसी भी वर्ग का ध्यान नहीं रखा। इनकी नीतियां दलित और अनुसूचित जाति विरोध की भी हैं। ये लोग मोदी को गाली देते देते अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) को भी भला बुरा बोलने लगे।

प्रधानमंत्री ने गरीब कल्याण योजना की अवधि बढ़ाकर किया अचार संहिता का उल्लंघन : कांग्रेस

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस ने आरोप लगाया है कि प्रधानमंत्री मोदी ने छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान पीएम गरीब कल्याण योजना (पीएमजीकेपी) की समय सीमा पांच वर्ष बढ़ाने की घोषणा कर आदर्श अचार संहिता का उल्लंघन किया है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने मंगलवार को एक्स पर लिखा कि छत्तीसगढ़ चुनाव प्रचार के बीच में पीएम गरीब कल्याण योजना को पांच साल के लिए आगे बढ़ाने की घोषणा करना दिखाता है कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) चुनाव हार रही है। यह आदर्श आचार संहिता का खुलेआम उल्लंघन भी है। रमेश ने कहा कि पीएमजीकेपी को पांच साल के लिए आगे बढ़ाने को लेकर अभी केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी नहीं दी है। उसके पहले पीएम मोदी ने योजना की समय सीमा को आगे बढ़ाने की घोषणा कर दी। ऐसा करना नियम विरुद्ध है। चुनाव आयोग को उन पर कार्रवाई करनी चाहिए। रमेश ने कहा कि जब नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री थे, तो उन्होंने इस योजना का विरोध किया था। अब पांच साल के लिए इसका विस्तार न केवल प्रधानमंत्री की कमजोर होती छवि को, बल्कि गहराते आर्थिक संकट और वित्तीय पीड़ा को भी दिखाता है।

दिल्ली-प्रदूषण : सुप्रीम कोर्ट का पांच राज्यों को पराली जलाने को रोकने का आदेश

प्रात : किरण

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में जानलेवा प्रदूषण के मद्देनजर मंगलवार को पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और दिल्ली सरकारों को पराली जलाने पर तत्काल रोक लगाने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति संजय किशन कौल और सुधांशु धूलिया की पीठ ने संबंधित सरकारों से कहा कि उसे या तो बलपूर्वक कार्रवाई करके या प्रोत्साहन के जरिए पराली जलाने से रोकना होगा। पीठ ने पराली जलाने पर रोक के अमल के लिए स्थानीय थाना प्रमुख को पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) और मुख्य सचिव की निगरानी में निर्देश को लागू करने के लिए जिम्मेदार बनाया। पीठ ने सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता, वरिष्ठ अधिवक्ता विकास सिंह, गोपाल शंकरनारायणन और न्याय मित्र वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह तथा अन्य की दलीलें सुनने के बाद यह आदेश पारित किया। पीठ ने अपने आदेश में कहा, पराली जलाना प्रदूषण का बड़ा हिस्सा है। इसे रोकना चाहिए। यह एक प्रमुख मुद्दा और प्रदूषण के लिए जिम्मेवार है। धान की खेती एक समस्या है। तुरंत कुछ किया जाना चाहिए। यह फसल राज्य के जल स्तर को भी नष्ट कर रही है। न्यूनतम समर्थन मूल्य की वजह से दूसरे राज्यों से अनाज की तस्करी हो

रही है। शीर्ष अदालत ने कहा, हम चाहते हैं कि इस मुद्दे को कल सुलझा लिया जाए, ताकि अगले साल इसकी पुनरावृत्ति न हो। पीठ ने यह भी कहा कि पराली जलाने और वाहन प्रदूषण के अलावा समस्या के कई महत्वपूर्ण बिंदु हैं। शीर्ष अदालत ने बुधवार को सभी हितधारकों की एक बैठक बुलाने का आदेश दिया। वजह यह कि अदालत ने इस मामले में अगली सुनवाई शुक्रवार को करने का निर्णय लिया है। पीठ ने कहा, दिल्ली के निवासी पीड़ित हैं क्योंकि हम इस अवधि में गंभीर समस्या का समाधान ढूंढने में विफल रहे हैं। शीर्ष अदालत ने कहा, यह पांच साल से चल रहा है। अब कुछ करने का समय है। इस मामले पर तत्काल ध्यान देने और अदालत की निगरानी की जरूरत है। शीर्ष अदालत के समक्ष पंजाब सरकार ने कहा कि किसानों को संबंधित मशीन खरीदने के लिए वह 25 फीसदी लागत वहन करने के लिए तैयार है। इतनी ही राशि दिल्ली द्वारा वहन किया जा सकता है और केंद्र को 50 फीसदी प्रदान करना चाहिए। इसमें कहा गया है कि ऐसा कोई कारण नहीं है कि लागत केंद्र द्वारा वहन न की जाए। श्री मेहता ने दिल्ली के मुख्यमंत्री के सुझाव का जिक्र किया कि कोई ऐसा घोल छिड़का जा सकता है जो पराली को उर्वरक में बदल दे। उन्होंने कहा, उन्हें यह बताने दीजिए कि यह प्रभावी है या नहीं।

कार्यक्रम सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा आयोजित जल जीवन हरियाली दिवस कार्यक्रम को निदेशक ने किया संबोधित

जल जीवन हरियाली अभियान को सबसे पहले स्वयं से शुरू करें : अमित

प्रात : किरण

पटना। जल जीवन हरियाली अभियान की शुरूआत सबसे पहले स्वयं से शुरू करें, ताकि जनमानस में सरकार के कार्यक्रम व योजनाए जो जनता के लिए ही हैं, उसके प्रति अधिकाधिक स्वीकार्यता बढ़े। उक्त बातें मंगलवार को सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा सूचना भवन स्थित संवाद सभाकक्ष में आयोजित जल जीवन हरियाली दिवस संबंधी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए निदेशक अमित कुमार ने कहीं। उन्होंने अपने संबोधन में जोर देकर कहा कि यह आयोजन महज विचार व्यक्त करने तक सीमित न रहकर निरंतर इस दिशा में कार्य करने हेतु आगे बढ़ने का फोरम बने तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होती है। निदेशक ने जल-जीवन-हरियाली अभियान से जुड़े 11 घटकों की क्रमबद्ध चर्चा करते हुए इसकी गंभीरता तथा उपयोगिता पर व्यापक प्रकाश डाला। कार्यक्रम को मिशन उप निदेशक अजित कुमार ने भी संबोधित करते हुए इस अभियान के विभिन्न घटकों पर कार्यों के परिणामस्वरूप प्राप्त उपलब्धियों पर चर्चा की। सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के संयुक्त सचिव सत्येन्द्र कुमार सिंह ने सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग द्वारा इलेक्ट्रोनिक एवं सोशल मीडिया के जरिए सरकार के कार्यों के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डाला। कृषि विभाग के उप निदेशक शशि शेखर मंडल ने पृथ्वी पर उपलब्ध जल से जुड़े कई अहम तथ्यों पर प्रकाश डालते हुए इसके संरक्षण के उपायों पर जोर दिया, भवन निर्माण विभाग के अधीक्षण अभियंता विनोद चैधरी ने विभाग द्वारा कई निर्माण कार्यों, उपलब्धियों सहित रूफ वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की उपयोगिता को रौशन किया।

साथ ही श्री चैधरी ने बिहार सरकार के इस अभियान की चर्चा युनाइटेड नेशंस महासभा में किए जाने की जानकारी देते हुए बिहार के प्रति गौरव-बोध भी कराया। सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के उप निदेशक लाल बाबू सिंह ने पृथ्वी के गर्म होने से उत्पन्न प्रभावों का जिक्र करते हुए भावी पीढ़ी के अस्तित्व पर संकट की चिंता व्यक्त करते हुए जन-जन से आग्रह किया कि पर्यावरण संरक्षण को अपनी प्राथमिकताओं में डालें। सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के पीआर एक्सपर्ट आनंद कौशल ने विभाग द्वारा किए जा रहे तमाम प्रचार-घटकों के संदर्भ में जानकारियां दी। उक्त कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए उप सचिव शिवशंकर लाल श्रीवास्तव ने स्वागत भाषण एवं विषय उपस्थापन किया। उन्होंने जल-जीवन-हरियाली अभियान के संदर्भ में महत्वपूर्ण जानकारियां देते हुए बताया कि प्रत्येक माह का प्रथम मंगलवार इसके लिए समर्पित है तथा इस अभियान से जुड़े विभागों में से किसी एक विभाग द्वारा ऐसा आयोजन किया जाता है। इसी कड़ी में आज सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग इस उत्तरदायित्व को निभा रहा है। कार्यक्रम का संचालन उप निदेशक सुनील कुमार पाठक ने किया और जल-जीवन-हरियाली अभियान में शामिल सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग की महनीय भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में उप निदेशक डॉ नीना झा ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सर्वप्रथम मुख्यमंत्री के जल-जीवन-हरियाली अभियान की सोच तथा संकल्प के प्रति आभार व्यक्त किया तथा बाद में कार्यक्रम में सहभागी प्रतिभागी तमाम पदाधिकारी व कर्मियों के सौजन्य से एक सफल आयोजन हेतु सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। उक्त कार्यक्रम के प्रारंभ में पारम्परिक रीति का पालन करते हुए दीप प्रज्वलन सहित सभी को पौधा भी भेंट किया गया। कार्यक्रम में सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग के सभी वरीय पदाधिकारी (संयुक्त सचिव संजय कृष्ण, संयुक्त सचिव मृणायक दास, संयुक्त निदेशक माला कुमारी, संयुक्त निदेशक रवि भूषण सहाय सहित अन्यान्य पदाधिकारी तथा कर्मी के अतिरिक्त उक्त अभियान के विभिन्न 15 घटक विभागों के नोडल पदाधिकारी तथा प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

संक्षिप्त खबरें

खाद दुकान से लाखों की चोरी

फतुहा। बीते सोमवार की रात थाना क्षेत्र के डुमरी रक्षा बांध के पास स्थित एक खाद दुकान से करीब डेढ लाख रुपए की नकदी समेत खाद की चोरों ने चोरी कर ली। चोरों ने इस घटना को अंजाम दुकान की शटर उखाड़कर दिया है। इस बात की जानकारी खाद दुकान के मालिक प्रमोद कुमार को तब हुई जब सुबह मॉर्निंग वाक पर निकले ग्रामीणों ने उन्हें फोन पर सूचना दी। डुमरी गांव निवासी दुकान मालिक प्रमोद कुमार तत्काल दुकान पर पहुंचे और देखा कि दुकान का शटर एक तरफ से उखड़ा हुआ है और दुकान में रखे खाद की कई बोरी गायब है। गल्ले से भी तीन चार हजार रुपए गायब है। पीड़ित के द्वारा पुलिस को सूचना दी गयी। पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर घटना की छानबीन की। दुकान के बाहर टायरों के निशान उभरे हुए थे। आशंका जताई जा रही है कि चोरों द्वारा खाद की बोरी को किसी चार चक्के वाली वाहन पर लोड कर ले जाया गया है। पीड़ित दुकान मालिक प्रमोद कुमार के मुताबिक डीएपी खाद की बीस बोरी, गेहूं के बीज की 70 बोरी, यूरिया खाद की 25 बोरी के साथ दुकान में रखे इलेक्ट्रॉनिक कांटा भी चोरों ने चोरी कर ली है। इस सन्दर्भ में पीड़ित दुकान मालिक ने अज्ञात चोरों के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करायी है। शिकायत के आलोक में पुलिस मामले की जांच कर रही है।

हजरत पीर नासिरउद्दीन शाह रामतुल्लाह अलैहे का उर्स 8 व 9 नवंबर को मनाया जायेगा

दानापुर खगौल। हजरत पीर नासिरउद्दीन शाह रामतुल्लाह अलैहे का सालाना उर्स 8 और 9 नवंबर को गाँधी स्कूल रोड में स्थित मजार पर मनाया जायेगा। 8 नवंबर को सुबह में कुरानखवानी, बाद नमाज जोहर मजार शरीफ का गुसूल और रात में मिलादुन नबी का प्रोग्राम रखा गया है वहीं 9 नवंबर को नेयाज-फातिहा, गुलपोशी और चादरपोशी का प्रोग्राम दिन और रात में चलता रहेगा। मालूम हो की इसमें हजारों की संख्या में हर साल सभी धर्म के लोग बाबा के दरबार में हाजिर होते हैं और अपनी खाली झोली लेकर आते है और भर कर जाते हैं। इसकी जानकारी ताज एकता कमेटी के अध्यक्ष मो0 रिंकू मो0 मनोहर मो0 गुड्डू मो0 सद्दाब मो0 आदिल मो0तालिब मो0 गोल्डन सहित सामाजिक कार्यकर्ता चंदू प्रिंस अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

नृत्य और प्रकाश के बीच महिलाओं ने बांधा समां

पटना सिटी (प्राकि)। इनर व्हील पटना सिटी के द्वारा केएस स्क्वायर में दीपोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें क्लब की सदस्याओं ने जमकर मस्ती की। इस दौरान तरह-तरह के गेम्स भी खेले गए। साथ ही दीपावली मिलन समारोह में अनेक नृत्य भी कल्ब की सदस्याओं के द्वारा पेश किया गया। इस दौरान दिवाली के गीत पर महिलाएं झूमीं। कार्यक्रम की शुरूआत सचिव यामिनी मित्तल के द्वारा प्रथम पूज्य श्री गणेश के भजन के साथ हुई। मंच का संचालन मधु और यामिनी मित्तल द्वारा किया गया। अध्यक्ष मीनू गुप्ता के द्वारा क्लब की सभी सदस्याओं को दीपावली की शुभकामनाएं और उपहार भी दिया गया। आयोजन में सुप्रिया जयसवाल, मीनू गुप्ता, रेणु जायसवाल, रीता रस्तोगी, पूजा एन शर्मा, कविता अरोड़ा, रुचि अरोड़ा, ममता शर्मा, रश्मि अरोड़ा, लता कपूर आदि शामिल थीं।

खाता से 1.53 लाख की अवैध निकासी

पटना सिटी (प्राकि)। चौक थाना क्षेत्र के दुंदी बाजार के रहने वाले प्रभात कुमार के खाते से अवैध ढंग से रुपए की निकासी कर ली गई है। उन्होंने बताया कि एक लाख 53 हजार रुपए की अवैध निकासी की गई है। इसकी जानकारी प्रभात के द्वारा साइबर सेल एवं चौक थाना की पुलिस को दी गई है। मोबाइल पर आए मैसेज के बाद राशि की अवैध निकासी की जानकारी हुई। हालांकि उन्होंने किसी प्रकार का कोई लेन-देन अपने खाता से नहीं किया था।

दहेज प्रताड़ना का आरोप, प्राथमिकी

पटना सिटी (प्राकि)। अगमकुआं थाना क्षेत्र के ट्रांसपोर्टनगर के मौर्य विहार कालोनी की रहने वाली ममता कुमारी ने दहेज प्रताड़ना का मामला दर्ज कराया है। इसमें उन्होंने सास, श्वसुर व अन्य को आरोपी बनाया है। आरोप है कि सास-श्वसुर का कहना है कि अगर घर में रहना है, तो दहेज के बाकी दस लाख रुपए लाओ। दंपति ने 112 पर फोन करके पुलिस को घर पर बुला स्थिति से अवगत कराया। इसके बाद अगमकुआं थाना में मामला दर्ज कराया गया।

ताला बंद मकान में हुई चोरी

पटना सिटी (प्राकि)। चोरी की घटनाएं क्षेत्र में लगातार हो रही है। जिस संख्या में चोरी की घटना हो रही है उसका उद्वेदन या सामान की बरामद की का औसत काफी कम है। कुम्हरार स्थित उषा कुमारी के घर में अज्ञात चोरों ने मंगलसूत्र, एटीएम कार्ड व गुल्लक सहित अन्य सामान चोरी कर लिया है। जब चोरी की घटना हुई, तब परिवार के लोग लखीसराय गए हुए थे। अगमकुआं थाना की पुलिस ने बताया कि प्राथमिकी दर्ज कर मामले की छानबीन की जा रही है।

कंगन घाट जाने वाला रास्ता बदहाल, लग रहा जाम

पूर्वी फ्लैंक को चालू किए जाने को ले प्रशासन गंभीर नहीं

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अशोक राजपथ से कंगन घाट की ओर जाने और आने के लिए जब तक दो रास्ता था, तब तक लोगों को कोई परेशानी नहीं थी। मगर रैयतदार के द्वारा मामला हाईकोर्ट में ले जाने और उसके पक्ष में आदेश आ जाने के बाद वैशाली जिला के पुलिस प्रशासन के द्वारा उसे कब्जा दिला दिया गया। इसके बाद से वह रोड आवागमन के लिए बंद है। इसके बाद पश्चिमी छोर के संकरे रास्ते से वाहनों और पैदल चलने वालों का आवागमन हो रहा है। इस कारण से दिन भर में किस्तों में अनेक बार जाम की स्थिति बन रही है।

इस मामले में जिलाधिकारी डॉ चंद्रशेखर सिंह ने कंगन घाट का मुआयना करने के बाद डीसीएलआर को सप्ताह-दस दिन में जमीन अधिग्रहण से संबंधित प्रक्रिया पूरी करने को कहा था। बाद में राष्ट्रपति महोदया के तख्तश्री पटना साहिब आगमन पर बैठक के दौरान कमेटी के पदाधिकारियों के द्वारा याद दिलाने पर डीएम ने साथ रहे एसडीओ गुंजन सिंह को मामले में पहल कर रास्ता खुलवाने को कहा था। हालांकि एसडीओ दशहरा के दौरान वहां जाकर पानी से भरे गड्ढे को नगर निगम के जेसीबी और हाईवा की मदद से मिट्टी डलवा कर भरवायीं, ताकि

पैदल लोगों का आने-जाने में सहूलियत हो सके। मगर इसके बाद कोई सुगबुगाहट नहीं है। हालांकि रैयतदार प्रशासन को जमीन देने के लिए मुआवजा लेकर तैयार है।

फिलहाल कंगन घाट के पश्चिमी फ्लैंक से वाहनों और पैदल लोगों का आना-जाना है। रास्ता के संकरा होने के कारण दिन में किस्तों में अनेक बार जाम लगता है। यहां पर यातायात पुलिस या स्थानीय थाना स्तर पर भी पुलिस जवान की तैनाती नहीं होती है कि वाहनों को सुरक्षित आवागमन कराया जा सके। दूसरी ओर कंगन घाट पुराना गुरुद्वारा इमारत से घाट के मोड़ तक रास्ता पूरा उबड़-खाबड़ है। इससे पैदल चलने वाले और दोपहिया और तिपहिया वाहन दुर्घटना का शिकार भी होता रहता है। इसे लेकर छठ व दिवाली पूजा को लेकर सिटी एसडीओ के यहां हुई बैठक में समाजसेवी प्रदीप काश ने मामले को उठाया था। इस पर एसडीओ ने उस रास्ते की मरम्मत कराने की बात कही थी। हालांकि अब तक उस दिशा में कोई पहल नहीं हो पाई है। दरअसल हिरण साह घाट की ओर अचानक बेमौसम बारिश होने के बाद जलजमाव की स्थिति हो गई थी। लोगों के घरों में भी पानी प्रवेश कर गया था। उस पानी के निकास के लिए गुरुद्वारा कंगन घाट के नए इमारत और पंजाब भवन के बीच से एक नाला का निर्माण कराया गया था। इस कारण से कुछ दूरी में रास्ता खराब हो गया है, मगर कंगन घाट जाने वाले रास्ते के उत्तर की ओर भी बिछाई गई ईंट भी उखड़ चुकी है। उसे किसी तरीके से लगाया गया है, मगर वाहन का पहिया पड़ने से भी वह ईंट छिटक कर किसी के पैर में लगकर गंभीर रूप से घायल कर सकता है। आम लोगों को इंतजार है कि प्रशासन कब तक कंगन घाट के पश्चिमी छोर के बंद रास्ते को जमीन का अधिग्रहण कर वाहनों के आवागमन के लिए चालू करा पाता है। इस फ्लैंक के चालू होने से तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब और अन्य लोगों के वाहनों का अबाध रूप से आना-जाना हुआ करता था। इसमें फोर व्हीलर से लेकर छोटी बस, ट्रैवलर भी शामिल था। मगर अभी ऑटो या कार के पूर्वी फ्लैंक के संकरे रास्ते में प्रवेश करने के बाद जाम की स्थिति बन जाती है।

चौक से थाना मोड़ तक 11 केवी केबल लगेगी कल, बिजली बाधित

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। मंगल तलब विद्युत सब-स्टेशन से 11 केवी झाऊगंज फीडर निकला है। इसकी बिजली नौ नवंबर (गुरुवार) को सुबह छह बजे से मध्याह्न 12 तक बाधित रहेगी। इसका कारण 11 केवी एबी केबल शहीद भगत सिंह चौक से लेकर चौक थाना मोड़ के बीच बदला जाना है। इस कारण से चौक से चमडोरिया मोड़, रामबाग, झाऊगंज घाट, बाड़े की गली, लंगूर गली, हिरण साह गली आदि एरिया प्रभावित रहेगा। विदित हो कि मंगल तालाब सब-स्टेशन से झाऊगंज फीडर और खाजेकलां फीडर भी निकला है। आए दिन बंदरों के आतंक एवं अन्य कारण से झाऊगंज फीडर के 11 केवी एबी केबल में खराबी आती रहती है। झाऊगंज गली में तो एक पोल में आग लग गई थी, जिसे स्थानीय लोगों ने सूचना देकर बिजली बाधित कराया और सबों ने मिलकर आग पर काबू पाने का काम किया था। इसी तरह से कचौड़ी गली के सामने भी घटना हुई थी। इधर खाजेकलां फीडर का एबी केबल रामदेव महतो सामुदायिक भवन से लेकर शहीद भगत सिंह चौक और यहां से मच्छरहट्टा के गोपीनाथ जी गली मोड़ के बीच आए दिन खराबी के कारण प्रभावित रहता है। स्थिति तो यह बन गई थी कि केबल का तार मच्छरहट्टा गली में गिरने के बाद एक दुकान में आग भी लग गई थी, जिसमें एक युवा के सामान हटाने और आग पर काबू पाने के दौरान जख्मी भी हो गया था। वहीं गोपीनाथ जी गली यानी बजाज प्लाजा के पास भी आए दिन केबल में खराबी होती रहती है। इधर सिंघी दालान और टेढ़ी घाट में भी तार टूट कर गिरने, फ्यूज उड़ने, जंफर कटने की समस्याएं आए दिन होती रहती हैं। इस समस्या को भी दूर किए जाने की जरूरत है।

आरपीएम कॉलेज में हुआ इंटर कॉलेज टेबल टेनिस प्रतियोगिता

महिला में जेडी विमेंस कॉलेज व आरपीएम कॉलेज और पुरुष में कॉलेज ऑफ कॉमर्स विजेता, एएन कॉलेज उपविजेता

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

आरपीएम कॉलेज में अंतर महाविद्यालय टेबल टेनिस टूनार्मेंट का आयोजन किया गया। इसमें पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के छह महाविद्यालय एएन कॉलेज, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, जेडी विमेंस कॉलेज, एसजजीएस कॉलेज, जीजे कॉलेज, बिहटा एवं आरपीएम कॉलेज की छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। खेल का उद्घाटन मुख्य अतिथि बिहार टेबल टेनिस एसोसिएशन के वरीय उपाध्यक्ष अभय शंकर सिंह ने किया। उन्होंने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह बहुत दुख की बात है कि हमारा बिहार स्पोर्टस में काफी पीछे है। हम सभी का दायित्व है कि बच्चों को प्रोत्साहित करें एवं उन्हें खेल के क्षेत्र में आगे लाएं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रोडॉ पूनम ने करते हुए कहा कि खेल से व्यक्ति

में अनुशासन एवं सहयोग की भावना विकसित होती है। उन्होंने छात्राओं को दिल से खेलने की अपील की। कार्यक्रम का आयोजन क्रीड़ा प्रभारी डॉ इना बहन एवं उनकी टीम ने किया। मंच संचालन डॉ अंजू जैन ने किया। प्रतियोगिता के महिला ग्रुप में जेडी विमेंस कॉलेज विजेता और आरपीएम कॉलेज उपविजेता रही। पुरुष वर्ग में कॉलेज ऑफ कॉमर्स विजेता और एएन कॉलेज उपविजेता रहा। प्रतियोगिता का समापन पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के क्रीड़ा प्रभारी डॉ मुकेश कुमार ने प्रतिभागियों के बीच शील्ड, मेडल एवं कप वितरित किया। सिंगल्स महिला में एएन कॉलेज की शैली कुमारी प्रथम, जेडी विमेंस कॉलेज की सरस्वती कुमारी द्वितीय, जेडी विमेंस कॉलेज की शिवानी श्रीवास्तव तृतीय, जेडी विमेंस कॉलेज की कौशिकी कुमारी चतुर्थ और जेडी विमेंस कॉलेज की अदिति कुमारी ने पांचवां स्थान प्राप्त किया। पुरुष सिंगल्स में एसजीजीएस कॉलेज पटना सिटी के मोहित कुमार प्रथम, एएन कॉलेज के देवांश राज द्वितीय, कॉलेज ऑफ कॉमर्स के सोभान सुप्रियो रॉय तृतीय, एएन कॉलेज का दावहित्र आर्यन और इसी कॉलेज के उपहार आनंद ने पांचवां स्थान हासिल किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ अमोल कुमार ने किया।

रन का आयुर्वेद में दौड़े चिकित्सा कर्मी व प्रशंसक

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। आठवें आयुर्वेद दिवस के मौके पर क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान (जो आयुष मंत्रालय भारत सरकार की अनुषंगी इकाई है) अगमकुआं द्वारा रन फॉर आयुर्वेद का आयोजन किया गया। मंगलवार की सुबह आयुर्वेद परिसर में आयोजित रन फॉर आयुर्वेद का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि आरएमआरआई के पूर्व उपनिदेशक डॉ वीएनआर दास और राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी (किक वॉलीबॉल के) रंजन राज के द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। इस दौड़ के आयोजन का उद्देश्य आयुर्वेद फॉर वन हेल्थ हर दिन हर किसी के लिए आयुर्वेद थीम को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने, जागरूक करने, भारत के हजारों साल पुरानी आयुर्वेदिक चिकित्सा संस्कृति को वैश्विक मंच पर ले जाने और आयुर्वेद को दुनिया में आम लोगों की जीवन शैली का हिस्सा बनाना है। संस्थान के प्रभारी डॉक्टर कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि आयुर्वेद फॉर वन हेल्थ अभियान को स्वास्थ्य से जोड़कर एक मजबूत और स्वस्थ भारत का भविष्य बनाया जा सकता है। यह दौड़ संस्थान परिसर से शुरू होकर सत्यवान पार्क तक गया और वहां से वापस संस्थान परिसर में आकर समाप्त हुआ। इस दौरान अतिथियों, संस्थान के प्रभारी एवं अन्य वक्ताओं ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति पर अपने विचार रखे।

सुदर्शन पथ के गुलजरबाग में भीषण जाम से त्राहिमाम

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। जाम का झाम वैसे तो अशोक राजपथ के पश्चिम दरवाजा से लेकर झाऊगंज और हाजीगंज से मालसलामी के बीच देखा जाता है। मगर मंगलवार को दोपहर में सुदर्शन पथ पर मोगलपुरा पुलिस चौकी से लेकर अगमकुआं आरोबी के पूर्वी फ्लैंक के बीच इस कदर वाहनों का जाम लगा था कि इस दूरी में फंसे दो पहिया, तिपहिया या चार पहिया वाहन का निकलना भी मुश्किल हो रहा था। इस कारण से गुलजारबाग हाट रोड, नीम की भट्ठी, नवाब बहादुर रोड और इससे जुड़ी गलियों में भी वाहनों का जाम देखा गया। दरअसल

गुलजारबाग स्टेशन के पूरब में मेहंदीगंज रेल गुमटी है।

इस गुमटी के बंद होने के बाद सुदर्शन पथ से मेहंदीगंज रेल गुमटी को पार कर दक्षिण की ओर जाने वाला वाहन ठहर जाता है। कारण कि जब अप या डाउन में ट्रेन गुजरती है, तो उस दौरान अबाध रूप से ट्रेनों के गुजरने के लिए गुमटी को बंद कर दिया जाता है। इस कारण से यहां पर लंबा जाम लग जाता है। यहां पर आसपास में सड़क के दोनों ओर अतिक्रमण भी कायम है। वहीं दूसरी ओर गुलजारबाग ऑटो स्टैंड से लेकर अगमकुआं आरोबी के पूर्वी फ्लैंक के बीच सड़क पर रहे अतिक्रमण ने भी जाम के झाम को बढ़ाने का काम किया है।

पटना नगर निगम द्वारा अनदेखी की जा रही है सड़क किनारे लगे इन ऊंचे - ऊँचे होर्डिंग्स को

प्रात :किरण संवाददाता

पटनाः पटना नगर निगम द्वारा बेली रोड, के मुख्य सड़कों पर लगाए गए ऊँचे होर्डिंग बैनर आदि की अनदेखी करना अब आम बात हो गई है। इस संबंध में विगत दिनों 01 नवंबर को आए हुए भूकंप में बेली रोड, शेखपुरा स्थित पिलर नंबर 83, 84 के पास दो होर्डिंग मुख्य सड़क पर गिर गई। जिससे रात्रि होने के कारण जान माल की क्षति ज्यादा ना हो सकी। मगर वहीं पर बगल में पिलर नंबर 84 के पास ओवर ब्रिज, बेली रोड से करीब 20 फीट ऊपर एक और होर्डिंग लगा हुआ है। जो अचानक तेज हिलने लगा और भूकंप आने के कारण अचानक खुलने जैसा तेज आवाज करने लगा। अगल-बगल के घर वाले इससे दहशत में आ गए। सभी यह होर्डिंग किनके घर की छत पर गिरेगा इसके अंदेशा लगाकर

अपने अपने घर से औरते और बच्चे समेत अपने अपने घर से बाहर आ गए। सभी स्थानिय घर वाले मुख्य सड़क पर आ गए। अपना नाम न बताने के एवज में स्थानीय ग्रामीणों ने मौके पर बताया कि इन होर्डिंग को देखकर हम यहाँ रहने वाले काफी दहशत में रहते हैं। आंधी, तूफान, भूकंप आने की स्थिति में यह होर्डिंग कभी भी हमारे मकान पर गिर सकता है। जिससे हमारे मकान में रहने वाले हम लोगों को जान माल को काफी क्षति पहुंचा सकता है। पटना नगर निगम द्वारा मुख्य बेली रोड पर लगाए गए इन होर्डिंग्स का कोई संज्ञान नहीं लिया जा रहा है। नगर निगम से कोई कर्मचारी कभी- कभी अगर इन होर्डिंग के बारे में पूछने भी आता है तो जिनके घर में यह लगा हुआ है वह उनको मोटी रकम देकर उन्हे चुप करवा देते है। मोटी रकम पाकर निगम कर्मचारी भी इनका संज्ञान नही लेते। जिनके छतों पर ये होर्डिंग लगाया जाता है वे इन होर्डिंग्स कंपनी के मालिक से मोटी रकम मासिक किराया के रूप में वसूल पाते हैं। इस रकम में से कुछ रकम इन निगम वाले लोगों को देखकर वह इसे अनदेखा करवा लेते हैं और स्थानिये लोगो पर इनका खतरा रात दिन मँडरता रहता हैं।

नहीं रहे सीपीआईएम कुशवाहा नंदन, शोक का तांता

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। सीपीआईएम पटना जिला कमेटी के सदस्य एवं किसान सभा के उपाध्यक्ष कुशवाहा नंदन (75) का निधन उनके आवास तुलसी मंडी में हो गया बीती रात हो गया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने उनके घर सीपीआईएम सहित अन्य राजनीतिक दलों के नेता पहुंचे।

सीपीआईएम के राज्य सचिव मंडल के सदस्य अरुण मिश्रा, पटना जिला सचिव मनोज कुमार चंद्रवंशी, जिला कमेटी के सदस्य रास बिहारी सिंह, किसान नेता शिव कुमार विद्यार्थी, सोने लाल प्रसाद, कुलभूषण गोपाल, सरिता पांडेय, राजकुमार राय, राजकिशोर राय, नाथुन जमादार, विश्वनाथ प्रसाद के अलावा राजद के पूर्व वार्ड पार्षद बलराम चौधरी मौजूद थे। सीपीआई नेता देवरतन प्रसाद ने उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है। जिला सचिव मनोज कुमार चंद्रवंशी ने कहा कि श्री नंदन जल्ला के किसानों की समस्या, ज्वलंत मुद्दों और कमजोर वर्ग के लोगों के अधिकार के लिए संघर्ष करते रहे। पार्टी कार्यालय में उनके प्रति शोक व्यक्त करते हुए झंडा झुकाया गया। उनके पार्थिव शरीर पर सीपीआईएम का लाल झंडा रखा गया और लाल सलाम के नारों के साथ उन्हें विदाई दी गई। उनको दो पुत्र राजेश कुमार और राकेश मेहता और दो पुत्री थे। राजद नेता मोहम्मद जावेद, रजनीश राय, पूर्व पार्षद प्रदीप मेहता, उमेश पंडित, विनोद यादव, माले नेता राम नारायण सिंह, नसीम अंसारी, ललन यादव, शंभू प्रसाद, कांग्रेसी नेता राजकुमार राजन, परवेज अहमद, सुजीत कसेरा, डॉ विनोद अवस्थी, शम्मी कपूर, जदयू के अंजनी पटेल, कन्हाई पटेल, संतोष शर्मा आदि ने शोक जताया है। इन सबों ने कहा कि कुशवाहा नंदन जी समाजवादी विचारधारा के नेता थे। कभी भी अपने विचार और सिद्धांतों से उन्होंने समझौता नहीं किया। उनके संघर्ष गाथा को भुलाया नहीं जा सकता है।

इंडसइंड बैंक रुपे क्रेडिट कार्ड के साथ यूपीआई से जुड़ा

पटना। इंडसइंड बैंक, इंडसइंड बैंक प्लैटिनम रुपे क्रेडिट कार्ड के लॉन्च के साथ नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) के सहयोग से रुपे क्रेडिट कार्ड के जरिये यूपीआई से जुड़ गया है इंडसइंड बैंक रुपे क्रेडिट कार्ड के ग्राहक, अब पीओएस उपकरणों और ई-कॉमर्स वेबसाइटों का उपयोग कर रुपे नेटवर्क के माध्यम से मर्चेंट को निर्बाध भुगतान करने के अलावा, अपने क्रेडिट कार्ड को अलग-अलग यूपीआई ऐप के साथ जोड़कर आसानी से यूपीआई भुगतान कर सकते हैं। इंडसइंड बैंक के रुपे क्रेडिट कार्ड के यूपीआई से जुड़ने के साथ, अब ग्राहक ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्लेटफार्म पर निर्बाध रूप से लेन-देन कर सकते हैं और अपने यूपीआई लेनदेन पर त्वरित पुरस्कार हासिल कर सकते हैं।

इंडसइंड बैंक के उपभोक्ता बैंकिंग और विपणन प्रमुख, श्री सौमित्र सेन ने इस घोषणा के बारे में कहा, हमें एनपीसीआई के सहयोग से इंडसइंड बैंक प्लेटिनम रुपे क्रेडिट कार्ड पेश करते हुए खुशी हो रही है। भारत में यूपीआई के व्यापक प्रसार को देखते हुए, क्रेडिट कार्ड को यूपीआई से जोड़ने से सुविधा और फीचर/लाभ बढ़ेंगे, जिससे ग्राहकों के लिए सुविधा बढ़ेगी और उन्हें भुगतान के लिए नए विकल्प मिलेंगे। इस कार्ड के साथ, हम यूपीआई के जरिये विभिन्न किस्म के लाभ तथा पुरस्कार की दुनिया के दरवाजे खोल रहे हैं और साथ ही यह सुनिश्चित कर रहे हैं कि ग्राहकों की वित्तीय आकांक्षाएं हमेशा पहुंच के भीतर हों, लेन-देन सहजता से बस बटन दबाते ही हो जाए।

एनपीसीआई के चीफ रिलेशनशिप मैनेजमेंट एवं मार्केटिंग, श्री राजीव पिल्लई ने कहा, हम इंडसइंड बैंक के साथ अपनी साझेदारी को और बढ़ाने तथा उनके रुपे नेटवर्क के साथ अपनी यात्रा शुरू करने के प्रति उत्साहित हैं। इंडसइंड बैंक का प्लैटिनम रुपे क्रेडिट कार्ड, अपने क्रेडिट कार्ड के शानदार अनुभव के साथ यूपीआई की सुविधा को सहजता से जोड़ता है। रुपे ने खुद को एक आधुनिक, समसामयिक और जीवंत ब्रांड के रूप में स्थापित किया है, जो अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी से परिचालित है और आवश्यकता के अनुरूप लाभ प्रदान करता है और साथ ही इससे व्यापक स्वीकार्यता और सुरक्षा दोनों सुनिश्चित होती है इसके अलावा, उपयोगकताओं के पास रिवॉर्ड पॉइंट को स्टेटमेंट क्रेडिट, एयर-माइल्स में बदलने या इंडसमोमेंट्स के माध्यम से कई तरह के वाउचर विकल्प चुनने की सुविधा होगी।

बिहार की महिला उद्यमियों ने सोलर एवं डीआरई सॉल्यूशंस के साथ कामयाबी का परचम लहराया

पटना। बिहार के नालन्दा की रहने वाली 34 वर्षीय रेनू कुमारी अपने गाँव में एक सफल भोजनालय चलाती हैं। यह उनके पति और पाँच बच्चों सहित उनके परिवार के लिए आमदनी का इकलौता जरिया है। लेकिन उन्हें हर महीने 2000 रुपये से अधिक का भारी-भरकम बिजली बिल चुकाना पड़ता था, जो उनके लिए बड़ी चिंताजनक बात थी। रेनू के मुनाफे का एक बड़ा हिस्सा बिजली का बिल चुकाने पर खर्च हो जाता था, और इसी वजह से वे इसके वैकल्पिक समाधान की तलाश में जुट गईं। फिर उन्हें बोलेगा बिहार के बारे में जानकारी मिली, जो गया एवं नालन्दा में जमीनी स्तर पर घरेलू सौर और डीआरई सॉल्यूशंस में तेजी लाने के लिए समर्पित एक परियोजना है। इसने उन्हें अपने भोजनालय के साथ-साथ अपने घर पर सोलर फ्रिज,

लाइट और पंखे जैसे उपकरणों का उपयोग करके बदलाव लाने की प्रेरणा मिली, जिसने उन्हें बिजली के भारी बिलों के बोझ से बचाया और विकेंद्रीकृत नवीकरणीय ऊर्जा समाधानों को बड़े पैमाने पर अपनाने में योगदान दिया।

रेनू कुमारी कहती हैं, हमारी तरह छोटे स्तर पर व्यवसाय चलाने वाले लोगों के लिए बिजली की बढ़ती लागत सबसे बुरा सपना है, क्योंकि भोजनालयों में पर्याप्त मात्रा में बिजली की खपत करने वाले कई जरूरी उपकरण होते हैं। इसी वजह से हमने डीआरई समाधानों पर विचार किया।ष बोलेगा बिहार के जरिये, लक्षित महिला उद्यमियों ने ड्रायर, जूस मेकर, सिलाई मशीन, फ्रिज और कुकर जैसी सौर ऊर्जा से चलने वाली मशीनों का प्रदर्शन देखा। इसके परिणामस्वरूप करियाना राजगीर से आये प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण की व्यावहारिकता को उजागर किया, जिसके बाद स्वयं सहायता समूहों की कई महिलाएँ मोरिंगा की पत्तियों और अन्य उत्पादों को सुखाने के लिए सोलर ड्रायर में निवेश के लिए प्रेरित हुईं, क्योंकि उन्हें इस क्षेत्र में व्यवसाय की संभावना नजर आई। राज्य के नीति निमार्ता ने डीआरई समाधानों में काफी दिलचस्पी दिखाई है, और बोलेगा बिहार को इसका लाभ मिला है। सखी की सचिव, सुमन सिंह कहती हैं, हमने खास तौर पर गाँवों की महिला उद्यमियों को लक्षित किया है, क्योंकि हमने इस बात को समझा कि ग्रामीण इलाकों में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाने की जरूरत के साथ-साथ इससे मिलने वाले फायदों के बारे में जागरूकता की कमी है। इस बदलाव से पर्यावरण को काफी फायदा मिलता है, साथ ही यह आर्थिक रूप से भी समुदाय के लिए फायदेमंद साबित होता है। हम पूरे उत्साह के साथ ग्रामीण इलाकों में महिलाओं के बीच काम कर रहे हैं, विभिन्न भागीदारों के बीच बातचीत को बढ़ावा दे रहे हैं, प्रक्रिया और उपलब्ध उत्पादों के बारे में उनकी समझ बढ़ा रहे हैं, इन समाधानों तक पहुंचने के तरीके के बारे में उन्हें राह दिखा रहे हैं, साथ ही उन्हें बातचीत करने एवं समर्थन करने में भी कुशल बना रहे हैं।

युवा व महिला का नाम वोटरलिस्ट में जोड़ने का अभियान

पटना सिटी (प्राकि)। पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र में युवा वोटरों के नाम मतदाता सूची में जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसमें मंगलवार को राजकीय महिला महाविद्यालय, गायघाट गुलजारबाग में जागरुकता शिविर लगाया गया। कॉलेज की प्राचार्या डॉ जयश्री की अध्यक्षता में आयोजित जागरुकता अभियान में मतदाताओं के आवेदन भी लिए गए। आयोजन में निर्वाचन शाखा के पर्यवेक्षक अल्पना कुमारी और रवि कुमार उपस्थित थीं। गुजरी बाजार स्थित ओरिएंटल कॉलेज में भी अभियान चलाया गया। कॉलेज प्राचार्य की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में पर्यवेक्षक सरिता कुमारी व पवन कुमार उपस्थित थे। एसडीओ गुंजन सिंह की पहल पर आयोजित शिविर 12 नवंबर तक चलेगा। अवर निवार्ची पदाधिकारी शिखा सिन्हा ने बताया कि जागरुकता अभियान में युवाओं और महिलाओं का नाम अधिक से अधिक जुड़े, इसका पूरा ख्याल रखा जा रहा है।

जाति आधारित गणना : आर्थिक व सामाजिक रिपोर्ट पर गरमाई सियासत, बयानबाजी शुरू

गरीबी उन्मूलन में मददगार साबित होगा आर्थिक सर्वेक्षण रिपोर्ट : उमेश

बिहार विधानमंडल में मंगलवार को राज्य सरकार द्वारा सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण का रिपोर्ट जारी किए जाने पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने खुशी जताई और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि आर्थिक और सामाजिक आँकड़े सामने आने से राज्य की सरकार को गरीबी उन्मूलन की दिशा में काफी मदद मिलेगी। प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि सदन में ही मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने घोषणा किया है कि राज्य की सरकार 95 लाख गरीब परिवार को 2 लाख रुपया सहायता राशि प्रदान करेगी, भूमिहीन गरीब परिवार को 60 हजार से बढ़ा कर 1 लाख दिया जायेगा। साथ ही झोपड़ी में रहनेवाले गरीब परिवार को पक्का मकान बनाने के लिए 1 लाख 30 हजार देगी। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि जातीय गणना के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण राज्य की जनता के लिए हितकारी और परिवर्तनकारी साबित होगा। उन्होंने कहा कि आम जनता को मूलभूत सुविधाओं से सशक्त करने के लिए प्रमाणिक आंकड़ों का होना सबसे आवश्यक होता है ताकि प्रभावी नीतियों का निर्माण और उसका सफल क्रियान्वन सुनिश्चित हो सके। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि गरीबी हटाने की बात कहने मात्र से गरीबी को नहीं हटया जा सकता है। उसके लिए मजबूत इच्छाशक्ति और दूरदर्शी सोच की भी आवश्यकता होती है, जिसका मिशाल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पेश किया है। उन्होंने कहा कि जातीय गणना और आर्थिक-सामाजिक सर्वेक्षण का व्यापक फायदा आने वाली पीढ़ियों को मिलेगा। राज्य सरकार सभी वर्गों के विकास को सुनिश्चित करने को लेकर समर्पित और संकल्पबद्ध है। प्रदेश अध्यक्ष ने विरोधियों को निशाने पर लेते हुए कहा कि जिन्हें जातीय गणना से पेट में दर्द हो रहा है वो लोग इसके आड़ में समाज को बांटना चाहते हैं। जातीय वैमनस्यता फैलाकर आपसी भाईचारे को कमजोर करने की कोशिश में जुटे हुए हैं। श्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में किसी भी वर्ग या समुदाय को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। गरीब चाहे किसी भी जाति या वर्ग का हो, सरकार सभी के लिए समान समर्पण भाव से कार्य करती है।

गरीबों के हित में हमेशा साथ खड़ी है भाजपा : विजय सिन्हा

पटना। नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि जाति आधारित सर्वे की नींव एनडीए सरकार में पड़ी थी। सर्वे के प्रस्ताव में भाजपा ने समर्थन किया। कैबिनेट में भी समर्थन किया। इसी सदन में भाजपा ने पूरी सहमती जताई थी। गरीबों के हित में हमेशा भाजपा साथ खड़ी है। हर तरह योजनाओं में भाजपा समर्थन करती है। यहां पर बड़े विद्वान बैठे हैं। बड़े अनुभवी लोग हैं। लेकिन, इन अनुभवी लोगों से मैं कहना चाहूंगा कि जिन लोगों ने भरमाने का, घुमाने का काम करते हैं वह ऐसा न करें। भाजपा ने कभी जातीय सर्वे का विरोध नहीं किया था लेकिन इस जातीय सर्वे की रिपोर्ट जब पेश की गई तो उसमें कई शिकायतें आई हैं। चाहे चंद्रवंशी हो या धानुक समाज हो सभी लोग शिकायत लेकर धरना प्रदर्शन पर बैठ गए। किस जाति कितना बेरोजगार इसकी जानकारी बिहार सरकार ने नहीं दी। केवल किस जाति में कितने लोग रोजगार वाले हैं, इसकी ही जानकारी दी गई। बेरोजगार के मुद्दे पर सरकार मौन क्यों हैं। नीतीश सरकार इसकी जानकारी क्यों नहीं दे रही है। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने ओबीसी आयोग को संवैधानिक दर्जा नहीं दिया। भाजपा ने अतिपिछड़ों और महिलाओं के हित में काम किया। 1990 से 2005 में राजद और कांग्रेस की सरकार ने अतिपिछड़ों को आरक्षण क्यों नहीं दिया। नवोदय, सैनिक स्कूल में भाजपा ने अति पिछड़ों को आरक्षण दिया। आज हमारे ओबीसी प्रधानमंत्री गरीबों के हित में काम कर रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि अति पिछड़ों के आंकड़ों के लेकर जो प्रश्न उठ रहा है बिहार सरकार को उस पर ध्यान देना चाहिए। क्यों गरीबों को भरमाने की कोशिश की जा रही है। मुख्यमंत्री जी आपने किसी अति पिछड़े समाज से आने वालों को मुख्यमंत्री क्यों नहीं घोषित किया। आखिर क्या बेचैनी है आपको? हमने तो अतिपिछड़े समाज से आनी वाली रेणु देवी को उपमुख्यमंत्री बनाया। हरि सहनी को नेता प्रतिपक्ष बनाया। घमंडिया गठबंधन अतिपिछड़ों के हित की बात नहीं करती है। उनके हित में क्या-क्या काम आज तक उन्होंने किया, इसे गिनाना चाहिए।

70 प्रतिशत किया जाना चाहिए आरक्षण : मनोज झा

राजद सांसद सह राष्ट्रीय प्रवक्ता ने आरक्षण का दायरा बढ़ाने की रखी मांग

पटना। बिहार विधानसभा में पेश किये गये आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण रिपोर्ट को लेकर राजद सांसद ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बधाई दी। कहा कि यह सर्वे यदि देशभर में हुआ होता तो और बेहतर होता। बिहार के आंकड़ों ने विकास की पूरी कहानी बता दी। मनोज झा ने कहा कि जातीय गणना बिहार में ना हो इसे रोकने के लिए बीजेपी ने हर वो प्रयास किया लेकिन इसे रोक पाने में सफलता नहीं मिली। नीतीश-तेजस्वी ने बिहार में जातीय गणना कराने का फैसला लिया और इसे पूरा करके दिखाया। मनोज झा ने कहा कि पीएम मोदी कहते हैं कि गरीब की कोई जाति नहीं होती। अब ये आंकड़े पीएम मोदी को भेजा जाएगा बताया जाएगा कि बिहार में जाति की हकीकत क्या है? बिहार में दलितों की स्थिति दयनीय है जिस रिपोर्ट को पीएम मोदी को देखना चाहिए वो नहीं देख रहे हैं। राजद के तरफ से मनोज झा ने आरक्षण का दायरा बढ़ाने की मांग रखी। कहा कि आरक्षण बढ़ाकर 70 प्रतिशत किया जाए। उन्होंने कहा कि अब आरक्षण का दायरा बढ़ाया जाना चाहिए। प्राइवेट सेक्टर में भी आरक्षण लागू होना चाहिए। वही कहा कि जातीय गणना की मांग करना जातिवाद नहीं इसे रोकने की कोशिश करना घोर जातिवादी है। 10 प्रतिशत को स्वीकार करना होगा की 90 को सबसे पहले अधिकार मिले। सभी दल इस आंकड़े की तरह समाज को समझे। आंकड़े की तरह विकास की योजनाएं बनाने में मदद करे। पांच साल तक मुफ्त अनाज की घोषणा पीएम मोदी ने की है इस पर मनोज झा ने कहा कि पिछड़े जातियों को 5 किलो अनाज की जरूरत नहीं है। इस समाज को अनाज पैदा करने की ताकत है। भारत सरकार इन आबादी को अपमानित कर रही है, ये समाज अपमान का बदला लेना जानती है।

शिक्षा व रोजगार में दलित, पिछड़ों की कमतर भागीदारी चिंताजनक : माले

पटना। बिहार सरकार द्वारा आज विधानसभा में पेश सामाजिक-आर्थिक सर्वे पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए माले राज्य सचिव कुणाल ने कहा है कि रिपोर्ट से राज्य में गरीबी की भयावह तस्वीर उभरकर सामने आई है। सरकार ने 6000 रु. मासिक से कम आमदनी वाले परिवार को गरीबी रेखा से नीचे माना है और इस पैमाने पर 34.13 प्रतिशत परिवार गरीबी रेखा के नीचे हैं। सबसे अधिक 42.93 प्रतिशत अनुसूचित जाति के लोग हैं। अनुसूचित जन जाति में यह प्रतिशतता 42.70, अत्यंत पिछड़ा वर्ग में 33.58 ओर पिछड़ा वर्ग में यह 33.16 है। रिपोर्ट यह बतलाती है कि शिक्षा व रोजगार में दलित-अत्यंत पिछड़ी व पिछड़ी जातियों की भागीदारी अभी भी बहुत कम है। सरकार की रिपोर्ट के मुताबिक एससी समुदाय के 23.45, एसटी के 16.08, ईबीसी के 15.49 और ओबीसी समुदाय के 10.04 प्रतिशत लोग झोपड़ी डालकर रह रहे हैं। यह बात जान लेना जरूरी है कि ये लोग जिस जमीन पर बसे हैं, उस जमीन का मालिकाना हक उनके पास नहीं है। उन्हें हमेशा बुलडोजर की मार व विस्थापन का दंश झेलना पड़ता है। इसीलिए हम लगातार कहते आए हैं कि सरकार एक मुकम्मल सर्वे कराकर नया वास-आवास कानून बनाए और जो जहां बसे हैं, उस जमीन का उन्हें मालिकाना हक दे। रिपोर्ट ने हमारी मांग को पुष्ट किया है। खपरैल, एक कमरे अथवा दो कमरे के मकान में रहने वाले परिवारों में भी अधिकांश लोगों को अपने आवासीय जमीन पर मालिकाना हक नहीं है और उन्हें भी बुलडोजर की मार सहनी पड़ती है।

सर्वे में जमीन की मिल्कियत का भी सर्वे कराया गया था, लेकिन उसके आंकड़े रिपोर्ट में शामिल नहीं है। यह चिंताजनक है। भूमिहीनता के आंकड़े को सामने लाए बिना यह रिपोर्ट आधी-अधूरी है। यह जानना बेहद जरूरी है कि किस समुदाय के पास जमीन की कितनी मिल्कियत है ताकि भूमि सुधार की बरसों से लटकी प्रक्रिया को आगे बढ़ाई जा सके। हम मांग करते हैं कि सरकार जमीन की मिल्कियत की रिपोर्ट भी सार्वजनिक करे और तदनुरूप भूमि सुधार की प्रक्रिया को आगे बढ़ाए। कृषि प्रधान बिहार के समाज में आज भी जो समुदाय वास्तव में खेती करता है, उन्हें खेती की जमीन पर मालिकाना हक नहीं है। यह माना जाता है कि यहां की 70-80 प्रतिशत बटाईदारों के जरिए चलती है। इन आंकड़ों को सरकार सार्वजनिक करे और बटाईदारों को उनका कानूनी हक दिया जाना चाहिए।

आवाज दबाने के लिए बल का प्रयोग अनुचित : मंगल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने आंगनबाड़ी सेविकाओं पर किए गए लाठीचार्ज व वाटर कैनन के प्रयोग पर अपनी नाराजगी जाहिर की। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार जुल्मी हो गयी है। लाठी के बल पर जनता की आवाज दबाना चाहती है और उनमें खौफ पैदा कर कुशासन की सरकार चला रही है। पुलिस के बल पर लोकतंत्र के अधिकारों को दबाया जा रहा है। हम सभी जानते हैं कि महिला घर की लक्ष्मी होती है। दीपावली पर मां लक्ष्मी की पूजा होती है। वहीं बिहार की सरकार दीपावली से पूर्व लक्ष्मी स्वरुप महिलाओं को सड़क पर पीटवाती है व प्रताड़ित करती है। श्री पांडेय ने कहा कि लोकतंत्र में हर किसी को अपने अधिकार के लिए प्रदर्शन करने की आजादी है। कभी बिहार के सीएम व डिप्टी सीएम ने भी अपने अधिकारों केलिए ऐसा किया होगा। मगर आज सरकार निरंकुश व तानाशाह हो गयी है। इसलिए आगनबाड़ी सेविकाओं की आवाज दबंगई से दबाने के लिए बल प्रयोग कर रही है। जिस प्रकार महिलाओं पर वाटर कैनन का प्रयोग किया गया ये किसी भी सभ्य समाज के लिए निंदनीय है। सरकार अपनी मयादाओं को भूल चुकी है। अब बिहार में केवल गुंडाराज व भ्रष्टाचार का बोलबाला हो गया हैं। श्री पांडेय ने कहा कि एक ओर सरकार जनता से वादा करने का झूठा ढोल पीट रही है। वहीं राज्य की आम जनता उनके दावों की हवा निकाल रही हैं। आंगनबाड़ी सेविका मौजूदा उप मुख्यमंत्री पर वादा खिलाफी का आरोप लगा रही हैं। उनका कहना है कि उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव चुनाव के समय बार-बार ये कहते रहे हैं कि उनकी सरकार आने पर बिहार की सभी आंगनबाड़ी सेविका एवं सहायिकाओं का मानदेय दोगुना किया जाएगा। लेकिन सरकार बन जाने के बाद आज तक इस पर अमल नहीं किया गया है।

फिलिस्तीन के समर्थन में वाम दलों ने किया प्रदर्शन

अमरीका द्वारा इजरायल का सैन्य समर्थन मंजूर नहीं, शांति की पहल करे : माले

पटना। भाकपा-माले, सीपीएम, सीपीआई, ऑल इंडिया फारवर्ड ब्लॉक और आरएसपी द्वारा संयुक्त रूप से फिलिस्तीन में इजरायल के हमले पर पर तत्काल रोक लगाने की मांग पर 7 से 10 नवंबर तक चलने वाले देशव्यापी विरोध अभियान के तहत बुधवार को पटना के बुद्ध स्मृति पार्क पर नागरिक प्रतिरोध सभा आयोजित हुई और फिलिस्तीनी जनता के साथ एकजुटता प्रदर्शित की गई। प्रतिरोध सभा को भाकपा-माले के वरिष्ठ नेता केडी यादव, शशि यादव, सीपीएम के सर्वोदय शर्मा व अरूण मिश्रा, सीपीआई की निवेदिता झा, एसके शर्मा, प्रकाश कुमार, रणविजय कुमार, कमलेश शर्मा, जितेन्द्र कुमार, समता राय आदि ने संबोधित किया। नागरिक समाज की ओर से पीयूसीएल के सरफराज, प्रो. विद्यार्थी विकस, विनेद कुमार, मो. आरजू, अशर्फी सदा आदि भी शामिल हुए। मौके पर मुर्तजा अली, शंभूनाथ मेहता, नसीम अंसारी, कुमार दिव्यम, नीरज यादव, प्रीति आदि उपस्थित थे. संचालन भाकपा-माले के पटना महानगर सचिव अभ्युदय, सीपीआई के जितेन्द्र कुमार, शंकर साह, अमरीका महतो आदि ने किया। वाम दलों के नेताओं ने कहा कि अमेरिकी साम्राज्यवाद की नीतियों का हम पुरजोर विरोध करते हैं, जो गाजा में जारी बर्बर जनसंहार पर तत्काल रोक लगाने की बजाए इजरायली रक्षा बलों को वित्तपोषण, हथियार और समर्थन दे रहा है। गाजा में एक खुल जनसंहार रचाया जा रहा है और एक समूचे देश के वजूद को मिटा देने की कोशिश है। युद्ध व मानवाधिकार से जुड़े तमाम अंतरराष्ट्रीय नियम व मान्यताएं स्थगित कर दी गई हैं। घेर कर मारेंगे और रोने भी नहीं देंगे की तर्ज पर अमरीका के नेतृत्व में खुली दादागिरी चल रही है। वक्ताओं ने आगे कहा कि फिलिस्तीन

गृहमंत्री का बयान भ्रामक: भाकपा

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने बिहार सरकार द्वारा जारी जातीय गणना को सही करार देते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह के द्वारा मुजफ्फरपुर में बिहार सरकार के जातीय गणना में यादव और मुसलमानों की संख्या के बारे में दिये गये बयान को भ्रामक और आम लोगों को गुमराह करने वाला बताया है। प्रेस को जारी बयान में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव राम नरेश पाण्डेय ने कहा कि मुजफ्फरपुर में केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा यह कहना की बिहार सरकार के द्वारा जारी जातीय गणना में यादव और मुसलमानों की संख्या को बढ़ा कर दशार्या गया है जो भ्रम फैलाने और आम लोगों को गुमराह करने बाला है। उन्होंने कहा की भारतीय जनता पार्टी बिहार विधान सभा में जातीय गणना कराने के फैसले में शामिल थी उसके बावजूद भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेता ने बिहार सरकार के द्वारा जारी जातीय गणना को गलत बताकर बिहार की जनता में भ्रम फैलाने का काम कर रही है। राज्य सचिव श्री पाण्डेय ने गृहमंत्री अमित शाह एवं भारतीय जनता पार्टी के नेता द्वारा जातीय गणना पर दिये जा रहे बयान को भ्रामक और जनता को गुमराह करने बाला बताया और केन्द्र सरकार से देश के पैमाने पर जातीय गणना कराने की मांग की।

वंचित समाज पार्टी का भाजपा में विलय, कई लोग भाजपा में हुए शामिल

जब तक मोदी पीएम हैं कोई भ्रष्टाचारी नहीं बच सकता : सम्राट

पटना। वंचित समाज पार्टी का मंगलवार को भाजपा में विलय हो गया। वंचित समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रतन मंडल, कोषाध्यक्ष डॉली कुमारी, गोपाल सिंह सहित पार्टी के कई कार्यकताओं ने भाजपा के प्रदेश कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर ली। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार ने जाति गणना की रिपोर्ट और आर्थिक सर्वे रिपोर्ट जारी किया है। वैसे, हम वैसी पार्टी के सिपाही हैं जिसका नेतृत्वकर्ता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही अति पिछड़े समाज से आते हैं, जिसका देश और दुनिया में डंका बज रहा है। वंचित समाज से आए प्रमुख लोगों में राष्ट्रीय अध्यक्ष रतन मंडल, कोषाध्यक्ष डॉली कुमारी, गोपाल सिंह, जगदीश तिवारी, राहुल झा, देवव्रत कुमार हैं। उन्होंने भाजपा में आए लोगों को आश्वस्त किया कि भाजपा पहले भी सबसे अधिक अति पिछड़े समाज के लोगों को चुनाव लड़वाती थी और आगे भी ऐसा ही करेगी। भाजपा नेता ने साफ कहा कि कल भी भाजपा जातीय सर्वे के साथ थी और आगे भी रहेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा समृद्ध बिहार और विकसित बिहार की परिकल्पना के साथ आगे बढ़ रही है। श्री चौधरी ने कहा कि जब तक मोदी प्रधानमंत्री हैं तब तक कोई भ्रष्टाचारी नहीं बच सकता है। आज बिहार में अपराधी खुलेआम घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं, लेकिन जब बिहार में भाजपा की सरकार आयेगी तो अपराधी को नेपाल भागना पड़ेगा। समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने भाजपा में आए लोगों का स्वागत करते हुए कहा कि अति पिछड़ा समाज में भी गंगोतर समाज सबसे अधिक गरीब है। उन्होंने रतन मंडल को भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने का स्वागत करते हुए कहा कि इससे भाजपा मजबूत होगी। इस मौके पर पूर्व उप मुख्यमंत्री तार किशोर प्रसाद, पूर्व मंत्री मंगल पाण्डेय, शहनवाज हुसैन भी उपस्थित रहे। मंच का संचालन कार्यालय मंत्री प्रवीण पटेल ने किया।

जल एवं हरियाली के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती

- समाहरणालय में जल जीवन हरियाली दिवस का आयोजन
- ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के लिए हम सबको प्रतिबद्ध रहने की आवश्यकता: डीडीसी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जिलाधिकारी डॉ. चन्द्रशेखर सिंह के निदेश पर उप विकास आयुक्त तनय सुल्तानिया की अध्यक्षता में मंगलवार को समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जल-जीवन-हरियाली दिवस का आयोजन किया गया। इसका आयोजन जिला जन-सम्पर्क कार्यालय द्वारा किया गया। इसमें जल-जीवन-हरियाली अन्तर्गत जागरूकता का प्रसार विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। सिविल सर्जन, जिला पंचायत राज पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता लघु जल संसाधन विभाग, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी शिक्षा, कार्यपालक अभियंता लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, मत्स्य विभाग के प्रतिनिधि एवं अन्य ने भाग लिया। वक्ताओं ने कहा कि जल एवं हरियाली के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। डीडीसी ने कहा कि बिहार की पारिस्थितिकीय चुनौतियों एवं पर्यावरण में परिवर्तन को देखते हुए सरकार द्वारा जल-जीवन-हरियाली अभियान की शुरूआत की गई। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण अभियान है। जल-जीवन-हरियाली अभियान की सफलता सुनिश्चित सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। जल है, हरियाली है तभी जीवन है। सभी हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को इसके प्रति संवेदनशील तथा तत्पर रहना होगा। कार्यक्रम में सिविल सर्जन, जिला पंचायत राज पदाधिकारी, जिला कृषि पदाधिकारी, कार्यपालक अभियंता लघु जल संसाधन विभाग, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी शिक्षा, कार्यपालक अभियंता लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग, मत्स्य विभाग के प्रतिनिधि एवं अन्य ने जल-जीवन-हरियाली अभियान पर विस्तार से प्रकाश डाला। इन अधिकारियों द्वारा अपने-अपने विभाग से जिलान्तर्गत किए गए कार्यों के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। डीडीसी श्री सुल्तानिया ने कहा कि जल-जीवन-हरियाली मिशन में लक्ष्य के अनुरूप उपलब्धि प्राप्त करने के लिए हम सभी सतत प्रयत्नशील हैं। जल-जीवन-हरियाली अभियान अन्तर्गत 11 विभिन्न अवयव है। सभी 15 क्रियान्वयन विभागों के आपसी समन्वय से हरेक अवयव पर सफलतापूर्वक कार्य किया जा रहा है। सार्वजनिक जल संरचनाओं का जीर्णोद्धार, कुओं, सोख्ता, रिचार्ज एवं अन्य जल संरचना का निर्माण, भवनों में छत वर्षा जल संचयन संरचनाओं का निर्माण, सावर्जनिक जल संचयन संरचनाओं को चिन्हित कर अतिक्रमणमुक्त करना, जैविक खेती एवं टपकन सिंचाई, सौर ऊर्जा उपयोग को प्रोत्साहन एवं ऊर्जा संरक्षण सहित विभिन्न बिन्दुओं पर तेजी से कार्य किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान भी हमलोगों ने देखा है कि मिशन अन्तर्गत कार्य में अच्छी प्रगति है। जो भी कार्य किया जा रहा है उससे न सिर्फ पर्यावरण संरक्षण हो रहा है बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण भी हो रहा है। बहुत सारे कार्य जीविका के माध्यम से कराया जा रहा है। उन्होंने देखा है कि तालाबों में ही मत्स्य पालन तथा बत्तख पालन भी किया जा रहा है। इससे उनकी आमदनी भी बढ़ रही है। इस प्रकार जल-जीवन-हरियाली मिशन पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ समाज सुधार अभियान, महिला सशक्तिकरण, लोगों में जागरूकता तथा आने वाली पीढ़ी की दीर्घजीविता के लिए भी काफी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन एवं उसके बढ़ते दुष्परिणामों को रोकने के लिए जल-जीवन-हरियाली अभियान के प्रति हम सबको प्रतिबद्ध रहना पड़ेगा।

बिहार के बौद्ध और सिख सर्किट के बारे में लंदन में दिख रही जिज्ञासा

- लंदन में आयोजित हो रहे डब्लूटीएम के दूसरे दिन पर्यटन सचिव ने वैश्विक पर्यटकों को दी जानकारी
- बिहार पैवेलियन में पधारे पर्यटकों का बिहार की विरासतों के प्रतीक चिह्न देकर किया गया स्वागत

प्रात : किरण संवाददाता

लंदन/पटना। ग्रेट ब्रिटेन की राजधानी लंदन में बिहार के बौद्ध और सिख सर्किट के बारे में वैश्विक पर्यटकों की अच्छी जिज्ञासा दिखाई दे रही है। लंदन के वर्ल्ड ट्रैवेल मार्केट शो के दूसरे दिन बिहार पैवेलियन में पधारे पर्यटकों का स्वागत बिहार की विरासत से जुड़े प्रतीक चिह्नों को देकर किया गया। वर्ल्ड ट्रैवेल मार्केट में आने वाले पर्यटकों को बिहार के पर्यटन सचिव श्री अभय कुमार सिंह सभी सर्किटों के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं। पर्यटन सचिव ने बिहार पैवेलियन में जानकारी लेने आ रहे पर्यटकों को बताया कि बिहार में सिख श्रद्धालुओं का दूसरा सबसे बड़ा तख्त दशमेश गुरु गुरु गोबिंद सिंह जी की जन्मस्थली तख्त श्री पटना साहिब अवस्थित है जहां दुनिया भर से सिख श्रद्धालु पहुंचते हैं और मत्था टेकते हैं। गुरु गोबिंद सिंह की जन्मस्थली में न केवल सभी उच्च स्तरीय पर्यटकीय सुविधाएं मौजूद है। अभी इसी वर्ष प्रकाश पुंज का निर्माण किया गया है जहां गुरु जी की स्मृतियों को संजोया गया है। राजगीर में पहले गुरु गुरुनानक देवजी का आगमन हुआ था जहां शीतल कुंड गुरुद्वारे का निर्माण कराया गया है, इसी प्रकार हमारे यहां बौद्ध सर्किट है, जहां बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े कई महत्वपूर्ण तीर्थस्थल हैं, जहां दुनिया भर के बौद्ध श्रद्धालु पहुंचते हैं। बेहतर सुविधाओं के कारण वहां लगातार पर्यटकों की संख्या में अभिवृद्धि हो रही है। इस कारण ग्रेट ब्रिटेन से ज्यादा से ज्यादा संख्या में पर्यटकों के स्वागत की आकांक्षा बिहार पर्यटन विभाग को है। विदित हो कि लंदन में आयोजित होने वाली डब्लूटीएम में लंदन में रह रहे बौद्ध, सिख और जैन समुदाय के लोगों के बीच विस्तार से जानकारी देने हेतु पर्यटन सचिव अभय कुमार सिंह, पर्यटन निदेशक विनय कुमार राय और बिहार राज्य टूरिज्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन के महाप्रबंधक अभिजीत कुमार और आप्त सचिव पर्यटन सार्थक कुमार लंदन में मौजूद है। यह कार्यक्रम 8 नवंबर को भी जारी रहेगा।

सारण, बेगूसराय एवं नवादा की बालिका खिलाड़ियों का दबदबा कायम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग एवं बिहार राज्य खेल प्राधिकरण के संयुक्त तत्वावधान में जिला प्रशासन पटना द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय (अन्तर जिला) विद्यालय भारोत्तोलन खेल प्रतियोगिता 2023-24 में मंगलवार को सारण, बेगूसराय एवं नवादा की बालिका खिलाड़ियों ने अपना दबदबा कायम रखा। स्थानीय पाटलिपुत्र खेल परिसर में चल रहे चार दिवसीय इस प्रतियोगिता के दूसरे दिन सारण की बालिका भारोत्तोलकों ने दो स्वर्ण, एक रजत तथा नवादा की बालिका भारोत्तोलकों ने दो स्वर्ण, दो कांस्य तथा बेगूसराय की बालिका भारोत्तोलकों ने एक स्वर्ण, एक रजत तथा एक कांस्य पदक जीता। वहीं पूर्वी चम्पारण की बालिका भारोत्तोलक को एकमात्र स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।

फसल अवशेष जलाने की घटना पर सेटेलाईट के माध्यम से रखी जाएगी नजर

फसल अवशेष को खेतों में न जलाने को लेकर विकास आयुक्त की अध्यक्षता में हुई बैठक

- कृषि विभाग में अनुश्रवण कोषांग का किया गया गठन
- सभी जिला पदाधिकारियों को निगरानी रखने का दिया गया निदेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

विकास आयुक्त विवेक कुमार सिंह की अध्यक्षता में फसल अवशेष को खेतों में न जलाने से संबंधित अंर्तविभागीय कार्य-समूह की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने पदाधिकारियों को फसल अवशेष को खेतों में न जलाने तथा फसल अवशेष प्रबंधन पर प्रस्तुतीकरण के माध्यम से फसल अवशेष जलने की घटना की गम्भीरता के विषय पर सरकार की प्राथमिकता के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 27 अक्टूबर को मुख्य सचिव की अध्यक्षता में सभी जिला पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से फसल अवशेष को खेतों में जलाने पर रोक लगाने एवं फसल अवशेष प्रबंघन संबंधित बैठक के अनुपालन में सभी जिला पदाधिकारियों को कम्बाईन हार्वेस्टर के संचालन, फसल अवशेष जलाने की घटना पाये जाने वाले चिह्नित पंचायतों पर विशेष निगरानी, फसल अवशेष प्रबंधन हेतु स्पेशल कस्टम हायरिंग सेंटर का प्रभावी संचालन, जागरूकता एवं दण्डात्मक कार्रवाई हेतु निदेशित किया गया है। फसल अवशेष जलाने वाले किसानों की सूची धान अधिप्राप्ति के लाभ से भी वंचित करने हेतु सहकारिता विभाग एवं खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग को उपलब्ध कराया गया तथा फसल अवशेष जलाने के कारण डीबीटी पंजीकरण रद्द किये गये किसानों की सूची प्रखण्ड कार्यालयों में प्रदर्शित करने हेतु सभी जिला पदाधिकारी को निदेशित किया गया है। कृषि सचिव ने बताया कि राज्य में वायु गुणवत्ता सूचकांक के अनुसार वातावरण में वायु प्रदूषण की स्थिति खराब हो रही है। जैसे-जैसे धान कटनी का समय आयेगा, वैसे-वैसे स्थिति बिगड़ने की सम्भावना है। विकास आयुक्त ने कहा कि बार-बार फसल अवशेष जलाने वाले किसानों पर सेटेलाईट इमेज/एरियल प्रतिवेदन के आधार पर जीआर पी सी की सुसंगत धारा-133 के तहत एवं आवश्यक निरोधात्मक कार्रवाई की जाये। इस तरह की कार्रवाई का संदेश आम लोगों तक जाये, जिससे वे खेतों में पुआल को न जलायें। उन्होंने कहा कि मुख्यालय स्तर पर अनुश्रवण कोषांग द्वारा प्रतिदिन सेटेलाईट इमेज का प्रतिवेदन जिलों को भेजकर की गई फसल अवशेष जलाने वाले किसानों के विरूद्ध की गई कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे।

अभी दक्षिण बिहार के जिलों में कटनी शुरू नहीं हुई है, जैसे-जैसे इन इलाकों में कटनी शुरू होगी वैसे-वैसे फसल अवशेष जलाने की घटना खेतों में बढ़गी। इसलिए अभी से ही मुख्यालय से लेकर पंचायत स्तर तक निरंतर अनुश्रवण किया जाये। प्रचार के विभिन्न माध्यमों से फसल अवशेष प्रबंधन पर किसानों को जागरूक किया जाये। कम्बाईन हार्वेस्टर के संचालकों व किसानों पर विशेष नजर रखा जाये तथा कम्बाईन हार्वेस्टर के परिचालन पर कड़ी निगरानी रखी जाये। स्पेशल कस्टम हायरिंग सेंटर के द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन से संबंधित यंत्रों का अधिक-से-अधिक उपयोग सुनिश्चित किया जाये, ताकि स्पेशल कस्टम हायरिंग सेन्टर के प्रभावी क्षेत्र में कही भी फसल अवशेष जलने की घटना नहीं पाया जाये। बैठक में सचिव, ग्रामीण विकास विभाग, सचिव, कृषि विभाग, सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, सदस्य सचिव, बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद्, पटना, कृषि निदेशक, निदेशक, प्रसार शिक्षा, डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, निदेशक, प्रसार शिक्षा, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर, परियोजना निदेशक, बिहार सुदूर संवेदन उपयोग केन्द्र, पटना तथा अंर्तविभागीय कार्य समूह के संबद्ध विभागों के प्रतिनिधियों ने भाग लिये।

भवन निर्माण विभाग

बिहार सरकार

कार्यपालक अभियंता, पाटलिपुत्र भवन प्रमंडल, पटना का कार्यालय

अतिअल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–73 वर्ष 2023–24

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : कार्यपालक अभियंता, पाटलीपुत्र भवन प्रमंडल, पटना।
2. परिमाण–विपत्र बिक्री की तिथि एवं समय : दिनांक–14.11..2023 को 12.00 बजे अपराह्न तक।
3. निविदा प्राप्ति कि तिथि एवं समय : दिनांक–16.11..2023 को 3:00 बजे अपराह्न तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : दिनांक–16.11.2023 को 3.30 बजे अपराह्न से।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : (क)अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, दक्षिण बिहार अंचल, भ

संक्षिप्त खबरें

चाकू मारकर युवक को किया जख्मी

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के लदौरा गांव में सोमवार की शाम आपसी विवाद को लेकर हुई झडप के बीच पड़ोस के ही एक युवक ने दूसरे पक्ष के युवक को हाथ में चाकू मार कर गंभीर रूप से जख्मी कर दिया। स्थानीय लोगों की मदद से जख्मी युवक को ईलाज के लिए पीएचसी में भर्ती कराया गया। जहां उसका इलाज जारी है। जख्मी युवक की पहचान लदौरा गांव निवासी सुरेश पंडित के 25 वर्षीय पुत्र रोशन कुमार पंडित के रूप में हुई है। चाकू बाजी से क्षेत्र में तरह-तरह के लोगों के बीच चर्चा हो रही है। वहीं थाना अध्यक्ष राजन कुमार ने बताया कि चाकू मामले की जांचो उपरांत ही कुछ कहा जा सकता है। वैसे जख्मी के परिजन द्वारा आवेदन नहीं मिला है।

जन आशीर्वाद यात्रा का हुआ समापन

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट सामाजिक मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुबोध कुमार सिंह के नेतृत्व में जन आशीर्वाद यात्रा के चौदहवें दिन बोआरीडीह पंचायत के गौसनगर, दहिया, चिरैला, कोठियां एवं बोआरीडीह गांव पहुंची, आमजन से आशीर्वाद प्राप्त करते दौरान दहिया गांव के पूर्व मुखिया एवं समाजसेवी श्री उपेन्द्र सिंह से मुलाकात कर आशीर्वाद प्राप्त किया। कोठियां गांव में आशीर्वाद प्राप्त करने के क्रम में एक वरिष्ठ समाजसेवी चुनचुन सिंह से भी मुलाकात कर आशीर्वाद प्राप्त किये। आज के जन आशीर्वाद यात्रा की समापन के पश्चात बोआरीडीह स्थित हरिशंकर तिवारी जी दरवाजे पर एक चौपाल लगाया गया जिसमें सामाजिक मंच से उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया, तथा पंचायत की प्रमुख समस्या पर चर्चा कर उसके निदान हेतु, मंच के एजेंडे में शामिल किया गया।इस चौपाल में श्री राजीव रंजन सिंह,पुतुल सिंह, मनोज सिंह, सुरेन्द्र सिंह, मुकुंद नन्दन कुंवर,ि वजय झा, राजेश्वर झा, राम संयोग तिवारी, पप्पू तिवारी, इत्यादि ग्रामवासी शामिल हुए।

खाद दुकान से लाखों की चोरी

फतुहा। बीते सोमवार की रात थाना क्षेत्र के डुमरी रक्षा बांध के पास स्थित एक खाद दुकान से करीब डेढ लाख रुपए की नकदी समेत खाद की चोरों ने चोरी कर ली। चोरों ने इस घटना को अंजाम दुकान की शटर उखाड़कर दिया है। इस बात की जानकारी खाद दुकान के मालिक प्रमोद कुमार को तब हुई जब सुबह मॉर्निंग वाक पर निकले ग्रामीणों ने उन्हें फोन पर सूचना दी। डुमरी गांव निवासी दुकान मालिक प्रमोद कुमार तत्काल दुकान पर पहुंचे और देखा कि दुकान का शटर एक तरफ से उखड़ा हुआ है और दुकान में रखे खाद की कई बोरी गायब है। गल्ले से भी तीन चार हजार रुपए गायब है। पीड़ित के द्वारा पुलिस को सूचना दी गयी। पुलिस घटनास्थल पर पहुंचकर घटना की छानबीन की। दुकान के बाहर टायरों के निशान उभरे हुए थे। आशंका जताई जा रही है कि चोरों द्वारा खाद की बोरी को किसी चार चक्के वाली वाहन पर लोड कर ले जाया गया है। पीड़ित दुकान मालिक प्रमोद कुमार के मुताबिक डीएपी खाद की बीस बोरी, गेहूं के बीज की 70 बोरी, यूरिया खाद की 25 बोरी के साथ दुकान में रखे इलेक्ट्रॉनिक कांटा भी चोरों ने चोरी कर ली है। इस सन्दर्भ में पीड़ित दुकान मालिक ने अज्ञात चोरों के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज करायी है। शिकायत के आलोक में पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मारवाड़ी सम्मेलन में धूमधाम से मनी अग्रसेन की जयंती

बेगूसराय। सोमवार की देर शाम मारवाड़ी मोहल्ला स्थित अग्रसेन विवाह भवन में बेगूसराय मारवाड़ी सम्मेलन में अग्रसेन महाराज की धूमधाम से जयंती मनाई गई। चित्रकला प्रतियोगिता एवं दीपों की थाली प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। मारवाड़ी परिवार के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपना एक से बढकर एक जौहर दिखाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बिहार प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष युगल किशोर अग्रवाल ने कहा कि इसका उद्देश्य है, मारवाड़ी समाज का सामाजिक सुधार करना। शाखा अध्यक्ष रवि मस्कारा ने कहा कि अग्रसेन महाराज की राजनीति आज भी प्रेरणा स्रोत है। शाखा अध्यक्ष ने मारवाड़ी समाज का देश के विकास में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। इस मौके पर शाखा के प्रदेश उपाध्यक्ष सह अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य मुकेश जैन को मारवाड़ी सम्मेलन के द्वारा अंग वस्त्र और बुके देकर सम्मानित किया गया। शाखा अध्यक्ष ने कहा कि मुकेश जैन का अल्पसंख्यक आयोग का सदस्य बनना बेगूसराय मारवाड़ी समाज के लिए गौरव की बात है। बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालक महिला शाखा से सरिता सुल्तानिया और संगीता हिसारिया तथा मंच का संचालक संजीव मस्कारा ने किया।

इंडिया गठबंधन के बैनर तले सत्याग्रह आयोजित

- हम एम्स बनाने के लिए आंदोलन में जेल जाने को भी तैयार है : पूर्व केंद्रीय मंत्री

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा बहादुरपुर प्रखंड के बलिया मौज में प्रस्तावित एम्स निर्माण हेतु केंद्र सरकार से अभिलंब एनओसी दिलवाया जाय और निर्माण कार्य शुरू करवाने,दरभंगा शहर के पांच से अधिक जगहों पर स्वीकृत रेलवे ओवरब्रिज का निर्माण कार्य अभिलंब करवाने,बाकी जगह पर भी स्वीकृत प्रदान करने, दरभंगा मुजफ्फरपुर स्वीकृत रेल परियोजना का कार्य अभिलंब शुरू करवाने,हरी नगर हसनपुर रेल परियोजना का लंबित कार्य को अभिलंब पूरा करने,अलौली कुशेश्वरस्थान रेल परियोजना का कार्य अभिलंब शुरू करने,दरभंगा हवाई अड्डा का विस्तारीकरण एवं किराए में बेतहासा वृद्धि को नियंत्रित करने,लहेरिया सराय स्टेशन पर सभी एक्सप्रेस वह सुपरफास्ट ट्रेन का ठहराव करने सहित अन्य सवालों पर लहेरियासराय के पोलो मैदान में जन सत्याग्रह का आयोजन किया गया। सत्याग्रह की अध्यक्षता राजद जिलाध्यक्ष उदय शंकर यादव,सीपीआई राजीव चौधरी,सीपीएम दिलीप भगत,भाकपा माले के नेयाज अहमद,कांग्रेस के सीताराम चौधरी,शशि कांत साहू ने किया। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री अली असरफ फातमी,पूर्व विधायक ऋषि मिश्रा,सीपीएम राज्य सचिव ललन चौधरी,भाकपा माले जिला सचिव बैद्यनाथ यादव,अभिषेक कुमार,प्रिंस राज,हरि पासवान,सत्यनारायण मुखिया,धर्मेश यादव,सीपीआई जिला सचिव नारायण जी झा, राजद के आर के चौधरी,अफजल अली खान,राकेश नायक,चंद्रावती देवी,भोलू यादव,अमरेश कुमार अमर,गंगा मंडल,स्वाति लाल देव,रेखा देवी,गंगा प्रसाद यादव,विश्वनाथ चौधरी,पी के मिश्रा,राजा पासवान,बबलू सहनी,मोहमद रासीद,सुभाष पासवान,रवि पूर्व,मोहम्मद कलीम उद्दीन राही,चंद्रिका लाल देव,पन्ना यादव,मुकेश कुमार निराला,उपेंद्र यादव,रवि मलिक,मिथिलेश सहनी,भोला सहनी, दिनेश राय,भाकपा माले के विनोद सिंह,पप्पू पासवान,केशरी यादव,शिवन यादव,सुरेंद्र पासवान,सीपीआई के अहमद अली तमन्ने,राजू मिश्रा,गौतम कांत चौधरी,सत्रुध्न झा,शशि रंजन प्रताप सिंह,भगवान लाल पासवान,आनद मोहन झा,शिव कुमार सिंह,दीपक मिश्रा,हरिकृष्ण राम,ललित किशोर मिश्र,सीपीएम राम सागर पासवान,महेश दुबे,गोपाल ठाकुर,दिनेश झा सहित सैकड़ों लोग शामिल थे। सभा को संबोधित करते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री अली असरफ फातमी ने कहा आम आदमी के बातो को सुनकर उनके बातो पर अमल करना चाहिए। उन्होंने कहा की दरभंगा में बारी रेल लाइन को लेकर भी बड़ा आंदोलन हुआ था। और आंदोलन के बल पर ही दरभंगा में बरी रेल लाइन मिला। उन्होंने लालू यादव का तारीफ करते हुए कहा की लालू प्रसाद यादव जब रेल मंत्री थे तो उन्होंने दरभंगा को बहुत रेल लाइन व ट्रेन दी थी। उन्होंने ने कहा की भारतीय जनता पार्टी के एजेंडा में दरभंगा ही नही बिहार का विकास भी नहीं है। उन्हे सिर्फ गुजरात की चिंता है। उन्होंने कहा की हम एम्स बनाने के लिए आंदोलन में जेल जाने को भी तैयार है। उन्होंने कहा की जिस सरकार के पास रेलवे ओवरब्रिज बनाने का पैसा नही है वो रेल लाइन क्या बिठाएगा। वही पूर्व विधायक ऋषि मिश्रा ने कहा की दरभंगा में एम्स बनने ने भाजपा के लोग ज्यादा परेशान है। उन्होंने कहा की दरभंगा में एम्स बनने से दरभंगा शहर का फैलाव होगा। उन्होंने कहा की भाजपा को साइंस से कोई मतलब नहीं है। इस लिए भाजपा को सत्ता से उखाड़ फेकना चाहिए।

वही सीपीएम राज्य सचिव ललन चौधरी ने कहा की आज भाजपा सिर्फ समाज में भ्रम फैला रही है। उसे विकास से कोई मतलब नहीं है। दरभंगा सहित मिथिलांचल विकास से कोसों दूर गई। इस लिए मिथिला वासियों को 2024 में भाजपा को उखाड़ फेंकने का संकल्प लेना चाहिए। वही भाकपा माले जिला सचिव बैद्यनाथ यादव ने कहा की 10 साल से भाजपा के सांसद है। और दरभंगा में एक भी विकास एक कार्य नही हुआ है। सिर्फ दरभंगा को ठगने व छलनें का काम किया है। दरभंगा में शुरू के दौर में केंद्रीय वि वि की स्थापना होना था लेकिन भाजपा वाले उसे दरभंगा से छीन कर ले गए। अब एम्स को लेकर वही राजनीति कर रहे है। श्री यादव ने कहा की आज जब दरभंगा व मिथिलांचल के विकास की बात हो रही है तो भाजपा के नेता बौखला रहे है। उन्होंने कहा की दरभंगा में एम्स निर्माण को लेकर समाज में भ्रम फैला रही है। आज जरूरत है की गांव-गांव में आज इंडिया गठबधन के लोग भाजपा के खिलाफ व्यापक स्तर पर प्रचार करने की जरूरत है।

सदर अस्पताल के ओपीडी में कैंसर जागरूकता सप्ताह का हुआ आयोजन

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कैंसर जागरुकता सप्ताह को लेकर स्वास्थ्य विभाग के द्वारा सदर अस्पताल के ओपीडी व एएनएम स्कूल परिसर में मंगलवार को जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें बताया गया कि सात नवंबर से 14 नवंबर तक कैंसर जागरुकता सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसमें कैंसर रोग को लेकर लोगों को जागरूक किया जाएगा। इस जागरूकता कार्यक्रम के दौरान बताया गया गया कि अगर समय रहते कैंसर रोग की पहचान कर ली जाए तो इसका इलाज संभव है। बताया गया कि धुम्रपान एवं तंबाकू के सेवन से लोग कैंसर के शिकार हो रहे हैं। जागरूकता सप्ताह के दौरान लोगों को जागरूक किया जा रहा है। ओपीडी में कैंसर स्क्रीनिंग के दौरान डॉ साक्षी के द्वारा कैंसर के कारणों व लक्षणों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

ट्रेन से शराब लाने वाला तस्कर समेत दो गिरफ्तार, 33 बोतल विदेशी शराब बरामद

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

आरपीएफ और सीआईबी की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर सोमवार की शाम थानेश्वर स्थान पुल के पास छापेमारी कर 12562 नई दिल्ली-दरभंगा स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस ट्रेन से विदेशी शराब लाने वाले एक शराब तस्कर व शराब की डिलेवरी लेने आए एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 17 जितवारपुर निवासी सन्नी कुमार राय एवं संजीव कुमार राय के रूप में हुई है। उनके पास से एक पिट्ठू बैग में रखा हुआ 33 बोतल विदेशी शराब बरामद किया गया है। इस संबंध में आरपीएफ इंस्पेक्टर वेद प्रकाश वर्मा ने बताया कि छापेमारी के दौरान दोनों अभियुक्त थानेश्वर स्थान पुल के पास दीवार फांदकर भागने का प्रयास कर रहे थे। जिन्हें आरपीएफ और सीआईबी की टीम ने खदेड़ कर पकड़ लिया और आगे की आवश्यक कार्रवाई के लिए बरामद शराब के साथ जीआरपी को सौंप दिया। छापेमारी टीम में आरपीएफ के एसआई विवेक कुमार, आरक्षी राजेश कुमार सिंह, आरक्षी संगीत कुमार राजू, सीआईबी हवलदार देबशंकर सिंह एवं आरक्षी दीपक कुमार शामिल थे।

उर्वरक निगरानी समिति की बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

चौसा प्रखंड अंतर्गत प्रखंड कृषि कार्यालय के सभा कक्ष में उर्वरक निगरानी समिति की बैठक आयोजित की गई. जिसकी अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख रानी भारती ने की। वहीं प्रमुख रानी भारती ने कही की प्रखंड क्षेत्र में रवि के मौसम में बोई जाने वाली फसलों का संवर्धन व प्रबंधन के लिए उर्वरक जरूरी है इसलिए किसी भी कीमत पर उर्वरक की कमी प्रखंड के किसानों को नहीं हो इसके लिए सतत निगरानी प्रखंड कृषि पदाधिकारी व उनके सहयोगी करते रहेंगे। ताकि गुरबारक समय पर उपलब्ध हो सके वहीं प्रखंड विकास पदाधिकारी बृजेश कुमार दीपक ने कहा कि सरकार के द्वारा निर्धारित मूल्य पर ही उर्वरक की बिक्री करेंगे अगर किन्ही का शिकायत प्रखंड प्रशासन तक पहुंचती है तो त्वरित कार्रवाई करते हुए विधि संवत करवाई किया जाएगा किसानों को उचित मूल्य पर उर्वरक उपलब्ध कारण तथा उसके साथ मानवीय मूल्यों को ध्यान में रखकर बातचीत भी करें वही इस मौके पर उपस्थित प्रखंड उप प्रमुख शीला दीक्षित ने कहा कि जब किसानों को फसल बोने का समय आता है तो उर्वरक की आवश्यकता लाजिमी हो जाती है इस परिस्थिति में दुकानदार होने-पुणे दम लगाकर किसानों को उर्वरक मुहैया करते हैं इससे किसानों का आर्थिक दोहन होता है ऐसा नहीं हो इसके लिए प्रखंड प्रशासन के द्वारा सतत निगरानी किया जाएगा। वहीं उपस्थित जदयू के नेता अब्बू साल सिद्दीकी ने कहा कि सरकार के द्वारा टोल फ्री नंबर किसानों को मुहैया कराया गया है अगर उचित मूल्य पर उर्वरक की बिक्री नहीं करते हैं तो किसान स्वतंत्र होकर बड़े अधिकारी को टोल फ्री नंबर के माध्यम से सूचना देंगे ऐसे दुकानदारों पर कार्रवाई भी निश्चित होगी इससे बचने के लिए किसानों के साथ सुहागपूर्ण वातावरण बनाकर उन्हें उचित मूल पर उर्वरक मुहैया करे। वही प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार यादव ने कहा कि किसानों के लिए दुकानदारों का व्यवहार मानवीय हो तथा उनसे अच्छे वातार्कार उर्वरक की बिक्री करना सुनिश्चित किया जाए अगर किसी तरह की समस्या दुकानदारों के साथ होती है तो वह भी प्रखंड प्रशासन में अपनी शिकायत रख सकते हैं ताकि उसे पर अमल किया जा सके वही प्रखंड उप प्रमुख प्रतिनिधि जनरल सिंह कहा की इस सीजन में उर्वरक की कमी नहीं हो किस समय पर अपने खेत में उर्वरक डाल सकें ऐसी व्यवस्था बनाए रखेंगे। प्रखंड कृषि पदाधिकारी ओम प्रकाश यादव ने कहा कि विभाग के द्वारा सतत निगरानी बनाई जा रही है शिकायत मिलने पर दुकानदारों के बीच दंडात्मक कार्रवाई भी होगी इसलिए किसानों से नेतृत्व भावना के साथ उर्वरक की बिक्री करेंगे बैठक में मुख्य रूप से उर्वरक समिति के प्रखंड अध्यक्ष अनिरुद्ध यादव, अमित कुमार, रतन अग्रवाल, नवल किशोर भगत, आदेश सिंह, मुरारी लाल पटवारी, कृषि कर्मी विरमानी कुमार कुंदन कुमार, राजीव कुमार चौधरी, धीरज कुमार पासवान, कुंज बिहारी शास्त्री आदि उपस्थित थे

डाटा एंट्री ऑपरेटरों ने अपनी मांगों के समर्थन में काला बिल्ला लगाकर किया कार्य

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार राज्य डाटा एंट्री कम्प्यूटर ऑपरेटर संघ की जिला इकाई से जुड़े कर्मियों ने पूर्व घोषित कार्यक्रम के तहत सोमवार से अपना आंदोलन तेज कर दिया है। सेवा समायोजन की मांग को लेकर चरणबद्ध तरीके से आंदोलन के तहत रविवार को धरना-प्रदर्शन प्रारंभ किया गया था। बेल्ट्रॉन के माध्यम से संविदा के आधार पर जिले के विभिन्न कार्यालय में कार्यरत डाटा एंट्री ऑपरेटर, प्रोग्रामर, आईटी बॉयज, गर्ल्स इत्यादि द्वारा सोमवार से 11 नवम्बर तक काला बिल्ला लगाकर काम करने का निर्णय लिया है। जिला परिवहन कार्यालय में रवि शंकर प्रसाद, मो0 अशीरुद्दीन, विकास कुमार, राजीव कुमार, विकास कुमार राय, रजनीश कुमार, देव वचन दिनकर, रजनीश प्रसाद यादव, कुंदन कुमार एवं मनोरंजन कुमार आदि कर्मचारियों ने काला पट्टी लगाकर कार्य कर रहे हैं। चरणबद्ध तरीके से आंदोलन शुरू करने का लिया निर्णयलिया गया है। जनसंपर्क कार्यालय डाटा एंट्री ऑपरेटर संघ के जिला इकाई के अध्यक्ष अनुराग नंदन ने काला बिल्ला लगाकर काम किया। उन्होंने कहा कि सरकार हमारी एक मांग सेवा समायोजन को आने वाला कुछ माह में पूरा नहीं करती है तो आंदोलन को तेज किया जाएगा, जिसकी सारी जिम्मेवारी सरकार की होगी। हम सभी 25 वर्षों से अपनी सेवा सरकार को देते आ रहे हैं लेकिन अब तक सेवा का समायोजन नहीं हो पाया है। सरकार द्वारा हमारी उपेक्षा की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि अगर इन 25 दिनों में सरकार कोई ठोस पहल नहीं करती है तो संघ द्वारा 28 व 29 नवम्बर को सांकेतिक हड़ताल की जायेगी।

गेहूं का बीज लदा ट्रक पलटा, चालक और खालासी गंभीर रूप से घायल

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर-मुजफ्फरपुर पथ पर पूसा थाना क्षेत्र के भुसकौल चौक के पास सोमवार की रात एक ट्रक के पलट जाने से ट्रक का चालक और खलासी गंभीर रूप से जख्मी हो गया। वहीं इस घटना में ट्रक पर लोड गेहूं के बीज की बोरी सड़कों पर बिखड़ गई। जिसे बाद में विभिन्न छोटे वाहनों में अनलोड किया गया। बताया गया है कि ट्रक पर गेहूं का बीज लोड था। माना जा रहा है कि भुसकौल चौक के पास सड़क अचानक कर्व रहने के कारण यह हादसा हुआ है। लोगों ने ट्रक के अंदर फंसे चालक और खलासी को बाद में ताजपुर रेफरल अस्पताल में भर्ती कराया है। घटना रात करीब 12:00 बजे की बताई गई है। बताया गया है कि ट्रक पंजाब के लुधियाना से पूसा के विसा फॉर्म के लिए गेहूं का बीज लेकर आ रहा था। लोगों ने बताया कि भूसकौल चौक के पास सड़क किनारे कुछ दिन पूर्व ही जल जमाव के कारण गढ्ढा बन गया था। जिस कारण लोगों ने नई मिट्टी भराई थी, जिस कारण सड़क में दलदली थी। लोगों ने कहा कि रात के अंधेरे में ट्रक चालक को अंदाजा नहीं होने पर उक्त दलदली की ओर ट्रक चला गया। जिससे ट्रक और संतुलित होकर पलट गया। बाद में विसा फॉर्म बी कंपनी के विभिन्न ट्रैक्टरों द्वारा ट्रक को अनलोड कर उसे क्रेन से उठाया गया। इस घटना के कारण सुबह में करीब 2 घंटे तक यातायात भी प्रभावित हुआ।

काला बिल्ला लगाकर विरोध जताते डाटा इंट्री ऑपरेटर

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा राज्य स्तरीय बिहार राज्य डाटा इन्ट्री ऑपरेटर संघ के आवाह्न पर बेल्ट्रॉन के माध्यम से दरभंगा जिलान्तर्गत विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत डाटा इन्ट्री ऑपरेटर,आशुलिपिक,आई.टी बॉयज व गर्ल्स ने सोमवार से शनिवार तक अपने-अपने कार्यालय में काला बिल्ला लगाकर शांतिपूर्ण तरीके से सरकार के समक्ष अपनी एक सूत्री माँग विभागीय सेवा समायोजन आवाज बुलंद कर रहे हैं। जिला सचिव ने कहा कि बेल्ट्रॉन के माध्यम से बहाल कर्मी लगातार संघर्ष करते हुए सरकार का ध्यान आकृष्ट करने में लगे हुए हैं,ताकि राज्य में लगभग 25 हजार से ज्यादा कार्यरत डाटा इन्ट्री ऑपरेटर का कल्याण हो सके। वही मीडिया प्रभारी मनीष कुमार आनन्द ने कहा कि 20 सालों से ऊपर काम करने के बावजूद भी डाटा इन्ट्री ऑपरेटर का कोई अस्तित्व नहीं दिखाई दे रहा है।उन्होंने कहा कि डाटा इन्ट्री ऑपरेटर को अपने और अपने परिवार के भविष्य की चिंता सता रही है। जिला अध्यक्ष जयप्रकाश मेहता ने कहा कि राज्य संघ के आवाह्न पर सभी डाटा इन्ट्री ऑपरेटर 06-11 नवम्बर तक काला बिल्ला लगाकर काम कर रहे,फिर भी सरकार अगर कोई सकारात्मक बातचीत एवं पहल नहीं करती है,तो बाध्य होकर 28 एवं 29 नवम्बर को जिलान्तर्गत सभी विभागों,संस्थाओं में कार्यरत डाटा एंट्री ऑपरेटर द्वारा दो दिवसीय सांकेतिक हड़ताल भी किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हम भी सरकार के एक अंग हैं,सरकारी कार्यालय में कार्य करने के बावजूद इस तरह की भेदभाव आखिर क्यों ?उन्होंने कहा कि हम सरकार से कहना चाहते है हम सभी की एकल माँग विभागीय सेवा समायोजन पर सकारात्मक फैसला लेकर कार्यरत हजारों डाटा इन्ट्री ऑपरेटर के भविष्य को उज्जवल बनाने की काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि विगत 25 वर्षो से बेल्ट्रान के माध्यम से सूबे में सचिवालय से लेकर जिला व प्रखण्ड स्तर पर डाटा इंट्री ऑपरेटर कार्य कर रहे हैं।

बीएनएमयू में 20वें दिन भी लंबित वेतन भुगतान को लेकर कर्मचारियों का हड़ताल जारी

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा बीएन मंडल विश्व विद्यालय में लंबित वेतन भुगतान की मांग को लेकर आज 20वें दिन भी कर्मचारियों का हड़ताल जारी रहा। हड़ताली कर्मचारियों के समर्थन में उतरे जाप प्रमुख पप्पू यादव ने कर्मचारियों से मिलकर न्याय का भरोसा दिया कहा सरकार का अलग अलग आदेश है जो बिल्कुल गलत है। उन्होंने कहा हाई कोर्ट का शरण लेंगे कर्मचारी और आर पार की होगी लड़ाई। बता दें कि बीएन मंडल विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने लंबित वेतन भुगतान की मांग को लेकर अनिश्चित कालीन हड़ताल पर डटे हुए हैं। कर्मचारियों के हड़ताल के कारण विश्वविद्यालय में पिछले 20 दिनों से सभी कामकाज ठप पड़ गया है। वहीं विभिन्न कार्यों से विश्वविद्यालय पहुँच रहे छात्रों को बैरंग वापस लौटना पड़ रहा है। चाहे रिजल्ट प्रकाशन का मामला हो या प्रमाणपत्र निर्गत कराने का मामला हो विश्वविद्यालय में किसी भी प्रकार का कोई आवश्यक कार्य नहीं हो पा रहा है खासकर हड़ताल के कारण बच्चों की भविष्य पर तलवार लटक रही है। हड़ताल कर रहे कर्मचारियों की माने तो वर्ष 2017 में 86 कर्मचारियों की विधिवत नियुक्ति हुई है तब से फरवरी 2023 तक नियमित रूप से वेतन का भुगतान होता रहा है,लेकिन मार्च 2023 से मई 2023 तक का वेतन भुगतान नहीं किया जा रहा है।अब सरकार के ताजा को लेकर विश्विद्यालय के कर्मचारियों में खलबली मची हुई है दरअसल पिछले 4 नवंबर को सरकार का एक और आदेश जारी हुआ है जिसमे 42 कर्मचारियों को हटाने की बात भी प्रकाश में आ रहा है। वहीं जाप सुप्रीमो पप्पू यादव विश्विद्यालय पहुंच कर हड़ताली कर्मचारी और कुलसचिव से मिल कर आपसी सामंजस्य के तहत तत्काल समस्याओं के निदान हेतु अपनी मजबूरी से बात रखी। उन्होंने विश्विद्यालय के कुलपति और कुलसचिव से आग्रह करते हुए कहा कि सरकार का अलग अलग आदेश बिल्कुल गलत है आप सरकार को पुराने आदेश के आलोक में पत्र प्रेषित कर समस्याओं का तत्काल निदान करें अन्यथा हड़ताली कर्मचारी हाई कोर्ट का शरण लेंगे और आर पार की होगी लड़ाई।

दीयों के प्रति लोगों का रुझान कम होने से इसका पुश्तैनी धंधा करने वालों में मायूसी

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

दीपावली के पर्व को कुछ ही दिन शेष है। ऐसे में जिले के कुम्हारों के चाक की रफ्तार तेज हो गई है। कुम्हार मिट्टी के आकर्षक दिए खिलौने बनाने में जुट गए है। जिले के कुम्हारों के हाथ चाक पर तेजी से चल रहे है और वह मिट्टी के दिए, खिलौने, गुल्लक, गुड्डा-गुड़िया, हाथी-घोड़े को आकर्षक तरीके से बनाने में जुट गए हैं। मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हार चरण लाल चक्रवर्ती बताते है कि यह हमारा पुश्तैनी धंधा है, इसी से जीविका चलती है, लेकिन अब बाजार में रंगीने लाइटें आ गई है, जिससे लोगों ने दीयों का उपयोग कम कर दिया है, फिर भी आस है कि इस दिपावली पर उनके दीयों की अधिक बिक्री होगी। कुम्हारों ने बताया कि सालों से यह कार्य कर रहे दीपावली से पहले बिक्री बहुत कम रहती है, लेकिन दीपावली पर होने वाली बिक्री का इंतजार रहता है। इस बार दिवाली पर दीयों की मांग बढ़ने की उम्मीद है, जिसे देखते हुए दीये बनाये जा रहे है। उन्होंने कहा कि रंगीन लाइटों से घर सजाया जा सकता है, लेकिन पूजा पाठ, धार्मिक अनुष्ठान के लिए दीयों का ही उपयोग किया जाता है। इसे देखते हुए दीया बनाने के काम में तेजी आई है। सामान्य दीया से लेकर रंग बिरंगे आकर्षक डिजाइन के दीपक भी तैयार किये जा रहे है।

खजौली मे ऑटो एजेंसी का हुआ उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

खजौली प्रखंड़ मुख्यालय के बगल में भुवनेश्वर सिंह मार्केट कंम्प्लेक्स मंगती बाबा चौक स्थित मंगलवार को माँ कमाख्या बजाज ऑटो एजेंसी का उद्घाटन फिता काटकर मुख्य अतिथि सूक्की पंचायत के पैक्स अध्यक्ष व प्रखंण्ड जदयू अध्यक्ष रामबाबू सिंह सांसद प्रतिनिधि शत्रुघ्न राउत एव पूर्व मुखिया सुधीर कुमार सिंह द्वारा किया गया. बजाज शोरूम की उद्घाटन के बाद दर्जनों ग्राहकों द्वारा बजाज एजेंसी से बजाज कंपनी के सभी प्रकार की वाइक को बुक कराया गया. माँ कामख्या ऑटो बजाज एजेंसी के प्रोपराइटर अजित कुमार ने बताया कि बजाज शोरूम रूम से 7 से 9 नवंबर तक जो भी ग्राहक बजाज की वाइक को बुक कराने पर ग्राहक को प्रथम पुस्कार एलईडी टीवी, दुतीय पुस्कार मोबाईल फोन,तृतीय पुस्कार हेलमेट, चौथा पुस्कार लेगार्ड एव पाँचवा पुस्कार नंबर की कभर दिया जाएगा. उन्होंने कहा कि बजाज शोरूम से बजाज फाइनेंशियल द्वारा ईएमआई से बजाज के सभी प्रकार की वाइक कम ब्याज दर पर उपलब्ध कराया जा रहा है.

वही सांसद प्रतिनिधि शत्रुघन राउत ने कहा कि खजौली जैसे छोटी सी जगह में बजाज की शोरूम खुल जाने से अब खजौली वासी को बजाज की वाइक खरीददारी के लिए जयनगर एव मधुबनी जाने से निजात मिल गया है. जदयू प्रखंड़ अध्यक्ष व सूक्की पैक्स अध्यक्ष रामबाबू सिंह ने कहा कि सुदूर देहात में बजाज शोरूम खुलने से अब लोगो को वाइक खरीदना सुविधा हो गयी है.वही पूर्व मुखिया सुधीर कुमार सिंह ने कहा कि आज के समय किसी भी परिवार को एक वाइक की जरूरत पड़ती है .वे वाइक खरीददारी के लिए दूर दराज शहरों में जाना पड़ता था, लेकिन खजौली में बजाज शोरूम खुल जाने से प्रखंण्ड वासी में हर्ष की माहौल है.इस मौके पर मुखिया अशोक कुमार सिंह,पूर्व मुखिया महेंद्र प्रसाद सिंह, भाजपा नेता संतोष कुमार शर्मा,रत्नेश कुमार,यशवंत सिंह सहित सैकड़ो ग्राहक एव आम जनता मौजूद थे।

महिला की शव एनएच पर रख घंटो किया सड़क जाम

प्रात : किरण संवाददाता

मुरलीगंज बीते रविवार को मधेपुरा में जनाधिकार पार्टी लोकतांत्रिक की ओर से आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में रैली के दौरान एक बुजुर्ग महिला को एक वाहन से ठोकर लगी थी। स्थानीय लोगो ने आनन फानन मधेपुरा मेडिकल कॉलेज लेकर गया था। जहां से बेहतर इलाज के लिए दरभंगा रेफर किया गया था। इलाज के दौरान महिला की मौत हो गई। मंगलवार को करीब ढ़ाई बजे परिजन मृतिका की शव को जीतापुर में एनएच 107 पर रख सड़क जाम कर मुआवजे की मांग कर रहे थे। बताया गया कि मृतिका धुड़गांव वार्ड 13 निवासी खटर दास की पत्नी कागो देवी (57) वर्ष की मौत हुई है। सड़क जाम कर आवाजाही बाधित कर दिया। लगभग ढ़ाई घंटे तक सड़क जाम रहने से लोगों को आवागमन में काफी परेशानी हुई। सड़क के दोनों तरफ बड़े व छोटे वाहनों की लंबी लाइन लग गई। सूचना मिलते ही थाना से पुलिस पदाधिकारी, सीओ मुकेश कुमार सिंह, आरओ विजय प्रताप सिंह मौके पर पहुंचकर पीड़ित परिजन को समझाने बुझाने का काफी प्रयास किया। हालांकि इस बीच जन अधिकार पार्टी लोकतांत्रिक के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह पूर्व सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव मधेपुरा से वापस लौटने के दौरान जीतापुर पहुंचे। जहां पीड़ित परिवार को हर संभव मदद करने और सरकारी लाभ दिलाने का भरोसा दिया। साथ हीं तत्काल आर्थिक सहायता किया। पप्पू यादव द्वारा दिये गए आश्वासन पर पीड़ित परिजन सहित आम लोगों ने सड़क जाम हटाया। पुलिस कागजी प्रक्रिया पूरी कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

संक्षिप्त खबरें

अनियंत्रित ट्रक के ठोकर से बाइक सवार युवक की मौत

डोरीगंज । डोरीगंज थाना क्षेत्र के छपरा पटना मुख्य मार्ग स्थित सिंगही चौक के समीप अनियंत्रित ट्रक की ठोकर से बाईक सवार एक युवक की मौत हो गई घटना देर शाम की बताई जा रही है ।मृतक सिंगही गांव निवासी दरबारी राय का 30 वर्षीय पुत्र संजय राय बताया जाता है ।प्राप्त जानकारी के अनुसार बताया जाता है कि युवक बालू व्यवसायी था जो देर शाम डोरीगंज से बाईक पर सवार वापस घर लौट रहा था तभी सिंगही उसके गांव के समीप ही दिघवारा की तरफ से छपरा की ओर आ रही अनियंत्रित एक ट्रक ने ठोकर मारी दी जिस घटना में युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया वही घटना को अंजाम दे चालक मौके से फरार हो गया जिसके बाद आनन फानन में लेकर परिजन छपरा सदर अस्पताल पहुंचे जहां ईलाज से पूर्व चिकित्सको ने युवक को मृत घोषित कर दिया ।स्थानीय लोगों ने बताया कि युवक बालू व्यवसायी था जिसे तीन पुत्र व एक पुत्री है ।इस संबंध में डोरीगंज थानाध्यक्ष ने बताया कि इस मामले में परिजनों का फर्द ब्यान अभी नहीं आया है आवेदन मिलते ही विधिसम्मत आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी जाएगी ।

शादी की नियत से युवती का अपहरण

दरियापुर ।स्थानीय थाना क्षेत्र के हरना से शादी की नीयत से कुछ लोगों ने एक युवती का अपहरण कर लिया ।इस संबंध में युवती की मां ने थाने में एफआईआर दर्ज कराई है ।दर्ज एफआईआर में उसने कहा है कि उसकी पुत्री अखंड ज्योति आंख अस्पताल मस्ती चक में गई थी ।वहीं से उसका शादी की नीयत से अपहरण कर लिया गया ।एफआईआर में उसने बिसाही गांव के नौ लोगों को नामजद अभियुक्त बनाया है ।दर्ज एफआईआर में उसने आरोप लगाया है कि केस करने के बाद उसे तरह तरह की धमकी दी जा रही है ।पुलिस छानबीन कर रही है ।

हाई टेंशन विद्युत प्रवाहित तार की चपेट में आने से छात्रा की मौत

आरा। भोजपुर जिले के चांदी थाना क्षेत्र के सलेमपुर गांव में मंगलवार की हाई टेंशन विद्युत प्रवाहित तार की चपेट में आने से साइकिल सवार छात्रा की मौत हो गई। इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाने के दौरान उसने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। घटना को लेकर लोगों के बीच काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही। जानकारी के अनुसार मृत छात्रा चांदी थाना क्षेत्र के सलेमपुर गांव निवासी भूटेली सिंह का 12 वर्षीय पुत्र अजीत कुमार है एवं आठवीं कक्षा का छात्र था। इधर मृत छात्रा के चाचा गुड्डू कुमार ने बताया कि वह प्रतिदिन की तरह मंगलवार की सुबह साइकिल से ट्यूशन पढ़ने के लिए बरौली गांव गया था। ट्यूशन पढ़कर जब वह बरौली गांव से साइकिल से वापस अपने गांव लौट रहा था और गांव में ही बीच रास्ते में ग्यारह हजार वोल्ट का हाई टेंशन विद्युत प्रवाहित तार टूटकर जमीन पर गिर पड़ा था। जैसे ही वह वहां पहुंचा। तभी वह करंट की चपेट में आ गया और गंभीर रूप से घायल हो गया। इसके बाद परिजन द्वारा उसे आनन-फानन में इलाज के लिए आरा सदर अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सक ने देखा उसे मृत घोषित कर दिया। इसके पश्चात परिजनों ने इसकी सूचना सदर अस्पताल में पदस्थापित पुलिस पदाधिकारी को दी। सूचना पाकर पुलिस सदर अस्पताल पहुंची और शव अपने कब्जे में लेकर उसका पोस्टमार्टम करवाया। बताया जाता है कि मृत छात्र अपने दो भाई व एक बहन में दूसरे स्थान पर था। मृत छात्रा के परिवार में मां प्रभावती देवी व एक बहन रीना कुमारी एवं एक भाई निखिल कुमार है। घटना के बाद मृत छात्र के घर में कोहराम मच गया है। घटी इस घटना के बाद मृत छात्र की मां प्रभावती देवी एवं परिवार के सभी सदस्यों का रो-रोकर बुरा हाल है।

विदेशियों ने हमारी रसोई पर कब्जा कर लिया है : जोशी

नई दिल्ली/पटना। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि विदेशियों ने हमारी रसोई पर कब्जा कर लिया है। यह देशवासियों के स्वास्थ्य के लिए घातक है। डॉ जोशी मंगलवार को गाँधी दर्शन में पिछले तीन दिवसीय मिलेट्स महोत्सव के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मिलेट देश की संस्कृति से जुड़ा प्रश्न है। घर में बनने वाला खाना सबसे अच्छा होता है। पहले हम चौकी पर बैठ कर हाथ से खाते थे और आज हम बिना छुरी कांटे के नहीं खाते हैं। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने अपने संबोधन में कहा कि मोटा अनाज हमारा पारंपरिक आहार है, जिसे खाकर हमारे पूर्वज लम्बी आयु जीते रहे हैं। अवसर ट्रस्ट के अध्यक्ष पूर्व सांसद आर के सिन्हा ने कहा कि देश में मिलेट्स को लेकर जागरूकता फैलाने की जरूरत है। मोटा अनाज हमारी सेहत के लिए लाभदायक है। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष रामबहादुर राय ने कहा कि मैं खादर वली के बताये गए सभी नियमों का पालन करने की कोशिश करता हूँ। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सचिव सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि इंदिरा गाँधी कला केंद्र इस मिलेट्स महोत्सव के आयोजकों में शामिल है।

जिले में डेंगू के मात्र तीन मरीज, हालांकि अभी भी अलर्ट मोड में स्वास्थ्य विभाग

शहरी व ग्रामीण इलाकों में डेंगू से बचाव और सुरक्षित रहने के लिए दिया गया आवश्यक दिशा निर्देश: सिविल सर्जन

छपरा कार्यालय। जिले में डेंगू की रोकथाम को लेकर एहतियात के तौर पर जिला प्रशासन के अलावा स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से तैयार है। डेंगू के खतरों को देखते हुए जिलाधिकारी के मार्गदर्शन और दिशा- निर्देश में स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह अलर्ट मोड में है। डेंगू से संबंधित मामलों की समीक्षा, जागरूकता अभियान एवं फॉगिंग का अनुश्रवण प्रत्येक दिन किया जा रहा है। जिसको लेकर प्रखंडवार डेंगू (एलाइजा) जांच और मरीजों के संबंध में जानकारी राज्य मुख्यालय को ससमय उपलब्ध करायी जा रही है। सिविल सर्जन डॉ सागर दुलाल सिन्हा ने बताया कि डेंगू के मामलों पर प्रभावी रूप से रोक लगाने को लेकर जिले के सभी अस्पतालों में डेंगू जांच किट व इलाज की सुविधा सुनिश्चित करने को लेकर संबंधित स्वास्थ्य संस्थानों के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी और प्रखंड स्वास्थ्य प्रबंधकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया है। शहरी क्षेत्रों सहित ग्रामीण इलाकों में डेंगू से बचाव और सुरक्षित रहने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया है। डेंगू के प्रसार पर आसानी से रोक लगाने में डेंगू प्रभावित गांवों में शत प्रतिशत फॉगिंग करानी सुनिश्चित होनी चाहिए। डेंगू जैसी बीमारी से ग्रसित अधिकांश लोग रोग से निजात पाकर पूरी तरह स्वस्थ हो चुके हैं। हालांकि अभी भी कुछ दिनों तक डेंगू के प्रसार की संभावना है। लिहाजा रोग के खतरों के प्रति सतर्क रहते हुए एहतियाती उपायों पर अमल करना बेहद जरूरी है। जिला वेक्टर जनित रोग नियंत्रण पदाधिकारी (डीवीबीडीसीओ) डॉ दिलीप कुमार सिंह ने बताया कि डेंगू के प्रसार की संभावना अब धीरे धीरे समाप्त हो रही है। लिहाजा रोग से बचाव और सुरक्षित रहने के लिए सतर्कता जरूरी है। क्योंकि डेंगू जैसी बीमारी के प्रति जागरूक होकर इससे आसानी से बचाव करना बेहद ही सरल है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा जिले में डेंगू मरीजों की जांच व इलाज को लेकर समुचित इंतजाम उपलब्ध कराया गया है। रोग पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से प्रभावित इलाकों में फॉगिंग करायी जा रही है। ग्रामीण इलाकों में जहां विभागीय स्तर से फॉगिंग का कार्य संपन्न कराया जा रहा वहीं शहरी इलाकों में संबंधित नगर प्रशासन के माध्यम से छिड़काव का कार्य संपादित किया जा रहा है।

सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ सत्यदेव प्रसाद सिंह ने कहा कि सदर अस्पताल में फि लहाल डेंगू के 3 मरीजों का उपचार किया जा रहा है। जबकि दो मरीज के पूरी तरह से स्वास्थ होने के बाद कल ही उनको छुट्टी दे दी गई है। हालांकि डेंगू से निबटने के लिए जिला मुख्यालय स्थित सदर अस्पताल में मच्छरदानीयुक्त 10 बेड जबकि अन्य सभी स्वास्थ्य केंद्रों में 5- 5 विशेष डेंगू वार्ड सुरक्षित बनाया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि डेंगू से बचाव को लेकर फिलहाल सतर्क रहने की जरूरत है। हालांकि डेंगू के खतरों से किसी को घबराने की नहीं बल्कि सावधानी पूर्वक बचाव से संबंधित उपचार और परहेज को गंभीरता से सुनिश्चित कराना जरूरी है।

सदर अस्पताल के अस्पताल प्रबंधक राजेश्वर प्रसाद ने बताया कि सदर अस्पताल में डेंगू के मरीजों की संख्या पांच थी। लेकिन दो लोगों को वापस घर भेज दिया गया है। क्योंकि वे लोग पूरी तरह से ठीक हो चुके थे। स्थानीय अस्पताल में मच्छरदानी युक्त 10 बेड सुरक्षित रखा गया है। ताकि शहरी क्षेत्रों के अलावा जिले में डेंगू के मरीज मिलने पर उसका समुचित उपचार कर जल्द से जल्द ठीक किया जा सके। विभागीय स्तर पर आवश्यक रूप से सख़्त निर्देश दिया गया है कि किसी भी मरीज की जांच में अगर डेंगू की पुष्टि होती है तो अविलंब विभाग को सूचित किया जाना चाहिए। साथ ही स्वास्थ्य केंद्रों में डेंगू जांच किट भी उपलब्ध है।

उपभोक्ता आयोग ने दो मामलों में इंश्योरेंस कंपनियों को भुगतान करने का दिया आदेश

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग के अध्यक्ष विरेंद्र प्रताप सिंह एवम सदस्य मनमोहन कुमार और मंजू सिंह की पीठ ने परिवाद पत्र संख्या 24 /21 जिसे एकमा थाना के प छुआ निवासी दीपक कुमार ने 24दिसम्बर को दाखिल किया था ।उन्होंने मारुति इंश्योरेंस कंपनी के पदाधिकारी सुरेश श्रीवास्तव पर मारुति चोरी हो जाने के पश्चात उनको क्लेम नहीं देने का आरोप लगाया था ।अपने परिवार पत्र में दशार्या था कि उन्होंने एक वैगन आर कार खरीदी थी जिसका इंश्योरेंस उन्होंने मारूति इंश्योरेंस कंपनी से कराया था। जो कार 12 फरवरी 2019 को चोरी हो गई ।जिसकी उन्होंने प्राथमिक की दर्ज कराई और इंश्योरेंस कंपनी को भी सूचना दिया उसके बाद इंश्योरेंस कंपनी द्वारा उनके क्लेम वाद को कुछ त्रुटी दिखाते खारिज कर दिया गया था। तब उन्होने अयोग का दरवाजा खटखटाया था आयोग द्वारा वैगन आर कार की कीमत 4 लाख 60 हजार 961 रुपए भुगतान करने का आदेश दिया है तथा परिवार पत्र दाखिल होने की तिथि से 6% ब्याज भी अदा करने का आदेश दिया है अगर 2 माह के अंदर इंश्योरेंस कंपनी द्वारा भुगतान नहीं किया जाता है तो ब्याज दर की राशि 9% हो जाएगी साथ ही मानसिक क्षति हेतु 18 हजार तथा बाद खर्च हेतू 3 हजार रुपए अदा करने का भी आदेश दिया है।

वही एक दूसरे मामले के परिवार पत्र संख्या 104/ 15 जिसे एकमा थाना के कोहड़ागढ़ निवासी हैदर अली द्वारा 9 अक्टूबर 2015 को दाखिल किया गया था। जिसमें उन्होंने सहायक महाप्रबंधक इलाहाबाद बैंक शाखा प्रबंधक इलाहाबाद बैंक माझी सोनाली ऑटो प्राइवेट लिमिटेड छपरा को विपक्षी बनाया था उन्होंने अपने परिवार पत्र में बतलाया था कि 17 अक्टूबर 2014 को उन्होंने एक ट्रैक्टर खरीदा था जो एक्सीडेंट हो गया क्लेम दाखिल किया था जिसे कंपनी द्वारा खारिज कर दिया गया था आयोग ने उनके परिवाद के सुनवाई के पश्चात मोगलिक 3 लाख एवं आर्थिक क्षति हेतु 5 हजार अदा करने का आदेश दिया है।

जो महिलायें अपनी शक्ति को पहचान लेती है, सफलता उनकी कदम चूमती हैं : एसडीएम

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय ।फेस ऑफ फ्यूचर इंडिया द्वारा सारण पुलिस व सखी वन स्टॉप सेंटर सारण के सहयोग से जय प्रकाश महिला कॉलेज छपरा के सभागार हॉल में बेटियों व महिलाओं को सशक्तिकरण हेतु "मिशन आदिशक्ति" कार्यक्रम का छपरा सदर एसडीएम संजय कुमार राय, सखी वन स्टॉप सेंटर छपरा की केंद्र प्रशासक मधुबाला, जेपीएम कॉलेज छपरा के प्राचार्या मंजू कुमारी सिन्हा,महिला थानाध्यक्ष हेमलता, महिला हेल्पलाइन सारण के कानूनी सलाहकार उर्मिला कुमारी, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित एवं संस्था के अध्यक्ष मंटू कुमार यादव,एफ एफ आई लाडली विंग की संयोजिका रचना पर्वत ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया । मौके पर सदर एसडीएम संजय कुमार राय ने कहा कि सशक्त होने का आशय केवल घर से बाहर निकल कर नौकरी करना या पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलना भर नहीं है। सशक्त होने का आशय यहाँ पर उसके निर्णय ले सकने की क्षमता का आधार है कि वह अपने निर्णय स्वयं ले रही है या इसके लिए वह किसी और पर निर्भर है। इसी प्रकार आज आर्थिक रूप से सशक्त होने उसके लिए बहुत आवश्यक है ।तत्पश्चात स्कूली बच्चियों को महिला सशक्तिकरण से संबंधित जैसे घरेलू हिंसा,महिला स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, नारी शिक्षा, बाल विवाह ,महिला सुरक्षा ,दहेज प्रथा ,साइबर सुरक्षा ,सेनेटरी नैपकिन का उपयोग आदि पर सखी वन स्टॉप छपरा के केन्द्र प्रशासक प्रबंधक मधुबाला एवं टीम के सदस्यों द्वारा विस्तार से चर्चा की गई एवं उनकी समस्याओं के समाधान के लिए उपायों को बताया गया ।

उन्होंने बताया कि महिला स्वास्थ्य एवं घरेलू हिंसा पर प्रकाश डाला व महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं महिलाओं को कैसे सशक्त किया जा सकता है आदि विषय पर विस्तार पूर्वक बताया, वही महिला थानाध्यक्ष हेमलता ने संबोधित करते हुए कहा कि महिलाओं एवं बेटीयों को यदि कहीं भी किसी प्रकार की समस्या होती है तो वह तुरंत भयमुक्त होकर पुलिस थाने में या महिला हेल्पलाइन में अपनी शिकायत दर्ज कराएं ।

रचना पर्वत ने लड़कियां अपनी आत्मरक्षा कैसे करें उसके बारे में बताया गया,नैपकिन के उपयोग एवं उसके फायदे के बारे में बताया गया तथा समाज में पीरियड्स से संबंधित लड़कियों एवं महिलाओं के मन में हुई भ्रांतियों को दूर किया गया , वहीं हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष रेखा श्रीवास्तव व नीतू सिंह ने दहेज प्रथा, साइबर क्राइम के दुष्प्रभाव को बताया, बाल विवाह रोकने तथा नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपील की। तत्पश्चात कानूनी सलाहकार उर्मिला ने तमाम समस्याओं के कानूनी समाधान के बारे में बताया । वहीं संस्था अध्यक्ष मन्टु कुमार यादव ने कहा कि सिर्फ शहरों में ही नहीं गांव में भी आज महिलाएं सशक्त हो रही है जो बताता है कि हमारा देश बदल रहा है हम एक नए भारत की तरफ कदम बढ़ा चुके हैं। इस अवसर पर फेस ऑफ फ्यूचर इंडिया के सदस्यों में मकेसर पंडित, ओमप्रकाश आजाद, देव कुमार,पूजा कुमारी एवं महाविद्यालय के तमाम शिक्षिकाएं व छात्राएं उपस्थित थीं।

हत्या एवं हरिजन एक्ट मामले में दो को आजीवन कारावास एवं अर्थदंड

छपरा विशेष न्यायाधीश अनुसूचित जाति एवं जनजाति सह अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश रघुवंश नारायण ने भेल्डी थाना कांड संख्या 218/18 के सत्र वाद संख्या संख्या 12/19 में इसी थाना क्षेत्र के मानपुर निवासी राम अवध साहनी एवं उसके पुत्र मनोज साहनी को अंदर दफा 302 /34 में आजीवन कारावास एवं 10 हजार अर्थ दंड की सजा सुनाई है तथा हरिजन एक्ट की धारा 3(2)(ई) एससी एसटी अधिनियम के अंतर्गत भी आजीवन कारावास एवं 10000 अर्थदंड की सजा सुनाई है ।अभियोजन की ओर से विशेष लोग अभियोजक चंद्रमा प्रसाद साह ने सरकार का पक्ष न्यायालय में रखा और कुल 6 गवाहों की गवाही न्यायालय में कार्रवाई। बताते चले कि इस सत्रवाद के एक आरोपी फरार चल रहे हैं जिनकी जमानत कोर्ट ने खारिज कर दिया है और उसके जमादार से जमानत की राशि वह वसूलने के आदेश दिया है ।विदित हो की भेल्डी थाना के मानूपुर निवासी थाना कांड के सूचक ब्रह्मदेव शर्मा ने छपरा सदर अस्पताल में अपना फर्द बयान दर्ज कराया था जिसमें बतलाया था कि वह अपने मोपेड मोटरसाइकिल से कटसा बाजार से घर आ रहे थे कि रास्ते में अरना मैदान के पास उन्हीं के गांव के मनोज साहनी उनके भाई राजेश सहनी और पिता राम अवध साहनी उनको रोक दिए और गाली गलौज करने लगे गाली गलौज मना करने पर लोहा के रड और लाठी से उनको पीट कर गंभीर रूप से जख्मी कर दिए।

आरा में एक दिन पूर्व हुए विवाद को लेकर सगे भाइयों की पिटाई

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के बड़हरा थाना क्षेत्र के फरना गांव में मंगलवार की सुबह एक दिन पूर्व हुए विवाद को लेकर सगे भाइयों की जमकर पिटाई कर दी गई। इससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। उसके बाद उनका इलाज आरा सदर अस्पताल में कराया गया। जानकारी के अनुसार जख्मियों में बड़हरा थाना क्षेत्र के फरना गांव निवासी शांति किशोर मल्होत्रा का 34 वर्षीय पुत्र गुड्डू माली एवं 18 वर्षीय पुत्र पंचानंद मल्होत्रा शामिल है। जबकि दूसरी और मारपीट एवं गाली-गलौज करने का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में साफ तौर से देखा जा रहा है कि दोनों पक्ष के लोग अपने हाथो में लाठी-डंडे लिए हुए है और एक दूसरे को गाली-गलौज करते हुए मारने की कोशिश की जा रही है। इधर गुड्डू माली ने बताया कि गांव के ही कुछ लोगों द्वारा उनके खेत में रोज शाम में बैठकर नशीले पदार्थ का सेवन किया जाता है। सोमवार की शाम उसने इसका विरोध किया तथा उनलोगों को गाली-गलौज भी किया गया था। हालांकि सोमवार के शाम बात खत्म हो गई थी। मंगलवार की सुबह जब वह अपने बच्चों को ऑटो से स्कूल छोड़ने के लिए जा रहे थे। जाने के क्रम में जैसे ही उसकी ऑटो उनके घर के पास पहुंची तो उक्त लोगों ने उन्हें ऑटो से खींचकर बाहर निकाला और उसे पीटने लगे। जब उसका बेटा मोबाइल से उक्त लोगो का वीडियो बना रहा था तो उनके द्वारा मोबाइल छीन लिया गया और उसे पटक कर तोड़ दिया गया। जिसके बाद उसका बेटा फौरन घर गया और उसके छोटे भाई को कहा कि चाचा पापा को लोग मर रहे हैं। जिसके बाद उसका छोटा भाई वहां पहुंचा तो उन लोगों द्वारा पिटाई कर दी गई। जिससे दोनों गंभीर रूप से जख्मी हो गए। इसके बाद उनका इलाज आरा सदर अस्पताल में कराया गया। वहीं दूसरी ओर जख्मी गुड्डू माली ने गांव के ही उक्त लोगों पर दोनों भाइयों को मार कर जख्मी करने का आरोप लगाया है। हालांकि पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

भोजपुर में मामूली विवाद को लेकर पति ने की पत्नी की पिटाई

जख्मी महिला का आरा सदर अस्पताल में कराया जा रहा है इलाज

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के संदेश थाना क्षेत्र के संदेश गांव में सोमवार की शाम मामूली विवाद को लेकर पति ने अपनी पत्नी की जमकर पिटाई कर दी। इससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गई। इसके बाद परिजन द्वारा उसे इलाज के लिए संदेश रेफरल अस्पताल से आरा सदर अस्पताल लाया गया जहां उसका इलाज कराया जा रहा है। जानकारी के अनुसार जख्मी महिला संदेश थाना क्षेत्र के संदेश गांव वार्ड नंबर 10 निवासी युसूफ मियां की 22 वर्षीया पत्नी सायरा खातून है। इधर सायरा खातून ने बताया कि वह गांव के ही युसूफ मियां से पांच पहले प्रेम करती थी। जिसके बाद दोनों परिवार के रजामंदी से वर्ष 2020 के फरवरी माह में लेनदेन के साथ दोनों की शादी कर दी गई। उसका पति युसूफ मियां गुजरात में रहकर प्राइवेट कंपनी में काम करता है। वह चार दिन पूर्व ही वापस गांव लौटा है। सोमवार की शाम जब वह अपने पति से आधार कार्ड मांगने लगी तो उसने देने से मना कर दिया। इसी बात को लेकर दोनों के बीच कहासुनी हुई। जिसके बाद उसने उसे कमरे में ले जाकर व उसका मुंह दबाकर उसकी जमकर पिटाई कर दी। जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गई। इसके बाद उसे इलाज के लिए संदेश रेफरल अस्पताल से आरा सदर अस्पताल लाया गया। वहीं दूसरी ओर जख्मी महिला सायरा खातून ने अपने पति युसूफ मियां पर आधार कार्ड मांगने पर उसकी जमकर पिटाई करने एवं अपने पति पर अन्य महिला से बात करने का आरोप लगाया है। हालांकि पुलिस अपने स्तर से मामले की छानबीन कर रही है।

दीपावली एवं छठ के अवसर पर कई स्पेशल ट्रेनों का किया जा रहा परिचालन

पटना। दीपावली एवं छठ के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर उनकी सुविधा हेतु रेलवे द्वारा कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है । इसी क्रम में दिल्ली से जयनगर एवं सीतामढ़ी, साबरमती से दानापुर, डॉ. अम्बेडकर नगर (इंदौर) से पटना तथा अहमदाबाद से समस्तीपुर एवं गोमतीनगर से मालतीपाटपुर (भुवनेश्वर) के लिए स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जायेगा। गाड़ी सं. 04006/04005 दिल्ली-जयनगर-दिल्ली फेस्टिवल स्पेशल (मुरादाबाद-लखनऊ- गोरखपुर-हाजीपुर-दरभंगा के रास्ते) - गाड़ी संख्या गाड़ी सं. 04006 दिल्ली-जयनगर फेस्टिवल स्पेशल 09, 12 एवं 15 नवंबर को दिल्ली से 23.05 बजे खुलकर अगले दिन 23.45 बजे जयनगर पहुंचेगी । वापसी में, गाड़ी संख्या गाड़ी सं. 04005 जयनगर-दिल्ली फेस्टिवल स्पेशल 11, 14 एवं 17 नवंबर को जयनगर से 01.30 बजे खुलकर अगले दिन 01.00 बजे दिल्ली पहुंचेगी । इस स्पेशल में शयनयान श्रेणी के 10 एवं साधारण श्रेणी के 08 कोच होंगे । गाड़ी सं. 04004/04003 नई दिल्ली-सीतामढ़ी-नई दिल्ली अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल (मुरादाबाद-गोरखपुर-नरकटियागंज के रास्ते) - गाड़ी संख्या 04004 नई दिल्ली-सीतामढ़ी अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल 11, 14 एवं 17 नवंबर को नई दिल्ली से 00.10 बजे खुलकर उसी दिन 23.30 बजे सीतामढ़ी पहुंचेगी । वापसी में, गाड़ी संख्या 04003 सीतामढ़ी-नई दिल्ली अनारक्षित फेस्टिवल स्पेशल 12, 15 एवं 18 नवंबर को सीतामढ़ी से 02.00 बजे खुलकर अगले दिन 01.30 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी । इस स्पेशल में साधारण श्रेणी के 20 कोच होंगे। गाड़ी सं. 09403/09404 साबरमती-दानापुर-साबरमती सुपरफास्ट स्पेशल (अजमेर-जयपुर- आगरा फोर्ट-कानपुर-प्रयागराज-डीडीयू के रास्ते) - गाड़ी संख्या 09403 साबरमती-दानापुर सुपरफास्ट स्पेशल (साप्ताहिक) दिनांक 12, 19 एवं 26 नवंबर रविवार को साबरमती से 08.15 बजे खुलकर सोमवार को 14.15 बजे दानापुर पहुंचेगी । वापसी में, गाड़ी संख्या 09404 दानापुर-साबरमती सुपरफास्ट स्पेशल (साप्ताहिक) दिनांक 13, 20 एवं 27नवंबर सोमवार को दानापुर से 18.00 बजे खुलकर मंगलवार को 23.30 बजे साबरमती पहुंचेगी । इस स्पेशल में वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी के 02, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 06, शयनयान श्रेणी के 08 एवं साधारण श्रेणी के 04 कोच होंगे । गाड़ी सं. 09343/09344 डॉ. अम्बेडकर नगर-पटना-डॉ.अम्बेडकर नगर स्पेशल इंदौर-उज्जैन-बीना-सतना-प्रयागराज छिवकी-डीडीयू के रास्ते) - गाड़ी संख्या 09343 डॉ. अम्बेडकर नगर-पटना स्पेशल साप्ताहिक 09, 16, 23 एवं 30 नवंबर गुरूवार को डॉ. अम्बेडकर नगर से 18.30 बजे खुलकर शुक्रवार को 18.30 बजे पटना पहुंचेगी । वापसी में, गाड़ी संख्या 09344 पटना-डॉ. अम्बेडकर नगर स्पेशल साप्ताहिक 10, 17 एवं 24 नवंबर तथा 01 नवंबर को पटना से 21.30 बजे खुलकर शनिवार को 23.55 बजे डॉ. अम्बेडकर नगर पहुंचेगी । इस स्पेशल में वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी के 02, वातानुकूलित तृतीय श्रेणी के 06, शयनयान श्रेणी के 08 एवं साधारण श्रेणी के 03 कोच होंगे । गाड़ी सं. 09413/09414 अहमदाबाद-समस्तीपुर-अहमदाबाद स्पेशल (भुसावल-जबलपुर- सतना-प्रयागराज छिवकी-डीडीयू-पटना-बरौनी के रास्ते) - गाड़ी संख्या 09413 अहमदाबाद-समस्तीपुर स्पेशल (साप्ताहिक) दिनांक 09, 16, 23 एवं 30 नवंबर गुरूवार को अहमदाबाद से 15.30 बजे खुलकर शुक्रवार को 22.25 बजे पटना रुकते हुए शनिवार को 04.00 बजे समस्तीपुर पहुंचेगी ।

आरा में स्नातक पार्ट वन की आंतरिक परीक्षा न होने पर छात्राओं एवं परिजनों ने किया हंगामा व सड़क जाम

हंगामा के दौरान छात्राओं ने महिला प्रोफेसर की कार को भी किया क्षतिग्रस्त

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शहर के टाउन थाना क्षेत्र के एमएम महिला कॉलेज में मंगलवार की सुबह स्नातक पार्ट वन की आंतरिक परीक्षा समय से न होने पर एमएम महिला कॉलेज की छात्राओं एवं उनके परिजनों ने सड़क जाम कर जमकर हंगामा किया। सड़क जाम के दौरान छात्राओं द्वारा कार्यरत हिंदी की महिला प्रोफेसर की कर को भी बुरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया गया। जिसके कारण कॉलेज एवं आसपास की इलाके में काफी देर तक अफरा-तफरी मची रही।

सड़क जाम होने के कारण सड़क के दोनों और वाहनों की लंबी कतारे लगी रही एवं करीब दो घंटे तक आवागमन पूरी तरह ठप रहा। वही सड़क जाम की सूचना पाकर टाउन थानाध्यक्ष संजीव कुमार अपने पुलिस बल के साथ वहां पहुंचे और छात्राओ एंव परिजनो से मामले की पूरी जानकारी ली। वहीं छात्राएं कॉलेज द्वारा स्नातक पार्ट वन की आंतरिक परीक्षा होने की तिथि सोमवार से तय की थी। इसके बाद जिला एवं अंतर जिला से सभी छात्राएं अपने परिजनों के साथ दो दिन से लगातार आ रही है। लेकिन परीक्षा नहीं लिया गया और ना ही उसके बारे में किसी प्रकार की कोई जानकारी दी गई। पुलिस के काफी समझाने-बुझाने एवं एमएम महिला कॉलेज की प्राचार्य द्वारा त्योहार के बाद परीक्षा लेने का आश्वासन देने पर जाम को हटाया गया। इधर बिहिया गांव निवासी सह एमएम महिला कॉलेज की स्नातक पार्ट वन की छात्रा खुशबू गुप्ता ने बताया की सत्र 2023-2027 के स्नातक पार्ट वन की आंतरिक परीक्षा कॉलेज द्वारा सोमवार से लेने की नोटिस जारी किया गया था तथा समय सुबह सात बजे का दिया गया है। जिसको लेकर हम सभी छात्राएं सोमवार को भी सुबह सात बजे आए थे। लेकिन परीक्षा नहीं हुआ और ना ही हमलोगों को इसके संबंधित किसी प्रकार की जानकारी दी गई। मंगलवार को उनका हिन्दी का परीक्षा होने वाला पर परीक्षा नहीं लिया गया।

परीक्षा नहीं होने के कारण सभी छात्राओं का आक्रोश भड़क उठा इसके बाद छात्राओं द्वारा आज सड़क जाम कर जमकर हंगामा किया गया। उसके बाद कॉलेज की प्राचार्य द्वारा हमलोगों का परीक्षा कब लिया जाएगा। इसकी नोटिस शाम पांच बजे तक जारी करने का आश्वासन दिया गया है। वही पटना निवासी सह एमएम महिला कॉलेज में कार्यरत हिंदी की महिला प्रोफेसर अंजू कुमारी के ड्राइवर विनोद कुमार ने बताया कि मंगलवार की सुबह जब मैं प्रोफेसर मैम को लेकर पटना से कॉलेज पहुंचा तो देखा कि कॉलेज की छात्राओं ने सड़क जाम कर रखा है। तभी उक्त छात्राएं हमारे गाड़ी के पास आ गई और मुझे खींचकर गाड़ी से बाहर निकाल दिया। लेकिन प्रोफेसर मैम गाड़ी में ही बैठी थी। इसके बाद छात्राओं द्वारा ईट से गाड़ी रोड़ेबाजी कर गाड़ी को पूरी तरह क्षतिग्रस्त कर दिया गया। हालांकि रोड़ेबाजी के दौरान किसी प्रकार की कोई हताहत नहीं हो पाई। वहीं दूसरी ओर एमएम कॉलेज की प्रोफेसर मीना देवी ने बताया कि हमारे कॉलेज में जगह की कमी है। जिसके कारण यह स्थिति हुई है और अपरा तफरी मची हुई है।

इसकी लापरवाही हमलोग मानते हैं। महाराजा कॉलेज सहित अन्य कॉलेज में स्नातक पार्ट वन की आंतरिक परीक्षा को सुबह सात से नव बजे तक लिया जा रहा है। उसी को देखते हुए हमलोगों ने भी इस समय को सेट किया था। लेकिन लड़कियों को आने में काफी तकलीफ हो रही है। जिसको देखते इस समय को सुबह नौ बजे से कर दिया जाएगा। इस दोनों दिन के परीक्षा को कैंसिल कर दिया गया है। इसके अलावा आज शाम मीटिंग कर परीक्षा के आगे की तिथि तय कर नोटिस जारी कर दिया जाएगा।

मोदी सरकार ने खोखले वादें कर देश के किसानों को छला : उमेश

पटना। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने केन्द्र की भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला है। मंगलवार को जदयू के किसान एवं सहकारिता प्रकोष्ठ की ओर से मोतिहारी के महात्मा गांधी प्रेक्षागृह में आयोजित किसान सम्मान समारोह एवं कार्यकर्ता प्रशिक्षण कार्यक्रम में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने कहा कि मौजूदा सरकार देश के किसानों का भला नहीं चाहती है। एक तरफ जहां हमारे अन्नदाता छोटे ऋण के दबाव में आए दिन आत्महत्या करने पर मजबूर हैं वहीं मोदी सरकार एक झटके में पूंजीपतियों के लाखों कर

सम्पादकीय

सड़कों पर जारी मौतें

साल 2022 में भारत में सड़क हादसों में एक लाख 68 हजार लोग मारे गए। कुल चार लाख 61 हजार हादसे हुए, जिनमें बड़ी संख्या में लोग जख्मी और विकलांग भी हुए। घायलों की संख्या 4.43 लाख रही। भारत में जानलेवा परिवहन की चर्चा अक्सर होती है, लेकिन कोई समाधान नहीं निकलता। शायद इसलिए कि समाधान निकालना किसी की प्राथमिकता में नहीं है। यह एक तरह से सड़कों पर रोजमर्रा के स्तर पर घटने वाली त्रासदियों के प्रति हमारी सामूहिक बेरहमी का संकेत है। इस त्रासदी का दायरा कितना बड़ा है, यह एक बार फिर सामने आए आधिकारिक आंकड़ों से जाहिर हुआ है। केंद्रीय सड़क यातायात मंत्रालय ने सड़क हादसों के बारे में अपनी रिपोर्ट जारी की है। इस सालाना रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में देश में सड़क हादसों में एक लाख 68 हजार लोग मारे गए। कुल हादसे चार लाख 61 हजार हुए, जिनमें बड़ी संख्या में लोग जख्मी और विकलांग भी हुए। घायलों की संख्या 4.43 लाख रही। मरने वालों में से 71.2 प्रतिशत लोग तेज गति से वाहन चलाने की वजह से हुए हादसों का शिकार बने। सबसे ज्यादा हादसों के शिकार दोपहिया वाहन चलाने वाले हुए। यह भी इस घटननाक्रम का एक पहलू है। दोपहिया वाहन अक्सर निम्न मध्य वर्ग परिवारों के परिवहन का जरिया होते हैं। नीति निर्माण से लेकर मीडिया की चर्चा और आम संवेदनाओं की प्राथमिकता में गरीब और निम्न आय वर्ग के परिवार अक्सर काफी नीचे आते हैं। एक और तथ्य गौरतलब है: 47.7 प्रतिशत हादसे और 55.1 प्रतिशत मौतें खुले इलाकों में हुईं- यानी उन क्षेत्रों में जहां मानव गतिविधि ज्यादा नहीं थी। मतलब यह कि हादसों के पीछे लापरवाही एक बड़ा कारण बनी हुई है। पिछले लगभग दो दशक इस बात को चर्चा में लाया गया कि अगर लोगों को दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों की मदद के लिए प्रोत्साहित किया जाए, तो बहुत-सी जानें बच सकती हैं। विधि आयोग की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि सड़क हादसों में मारे गए लोगों को अगर समय से अस्पताल पहुंचा दिया जाए तो उनमें से 50 प्रतिशत की जान बचाई जा सकती है। इसे संभव बनाने के उद्देश्य से 2020 में केंद्र सरकार ने नए नियम भी बनाए। लेकिन इस दिशा में वास्तव में कोई प्रगति हुई है, इसका संकेत नहीं है। कुल मिलाकर दुखद स्थिति यह है कि हमारी सड़कों का जानलेवा रूप बदल नहीं रहा है।

तेल की तलब व पश्चिम एशिया का संकट

राम पुनियानी

सात अक्टूबर 2023 को हमास द्वारा इजराइल के कुछ ठिकानों पर हमले और करीब 200 यहूदियों को बंधक बना लिए जाने के बाद से इजराइल फिलिस्तीन पर हमले कर रहा है। दोनों ही तरफ के हमलों में सबसे ज्यादा नुकसान हिंसा का शिकार होने वालों का होता है, चाहे वे सैनिक हों या नागरिक। अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस समेत कई पश्चिमी देशों ने इजराइल के साथ एकजुटता प्रदर्शित की है। यहां तक कि हमास के हमले के कुछ ही घंटों बाद, भारत ने उसका समर्थन कर दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मणिपुर के बारे में मुंह खोलने में कई महीने लगा दिए, लेकिन इजराइल के साथ हमदर्दी जताने में उन्होंने जरा भी देरी नहीं की। पूरे मामले में अपराधी बताया जाने वाला हमास (इस्लामी प्रतिरोध आन्दोलन) सन् 1987 में गठित फिलिस्तीनियों की एक सशर्स संस्था और मुख्य पार्टी है। इसके सशस्त्र विभाग का गठन 1992 में हुआ था। इस मामले में कई स्तंभकार केवल हमास को कठघरे में खड़ा कर रहे हैं और युद्ध की स्थितियां निर्मित करने के लिए उसे जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, लेकिन साथ ही यह भी स्वागतयोग्य है कि इंग्लैंड और अमरीका में इजराइल के खिलाफ कई बड़े प्रदर्शन हुए हैं, हालांकि मीडिया ने उनकी बहुत कम चर्चा की है।

कई यहूदियों ने भी पश्चिम एशिया में इजराइल की नीतियों की कड़ी आलोचना की है। जहां तक भारत का सवाल है, उसकी नीतियां इस मुद्दे पर महात्मा गांधी के विचारों पर आधारित रही हैं। गांधी जी ने 1938 में लिखा था, फिलिस्तीन उसी तरह से अरब लोगों का है, जिस तरह इंग्लैंड अंग्रेजों का और फ्रांस फ्रांसीसियों का है। उन्होंने यह भी लिखा कि ईसाइयों के हाथों यहूदियों ने प्रताडा भोगी है, मगर इसका यह मतलब नहीं कि उन्हें मुआवजा देने के लिए फिलिस्तीनियों से उनकी जमीन छीन ली जाए। यहूदी यूरोप में व्याप्त यहूदी-विरोधवाद के शिकार रहे हैं। यहूदियों के प्रति ईसाइयों के बैरभाव के कई कारणों में से एक यह है कि ऐसा माना जाता है कि ईसा मसीह को सूली पर चढ़ाये जाने के लिए यहूदी जिम्मेदार थे। आगे चलकर व्यापारिक होड़ के कारण यह बैर और बढ़ा। यहूदी-विरोधवाद का सबसे क्रूर और सबसे हिंसक पैरोकार था एडोल्फ हिटलर, जिसने लाखों यहूदियों को मौत के घाट उतार दिया था। अकेले गैस चैम्बरों में 60 लाख यहूदी मारे गए थे। यूरोप में यहूदियों को कई तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता था। इसी के नतीजे में जोयनिज्म या यहूदीवाद का जन्म हुआ। थियोडोर हट्र्सजल ने दि ज्यूइश स्टेट शीर्षक से एक पुस्तक लिखी और इस मुद्दे पर स्विट्जरलैंड में कुछ यहूदियों की बैठक हुई। ओल्ड टेस्टामेंट के हवाले से उन्होंने घोषणा की कि फिलिस्तीन की भूमि यहूदियों की है। उनका नारा था, भूमि-विहीन मानवों (यहूदियों) के लिए मानव-विहीन भूमि (फिलिस्तीन)। जाहिर है, यह नारा उस भूमि पर 1000 साल से रह रहे उन फिलिस्तीनियों के साथ बेरहमी करने का आह्वान था जो केवल मुसलमान नहीं थे। उनमें से 86 फीसदी मुसलमान, 10 फीसदी ईसाई और 4 फीसदी यहूदी थे। बहरहाल एक ज्यूइश नेशनल फण्ड स्थापित किया गया और दुनिया भर से यहूदी फिलिस्तीन आकर वहां जमीन खरीदने लगे। शुरूआत में अधिकांश यहूदी भी यहूदीवाद के खिलाफ थे। जो यहूदी फिलिस्तीन में बसे, उनसे कहा गया कि वे अपनी जमीन न तो किसी अरब को किराये पर दें और न किसी अरब को बेचें। उनका इरादा साफ था- धीरे-धीरे फिलिस्तीन पर कब्जा जमाते जाओ। यहूदियों की संख्या बढ़ती गयी, फिर एक अंतर्राष्ट्रीय समझौते के अंतर्गत फिलिस्तीन का शासन इंग्लैंड के हाथ में आ गया और वहां की आतंरिक समस्याएं बढे लगीं। सन 1917 में इंग्लैंड ने ह्यबेलफोर घोषणापत्र जारी कर फिलिस्तीन में यहूदी लोगों के लिए गृहराष्ट्र की स्थापना का समर्थन किया। इस तरह फिलिस्तीन की समस्या की जड़ में ब्रिटिश उपनिवेशवाद है। यहूदी लेखक आर्थर केस्लेर ने ह्यबेलफोर घोषणापत्र के बारे में लिखा, इससे विचित्र दस्तावेज दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा था। अमरीकी-इजराइली इतिहासवेत्ता मार्टिन क्रेमर के अनुसार, ह्ययह दस्तावेज संकीर्ण और तरह-तरह के प्रतिबंधों पर आधारित राजनैतिक यहूदीवाद की ओर पहला कदम था। अरब लोगों ने 1936 के बाद से इस घुसपैठ का प्रतिरोध करना शुरू किया, परन्तु उसे ब्रिटेन ने कुचल दिया। हिटलर द्वारा यहूदियों की प्रताडा के चलते द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद यहूदी और बड़ी संख्या में यहां बसने लगे। यह दिलचस्प है कि यूरोप के देशों और अमरीका ने यहूदियों को उनके देश में बसने के लिए कभी प्रोत्साहित नहीं किया। कुछ वक्त बाद फिलिस्तीन को दो हिस्सों में बांट दिया गया- फिलिस्तीन और इजराइल, और यह तय हुआ कि येरुशलम और बेथलेहम को अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण में रखा जाएगा।

जमीन का यह बंटवारा अरबों के हितों के खिलाफ था। लगभग 30 प्रतिशत यहूदी, जो सात प्रतिशत जमीन पर रह रहे थे, को 55 प्रतिशत जमीन दे दी गयी और फिलिस्तीनियों को केवल 45 प्रतिशत। फिलिस्तीनियों ने इस निर्णय को अल-नकबा (तबाही) कहा। इजराइल को अमरीका और ब्रिटेन का पूरा समर्थन मिला। युद्धों के जरिये वह धीरे-धीरे अपने कब्जे की जमीन का विस्तार करता गया और आज स्थिति यह है कि वह मूल फिलिस्तीन की 80 प्रतिशत से भी ज्यादा जमीन पर काबिज है। फिलिस्तीनी अपनी ही जमीन पर शरणार्थी बन गए हैं और आज 15 लाख फिलिस्तीनी सुविधा-विहीन कैम्पों में रहने पर मजबूर हैं। शुरूआती विस्थापनों में से एक में 14 लाख फिलिस्तीनियों को अपने घर-बार छोडे पड़े थे। इन्हीं विस्थापितों में से प्रतिरोध की एक नायिका लैला खालिद उभरी थीं। वे पॉपुलर फ्रंट फॉर दि लिबरेशन ऑफ पेलेस्टाइन की सदस्य थीं। प्रतिरोध के एक अन्य बड़े नायक थे- यासेर अराफात, जिन्होंने बीच का रास्ता चुना और फिलिस्तीन को वैश्विक मुद्दा बनाया। समाधान के कई प्रयास असफल हो गए जिनमें ओस्लो समझौता शामिल है। जमीन को बांटकर वहां दो देशों- फिलिस्तीन और इजराइल, की स्थापना का प्रस्ताव इजराइल को मंजूर नहीं है, बल्कि इजराइल तो एक तरह से फिलिस्तीन को मान्यता ही नहीं देता। इजराइल की एक प्रधानमंत्री गोल्डा मायर ने कहा था फिलिस्तीन जैसी कोई चीज नहीं है। इजराइल की मूल नीति यही है। इजराइल लगातार फिलिस्तीन की भूमि पर कब्जा बढ़ाता जा रहा है और इस बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) के कई प्रस्तावों को इजराइल नजरअंदाज करता आ रहा है। अमरीका इजराइल की यहूदीवादी नीतियों का खुलकर समर्थन करता रहा है और इसके बदले इजराइल पश्चिम एशिया में कच्चे तेल के संसाधनों पर कब्जा जमाने में अमरीका की मदद करता रहा है।

असुरक्षित हो गई बेटियां कब रुकेंगें अत्याचार?

आज कोई भी विश्वास के योग्य नहीं रहा है किस पर विशवास करें अपने ही हैवान बन रहे हैं। आज बाबुल की गलियां ही नरक बन गई हैं। अपने रक्षक ही भक्षक बन गए हैं बहु-बेटियां घर में ही असुरक्षित हैं समय पर ऐसे घिनौने कर्म होंतें है कि कायनात कांप उठती है कि आदमी इतने नीच काम क्यों कर रहा है। महिलाएं कही भी महफूज नहीं है। महिलाओं पर बढते अत्याचार रुकने का नाम नहीं ले रहे है। देश में प्रतिदिन घटित हो रही वारदातों से महिलाओं की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगता जा रहा है कि महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं है। इन वारदातों से हर भारतीय उद्वेलित है। सुरक्षा के दावों की पोल खुल गई है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुख्ता इतंजाम करने होगें तभी इन पर रोक लग सकती है। जघन्य व दिल दहला देने वाली दुष्कर्म की घटनाओं से जनमानस खौफजदा है। आखिर कब तक बेटियां दरिदगी का शिकार होती रहेगी। ऐसी बारदातें बहुत ही चिंतनीय हैं। बेखौफ दरिदें अराजकता फैला रहे है दरिदों की दरिदगी की वारदातें कब रुकेगी, अपराध की तारीख बदल जाती है, मगर तस्वीर नहीं बदलती। बेशक प्रतिवर्ष 8 मार्च को विश्व महिला दिवस मनाया गया। मगर ऐसे आयोजन केवल मात्र औपचारिकता भर रह गए है क्योंकि हर वर्ष एक संकल्प लिया जाता है कि महिलाओं कों अत्याचारों से मुक्ति दिलाई जाएगी अत्याचारों का खात्मा किया जाएगा सुरक्षा के लिए बड़े-बड़े दावे किए जाते है

नरेन्द्र भारती
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

देश में बेटियां हर जगह असुरक्षित महसूस कर रही हैं। बेटियों की सुरक्षा के दावे कहां है। यह एक यक्ष प्रशन है यह सुलगते प्रशन है कि बेटियां कब सुरक्षित होगी। ताजा घटनाक्रम वाराणसी में घटित हुआ है जहाँ बीएचयू परिसर कुछ गुंडों द्वारा एक लड़की के साथ अश्लील हरकते करना व और वीडियो बनाना की घटना सामने आई है' साल के 365 दिन महिलाओं पर अत्याचार होते रहते हैं। आज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक महिलाओं पर अनगिनत अत्याचार हो रहे है मगर सरकारों की कुम्भकरणी नींद नहीं टूट रही है। आज कोई भी विश्वास के योग्य नहीं रहा है किस पर विशवास करें अपने ही हैवान बन रहे हैं। आज बाबुल की गलियां ही नरक बन गई हैं। अपने रक्षक ही भक्षक बन गए हैं बहु-बेटियां घर में ही असुरक्षित हैं समय पर ऐसे घिनौने कर्म होंतें है कि कायनात कांप उठती है कि आदमी इतने नीच काम क्यों कर रहा है। महिलाएं कही भी महफूज नहीं है। महिलाओं पर बढते अत्याचार रुकने का नाम नहीं ले रहे है। देश में प्रतिदिन घटित हो रही वारदातों से महिलाओं की सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगता जा रहा है कि महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं है। इन वारदातों से हर भारतीय उद्वेलित है। सुरक्षा के दावों की पोल खुल गई है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुख्ता इतंजाम करने होगें तभी इन पर रोक लग सकती है। जघन्य व दिल दहला देने वाली दुष्कर्म की घटनाओं से जनमानस खौफजदा है। आखिर कब तक बेटियां दरिदगी का शिकार होती रहेगी। ऐसी बारदातें बहुत ही चिंतनीय हैं। बेखौफ दरिदें अराजकता फैला रहे है दरिदों की दरिदगी की वारदातें कब रुकेगी, अपराध की तारीख बदल जाती है, मगर तस्वीर नहीं बदलती। बेशक प्रतिवर्ष 8 मार्च को विश्व महिला दिवस मनाया गया। मगर ऐसे आयोजन केवल मात्र औपचारिकता भर रह गए है क्योंकि हर वर्ष एक संकल्प लिया जाता है कि महिलाओं कों अत्याचारों से मुक्ति दिलाई जाएगी अत्याचारों का खात्मा किया जाएगा सुरक्षा के लिए बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं मगर धरातल की सच्चाईयां बेहद ही खौफनाक तस्वीरें प्रस्तूत कर रही है। आधी दुनिया पर बढतें अत्याचार देंश के लिए अशुभ संकेत है। आज महिलाएं हर क्षेत्र में सफलता की बुलंदियां छुह रही हैं चांद तक अपनी काबलियत का परचम लहरा रही है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए सैंकड़ों कड़े कानून बनाए गए है मगर यह कानून सरकारी फाईलों की धूल चाट रहे है अगर सही तरीके से लागू किए होते तो इन मामलों में इजाफा नहीं होता। आज महिलाएं कहीं भी सुरक्षित नहीं है चाहे घर हो दफतर हो, बस, सड़क, गली या चैराहा हो महिलाएं हर जगह असुरक्षित ही महसूस कर रही है। है। 2019, 2020, 2021, 2022 में भी दरिंदो ने दरिन्दगी जारी रखी 'वर्ष 2023 में भी हालात सुधर नहीं रहे है। आंकड़ों के अनुसार 12 सितंबर 2018 को हरियाणा के रेवाड़ी में एक 19 साल की मेधावी छात्रा से सामूहिक दुष्कर्म कर दिया था। 27 जून 2018 को मध्यप्रदेश के मंदसौर में एक सात साल की नाबालिग स्कली बच्ची से सामूहिक दुष्कर्म की जघन्य घटना से हर भारतीय उद्वेलित हुआ था। यह बच्ची तीसरी में पढ़ती थी। मासूम से हुई दरिदगी व हैवानियत की यह घटना बहुत ही दिल दहलाने वाली थी। दरिदों ने जिस बर्बरता व हैवानियित से घटना को अंजाम दिया था उससे रौगटे खडे हो जाते है। दरिदों ने दरिदंगी की हदे पार कर दी थी। 16 दिसंबर 2012 सामूहिक दुष्कर्म करने वाले दुष्कर्म की वारदात से हर भारतीय उद्वेलित हुआ था। यह रौंगटे खड़े कर देने वाली घटना बहुत ही दुखद थी। हर रोज अस्मत लूटी जा रही है। दरिदों द्वारा हर राज्य में दरिदगी का सामाज्य बना रहे है। दरिदों की अराजकता बढ़ती ही जा रही है। जंगलराज स्थितियां बन रही है। कानून को धता बताकर दरिदें दरिदगी का तांडव कर रहे है। दरिदों को सरेआम मौत के घाट उतारना हागा ताकि आने वाले समय में दरिदे कई बार सोचेगें की उनकी करतूतो का क्या अंजाम होगा। अब समय आ गया है कि दरिदों को फांसी की सजा से ही इन मामलों पर विराम लग सकता है। वर्ष 2023 के जनवरी माह से देश के हर राज्य में इन मामलों में बेतहासा वृद्धि होती जा रही है। साल के दस माह में यह दुष्कर्म रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। सरकार को इन मामलों पर त्वरित कारवाई करनी होगी। हर रोज दरिदें दरिदगी का तमाशा कर रहे है। देश में दुष्कर्म के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे है। इससे पहले कठुआ में भी एक बच्ची के साथ दरिदगी का मामला प्रकाश में आया था। प्रतिदिन इन अपराधों में इजाफा होता जा रहा है। देश में दरिदगी की वारदातें कब रुकेगीं। गत वर्ष हिमाचल में भी गुडिया कांड हुआ था। इससे पहले देश की राजधानी दिल्ली में दिल दहला देने वाला कृत्य हुआ था जब द्वारका नार्थ इलाके में देर रात टैक्सी से घर लौट रही एक महिला से उबर जैसे रेप का मामला घटित हो गया था। यह बहुत ही घिनौना कृत्य है कि ऐसे प्रकरण थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। देश में लड़कियां कितनी महफूज है इन घटनाओं से अंदाजा लगाया जा सकता है। 26 मार्च 2017 को उतर प्रदेश के लखीमपुरीमें दो नाबालिग बहनों के साथ दुष्कर्म के बाद हत्या कर दी गई। ऐसी वारदातें खौफनाक है। रेप व हत्या की ऐसी घटनाएं दिल दहला देने वाली हैं। 26 मार्च को ही नई दिल्ली में एक युवक ने एक बच्ची को टॉफी दिलाने के बहाने दुष्कर्म किया। देश में हर रोज अबोध बच्चियों से लेकर अधेड़ उम्र की महिलाओं से दुष्कर्म कर रहे है। फांसी की सजा से ही इन मामलो पर विराम लग सकता है। बीते वर्ष 2022 में भी अत्याचारों का सिलसिला बेखौफ चलता रहा दरिदों ने अपनी दरिदगी का नंगा नाच जारी रखा। हजारों महिलाएं व नाबालिग बच्चीयां दुष्कर्मो का शिकार हुई। वर्ष 2023 के प्रथम माह जनवरी से ही महिलाओं पर अत्याचारों की शुरूआत हो चुंकी है जनवरी से लेकर अक्टूबर माह तक में देश में हजारों घटनाएं घटित हो चुकी हैं। प्रतिदिन ऐसे मामले हो रहे है और निरंतर इन मामलों में बेतहासा वृद्वि हो रही है। छेड़छाड के अलावा तेजाब व दुष्कर्म की घटनाएं भी बदस्तूर जारी है वर्ष 2019 में एक खौफनाक व दरिदगी की हदें पार करने वाला घटनाक्रम पंजाब के मोगा में हुआ था जब बदमाशों ने चलती बस में लडकी से छेड़छाड़ की और विरोध करने पर बस से फैंक दिया जिस कारण उस लड़की की मौत हो गई थी। गत वर्ष उतर प्रदेश का बंदायू एक बार फिर शर्मसार हुआ था जहां एक बार फिर दो नाबालिग चचेरी बहनों से गैगरेप का मामला प्रकाश में आया था पांच आरोपियों ने शौच को गई नाबालिगों को अगवा करके उनके साथ बदूंक की नोक पर दुष्कर्म किया था। आज बाल-विवाह हो रहे है नाबालिग लड़कियों की शादियां अधेड़ो से की जा रही है ऐसे लोगों के विरुद्व समाज को कारवाई करनी चाहिए। 16 दिसंबर 2012 को जो हादसा दिल्ली में निर्भया के साथ हुआ था उसके बाद देश में महिलाओं से होने वाले दुष्कर्मों की बाढ़ सी आ गई कि हर दिन राजधानी से लेकर शहर व गांवों में सामूहिक दुष्कर्म थमनें का नाम ही नहीं ले रहे हैं। आज हर जगह दुशासन महिलाओं की इज्जत नीलाम कर रहे हैं। विश्व गुरु कहलाने वाले भारत में महिलाओं पर जुल्मों की सूची लम्बी होती जा रही हैं। जब देश की राष्ट्रीय राजधानी ही सुरक्षित नहीं है तो महानगरों व छोटे कस्बों का क्या हाल होगा इससे अदांजा लगाया जा सकता है। देश में आज भ्रूण हत्याएं हो रही हैं नवजात शिशु झाड़ियों व कूड़ेदानों व मंदिरों में मिल रहे है जिनमें ज्यादातर शिशु लड़कियां ही होती है। आज लड़कियों से इतनी नफरत क्यों की जा रही है आदमी यह कैसे भूल रहा है कि जिसने उसे जन्म दिया वह भी एक लड़की ही थी। देश में ऐसे मामले प्रतिदिन घटित हो रहे है। नवजात व अबोध बच्चियो से दुष्कर्म हो रहे है। गत वर्ष दिल्ली में गुड़िया के साथ ऐसा ही एक दरिंदगी हुई थी जब एक किराएदार ने उसके साथ रुह कंपा देने वाला घिनौना काम किया था। दरिदें हर जगह दरिंदगी की शरणस्थली बना रहे। कुछ बीमार मानसिकता के लोगो ने भारत की छवि को दागदार किया है जनमानस को अब संकल्प लेना होगा तथा एकजुट होकर ऐसे लोगों का खात्मा करना होगा जो देश के लिए कंलक हैं। फांसी के जितने भी मामले लंबित हैं त्वरित कारवाई करके दरिदों का सर्वनाश करना चाहिए। ताकि आने वाले समय में ऐसे अमानवीय कृत्यो पर लगाम लग सके। यदि अब भी कानूनों में सख्ती न बरती तो ऐसे दरिदें फिर से इन घिनौनी वारदातों को अंजाम देते रहेगें। इसलिए अब ऐसे लोगों को समाज से बहिष्कृत करना चाहिए। केन्द्र सरकार को चाहिए कि देश के सार्वजनिक स्थलों पर हर समय सुरक्षा व्यवस्था कायम की जाए। सादी वर्दी में महिला पुलिस तैनात करनी चाहिए। सरकार को बिना समय गंवाए इन दरिदों का खात्मा करना चाहिए। ऐसे दरिदें देश के लिए घातक हैऐसे दरिदें न जाने कैसे वातावरण में रहते होगें। ऐसे लोगो को समाज की कोई फिक्र नहीं होती कि उनके कृत्यों से पूरा समाज द्रवित होता है। समाज में ऐसे लोग बहुत ही घातक सिद्व हो रहे है। ऐसी घटनाओं पर रोक के लिए

संविधान की धज्जियाँ राजनीति में धर्म का प्रवेश शीर्ष स्तर से....?

आज यह सवाल इसलिए सहज रूप से सामने आ रहा है, क्योंकि राजनीतिक दल और उसके सर्वगुण सम्पन्न नेता अभी भी भारत के मतदाताओं को धर्मभिरू ही समझ रहे है और धार्मिक अवतारों की वैतरणी थामकर अपनी चुनावी नैया पार लगाना चाहते है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी ने इसी गरज से मध्यप्रदेश में चुनाव प्रचार के दौरान भगवान राम को आदिवासियों से जोड़कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने आदिवासियों को कहकर महिमा मंडन किया कि भगवान राम को पुरूषोत्तम बनाने वाले आदिवासी ही थे, उन्होंने मध्यप्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में गौंड, बैगा, पनिका जैसा आदिवासी वोटर बहुसंख्यक मात्रा में है और ये वर्ग क्षेत्र की 47 सीटों को प्रभावित करते है, इसलिए मोदी ने यहां यह राजनीतिक खेल खेला। ये सीटें प्रारंभ से ही कांग्रेस प्रभावित रही है, इसलिए यहां राजनीति जरूरी समझी गई। यद्यपि भारतीय संविधान में स्पष्ट उल्लेख है कि राजनीतिक लाभ के लिए धर्म का सहारा लेना गैरकानूनी है, किंतु यदि राजनीति के शीर्ष पुरूष ही संविधान की परवाह न करें तो उसे क्या कहा जाए? यह तो सिर्फ मध्यप्रदेश के महाकौशल क्षेत्र की ही बात हुई, किंतु इससे भी बढ़कर पांच राज्यों के विधानसभाओं और करीब 150 दिन बाद होने वाले लोकसभा चुनावों के पूर्व अभी से अयोध्या के प्रस्तावित भव्य राम मंदिर को राजनीतिक स्वार्थ के तहत मुख्य मुद्दा बनाने की तैयारी की जा रही है

ओमप्रकाश मेहता
विख्यात अर्थशास्त्री

क्या आजादी के पचहत्तर साल बाद भी देश के नामचीन राजनीतिक दल मतदाताओं का मनोविज्ञान समझ नहीं पाए है और इसीलिए आज भी उसी पुराने ढर्रे से चुनाव जीत हासिल करना चाहते है? आज यह सवाल इसलिए सहज रूप से सामने आ रहा है, क्योंकि राजनीतिक दल और उसके सर्वगुण सम्पन्न नेता अभी भी भारत के मतदाताओं को धर्मभिरू ही समझ रहे है और धार्मिक अवतारों की वैतरणी थामकर अपनी चुनावी नैया पार लगाना चाहते है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र भाई मोदी ने इसी गरज से मध्यप्रदेश में चुनाव प्रचार के दौरान भगवान राम को आदिवासियों से जोड़कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने का प्रयास किया। उन्होंने आदिवासियों को कहकर महिमा मंडन किया कि भगवान राम को पुरूषोत्तम बनाने वाले आदिवासी ही थे, उन्होंने मध्यप्रदेश के महाकौशल क्षेत्र में गौंड, बैगा, पनिका जैसा आदिवासी वोटर बहुसंख्यक मात्रा में है और ये वर्ग क्षेत्र की 47 सीटों को प्रभावित करते है, इसलिए मोदी ने यहां यह राजनीतिक खेल खेला। ये सीटें प्रारंभ से ही कांग्रेस प्रभावित रही है, इसलिए यहां राजनीति जरूरी समझी गई।

यद्यपि भारतीय संविधान में स्पष्ट उल्लेख है कि राजनीतिक लाभ के लिए धर्म का सहारा लेना गैरकानूनी है, किंतु यदि राजनीति के शीर्ष पुरूष ही संविधान की परवाह न करें तो उसे क्या कहा जाए? यह तो सिर्फ मध्यप्रदेश के महाकौशल क्षेत्र की ही बात हुई, किंतु इससे भी बढ़कर पांच राज्यों के विधानसभाओं और करीब 150 दिन बाद होने वाले लोकसभा चुनावों के पूर्व अभी से अयोध्या के प्रस्तावित भव्य राम मंदिर को राजनीतिक स्वार्थ के तहत मुख्य मुद्दा बनाने की तैयारी की जा रही है, जिससे कि हिन्दू वोट प्रभावित हो सकें। लोकसभा चुनावों के चंद दिन पहले 22 जनवरी को अयोध्या स्थित राम मंदिर में रामलला की मूर्ति स्थापित की जानी है और मूर्ति स्थापना से पूर्व रामलला की दस करोड़ तस्वीरों के घर-घर बांटे जाने की तैयारी भाजपा कर रही है और मूर्ति स्थापना दिवस पर करीब पांच लाख लोगों की क्षमता की टेन्ट सिटी (तम्बू नगरी) वहां तैयार की जा रही है। यह भव्य समारोह आगामी लोकसभा चुनावों के बाद तक चलेगा और दुनिया भर के पांच हजार से ज्यादा कलाकार करीब एक साल तक यहां रामलीला का मंचन करेगें। इस भव्य महोत्सव को अयोध्या में त्रेतायुग की वापसी नाम दिया गया है, यहां राम जन्मोत्सव करीब 9 दिन चलेगा और पूरी दुनिया को उसके दर्शन कराए जाएगें। यह समारोह दीपावली से ही शुरू हो जाएगा, जब देश और दुनिया के ढ़ाई हजार कलाकार यहां तीन दिन रामलीला का मंचन शुरू करेगें।

इस प्रकार यदि यह कहा जाए कि विधानसभाओं और भावी लोकसभा चुनावों में सत्तारूढ़ भाजपा के प्रचार का मुख्य मुद्दा धर्म आधारित होगा तो कतई गलत नहीं होगा। इसी परिदृष्य को देखकर देश के जागरूक और बुद्धिजीवी मतदाताओं के दिल-दिमाग में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या शीर्ष राजनेता अभी भी देश के आम मतदाताओं को सत्तर साल पुराना अनजान और अशिक्षित मतदाता ही मानते है, जो धर्म के आधार पर अपनी राजनीति को चमकाना चाहते है और अपनी कुर्सी को ह्यदीर्घजीवीह्व बनाना चाहते है। जबकि आज के राजनेता वास्तव में भरोसे के संकट और वादों की ग्यारंटी के बीच की दूरी नहीं समझ पा रहे है। क्योंकि जागरूक और बुद्धिजीवी मतदाता भरोसे पर भरोसा नहीं करते, उन्हें तो ठोस तथ्यों के साथ वादे पूरे होने की ग्यारंटी चाहिए, जिसका आज सर्वत्र अभाव है। इसलिए आज की सबसे पहली जरूरत राजनेताओं द्वारा अपने संविधान पर भरोसा करने और उसके ईमानदारी पूर्ण परिपालन करने की है, न कि उसे अपनी स्वार्थ सिद्धी का माध्यम बनाने की, आखिर देश की राजनीति व उसके नेता देश और देशवासियों के बारे में कब चिंतन-मनन करेंगे? या ऐसा वक्त अब आने वाला नहीं है?

आटा ले लो आटा ,मोदी ब्रांड सस्ता आटा.....

राकेश अचल

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के बीच केंद्र सरकार ने सस्ता आटा, सस्ती दाल लांच कर एक नेक काम किया है। सरकार की ये जनकल्याणकारी योजना है क्योंकि देश में अब एक तरफ अडानी का फार्च्यून आटा आम जनता का खून पी रहा है तो दूसरी तरफ अडानी दाल। ऐसे में अडानी के कान खींचने के बजाय सरकार ने अपनी ही देशी सहकारी संस्थाओं को अडानी के मुकाबले मैदान में उतार दिया या यूं कहिये खुद मैदान में मोर्चा सम्हाल लिया। खुद प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस भारत आटे की ब्रांडिंग करने की उदारता दिखाई है। केंद्र सरकार देशभर में 27.50 रुपए प्रति किलो की कीमत पर भारत आटा उपलब्ध कराएगी। केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने 6 नवंबर को दिल्ली में आटे के वितरण वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसे 10 किग्रा और 30 किग्रा के पैक में उपलब्ध कराया जाएगा। मोदी जी देश के पहले उदार प्रधानमंत्री हैं जो चीनी पेटीएम से लेकर देशी भारत आटा बेचने तक के लिए अपनी तस्वीर के इस्तेमाल की इजाजत देते हैं। वे पांच किलो मुफ्त अन्न का थैला हो या कोरोना से बचाव के लिए लगाए गए टीके का प्रमाणपत्र सभी जगह छपने के लिए राजी हो जाते है। इतना सहज, सरल और उदार प्रधानमंत्री कम से कम मैंने तो अपने जीवन में अभी तक नहीं देखा। इस समय सचमुच जनता महगाई की मार से सिसक रही है। आर्तनाद कर रही है। बाजार पर अडानी और अम्बानी जी का कब्जा है। ये दोनों महानुभाव आटा-दाल से लेकर हर माल पर हावी हैं और इनकी चाबी सरकार के पास भी नहीं है। ऐसे में जनता को राहत देने के लिए सरकार ने मोदी ब्रांड सस्ता भारत आटा और अरहर की दाल बेचने का समानांतर इंतजाम कर सचमुच लोकल्याणकारी काम किया है। सरकार देश की 80 करोड़ आबादी को पहले से मुफ्त का राशन दे रही है। अब जो शेष 60 करोड़ लोग बचे वे मोदी ब्रांड सस्ता भारत आटा और दाल खरीदकर अपना जीवनयापन आसानी से कर सकते हैं। अपने आपको सच्चा भारतीय साबित करने कि लिए ससताभारत आटा खाने से सस्ता दूसरा क्या रास्ता हो सकता है? आपको मै इस योजना के बारे में तफ्सील से बताये देता हूँ। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक देशभर में कोई 2 हजार ठिकानों पर यह मोदी ब्रांड सस्ता आटा मिलेगा। इसे नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के साथ ही नेशनल कोऑपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया, सफल, मदर डेयरी और अन्य सहकारी संस्थानों के माध्यम से बेचा जाएगा।

देश में इस समय अलग-अलग ब्रांड का आटा 35 से 50 रुपए किलो के भाव से बिक रहा है। जिसकी जैसी हैसियत है, वो वैसा आटा खरीदता है। मैंने भी अपनी हैसियत कि मुताबिक कल ही सबसे सस्ता 35 रुपए किलो के भाव से दस किलो आटा खरीदा। पहले हम लोग पूरे साल के लिए गेंहू खरीदकर रखते थे और फिर चक्की पर जाकर गेंहूं पिसवा लाते थे। अब न गेंहू खरीदकर भंडारण की क्षमता बची है और न चक्की तक जाने का हौसला, सो मजबूरन अडानी, अम्बानी आशीर्वाद ब्रांड आटे पर निर्भर रहना पड़ता है। सरकार बताती है कि मोदी ब्रांड भारत आटा बनाने केलिए ढ़ाई लाख म

संक्षिप्त खबरें

जल-जीवन - हरियाली दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

मुजफ्फरपुर। जल-जीवन हरियाली दिवस के अवसर पर इस अभियान के प्रमुख अवयवो में से एक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के संयोजक विभाग सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के तत्वाधान में आज समाहरणालय सभागार में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें संबंधित सभी 11 विभागों के पदाधिकारी उपस्थित हुए। पटना मुख्यालय में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से संबंधित जिलों के जन सम्पर्क पदाधिकारी जुडे.। इस अ में प्रचार-प्रसार के कई माध्यमों जैसे प्रिन्ट, इलेक्ट्रोनिक, सोशल और डिजीटल मिडिया का महत्व को बताया गया। जिले में इस अभियान का पंचायत एवं गॉव स्तर तक प्रचार-प्रसार उपरोक्त माध्यमों के अतिरिक्त अन्य माध्यमों से भी किया गया है। मौके पर जिला पदाधिकारी प्रणव कुमार, उप विकास आयुक्त आशुतोष द्विवेदी, सूचना जन सम्पर्क पदाधिकारी दिनेश कुमार सहित अन्य विभागों के पदाधिकारी उपस्थित थे।

संगठन मजबूती को लेकर बैठक आयोजित

मंसूरचक, बेगूसराय। प्रखंड क्षेत्र के गणपतौल पंचायत अंतर्गत वार्ड संख्या 01 में अवकाश प्राप्त प्राचार्य राम प्रकाश महतो के आवास पर मंगलवार को अवध बनिया एकता मंच बैठक आयोजित की गई। अध्यक्षता शिवजी महतो ने की। संचालन संजीव कुमार कमान ने किया। मुख्य अतिथि डॉ. सत्यनारायण महतो ने कहा कि अवध बनिया एकता मंच के सभी सदस्यों को सक्रिय होने की जरूरत है। संगठन विस्तार पर ध्यान देने की सख्त जरूरत है। अवकाश प्राप्त प्राचार्य रामप्रकाश महतो ने आगत अतिथियों को अंगवस्त्र व माला देकर सम्मानित किया। श्री महतो ने कहा कि जल्द ही अवध बनिया एकता मंच के बैनर तले जाति के संगठन विस्तार कर चुनाव किया जाएगा। शंभू महतो ने कहा कि अवध बनिया जाति अल्पसंख्यक है। इस जाति के लोग आजादी के समय में शहीदी दे चुके हैं। मौके पर कीर्ति नारायण महतो, डॉ. नागेश्वर कुमार महतो, राम उदय महतो, सिकन्दर महतो, पवन कुमार महतो, रमेश कुमार महतो, दिलीप कुमार महतो आदि मौजूद थे।

भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए नैतिक मूल्यों के विकास को जीवन शैली में लागू करना जरूरी : ईडी

- उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन पर पुरस्कार वितरण

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। मंगलवार को बरौनी रिफाइनरी के अधिगम एवं विकास विभाग में उत्साहपूर्ण भागीदारी के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन पर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन आरके झा, कार्यपालक निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख, बरौनी रिफाइनरी ने जीआरके मूर्ती, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना), डॉ. प्रशांत राउत, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन), एसजी वेंकेटेश, मुख्य महाप्रबंधक (टीएस एवं एचएसई), मुख्य अतिथि विवेक कुमार सिंह, आईएएस, विकास आयुक्त, बिहार सरकार, विशिष्ट अतिथि श्री बाबू राम, आईपीएस, पुलिस उपमहानिरीक्षक, बेगूसराय रेंज, एन राजेश, महाप्रबंधक (सतर्कता), महाप्रबंधकगण, उपमहाप्रबंधकगण, रजनीश रंजन, कार्यकारी अध्यक्ष, बीटीएमयू, बिनोद कुमार, सचिव, आईओओए, बरौनी रिफाइनरी के वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी और अन्य हितधारकों की उपस्थिति में किया गया। बरौनी रिफाइनरी की सतर्कता टीम ने कर्मचारियों, छात्रों और बड़े पैमाने पर जनता के बीच भ्रष्टाचार का विरोध करें, राष्ट्र के प्रति समर्पित रहे विषय पर जागरूकता फैलाने के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किये।एन राजेश, महाप्रबंधक (सतर्कता) ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह के किए गए कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी साझा किए। आरके झा, कार्यपालक निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख, बरौनी रिफाइनरी ने अपना संबोधन देते हुए कहा कि भ्रष्टाचार जैसे समस्याओं से लड़ने के लिए नैतिक मूल्यों का विकास एवं इन मूल्यों को जीवन शैली में लागू करना अत्यंत आवश्यक है। इंडियनऑयल भ्रष्टाचार से लड़ने और सर्वोत्तम प्रणालियों और प्रक्रियाओं के माध्यम से हमारे कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के लिए प्रभावी निवारक उपाय अपनाता है। सतर्कता केवल सतर्कता अधिकारी की जिम्मेदारी नहीं हैं, बल्कि यह संगठन के प्रत्येक कर्मचारी की जिम्मेदारी है। उन्होने कहा कि आत्मनिर्भरता, अखंडता, नैतिकता और पारदर्शिता देश के हित में अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न प्रशासनिक तंत्र भ्रष्टाचार से लड़ने में मदद कर सकता हैं। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को आरके झा, मुख्य अतिथि विवेक कुमार सिंह, एवं विशिष्ट अतिथि बाबू राम ने संयुक्त रूप से विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2023 विशेषांक वातायन पत्रिका का विमोचन भी किया गया। इसकी जानकारी रवि भूषण कुमार वरिष्ठ प्रबन्धक (कॉपोरेट संचार), बरौनी रिफाइनरी ने दी।

बैंकों से समूह के लेनदेन और मिड डे मील का अधिकारियों ने लिया जायजा

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बिपार्ड द्वारा प्रशिक्षण के लिए आए सहायक अनुभाग पदाधिकारी के एक्सपोजर विजिट के दूसरे दिन राजकीय मध्य विद्यालय दिघड़ा और यूबीजीबी और एसबीआई भगवानपुर बैंक ब्रांच के साथ ही संगम सीएलएफ की दीदियों से रूबरू होकर जीविका और अन्य सरकारी व्यवस्थाओं की बारीकियां को जाना। बैंक में बैंक प्रबंधक द्वारा सभी प्रशिक्षण आर्थियों अधिकारियों का स्वागत करते हुए समूहों के लेनदेन में बैंकों की भूमिका के साथ ही नपा न होने पर समूह की शक्ति और रन वापसी जीविका डॉन द्वारा किस तरह से की जा रही है इसकी जानकारी दी गई और इसके बाद मध्य विद्यालय दिघड़ा में प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में सभी अधिकारियों ने बाल संसद मीना मंच मिड डे मील के साथ ही कई बच्चों और बच्चियों के गाने और गीत को भी सुना इस दौरान मिड डे मील का जायजा भी अधिकारियों ने लिया और स्कूल में शिक्षा व्यवस्था पर भी विस्तृत रूप से चर्चा की। इसके बाद सभी अधिकारी बेला स्थित दीदी की रसोई में जीविका दीदियों के हाथ से बने भोजन का स्वाद चखा और खबड़ा स्थित संगम संकुल स्तरीय संघ में जीविका दीदियों से बातचीत कर संकुल स्तरीय संघ में होने वाले क्रियाकलाप के बारे में विस्तृत जानकारी ली।इस दौरान राजकीय मध्य विद्यालय के प्राचार्य सुधाकर ठाकुर, प्रमोद कुमार, चंदन कुमार, राहुल राज, सुरेश पंडित ,कंचन कुमारी ,पूनम कुमारी प्रसाद, रेखा कुमारी, सुरक्षा गजभिये, बोर्नलि डेका, शाखा प्रबंधक खुशबू कुमारी, मुख्तार आलम, जीविका की तरफ से मसरुर अहमद, राजेश कुमार ,पूजा कुमारी, डीपीएम अनीशा, कुणाल मिश्रा, रितेश कुमार, मयंक कुमार,सोमनाथ कुमार, और संचार प्रबंधक राजीव रंजन उपस्थित थे।

बरौनी रिफाइनरी ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत किया पदयात्रा का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। बरौनी रिफाइनरी में 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में 5 नवंबर को बरौनी रिफाइनरी के टाउनशिप में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के बैनर तले एक भव्य पदयात्रा का आयोजन किया गया। आरके झा, कार्यपालक निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख, बरौनी रिफाइनरी ने जीआर के मूर्ति, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना), डॉ. प्रशांत राऊत, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन), एसजी वेंकटेश, मुख्य महाप्रबंधक (टीएस एवं एचएसई), महाप्रबंधकगण, उपमहाप्रबंधकगण, ऑफिसर एसोसिएशन के प्रतिनिधि, बीटीएमयू के प्रतिनिधि, , सीआईएसएफ के जवान, बरौनी रिफाइनरी की डीजीआर की टीम, टाउनशिप के निवासियों एवं बरौनी रिफाइनरी की अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में पदयात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किये। इस पदयात्रा में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया।

अपने संबोधन में आरके झा, कार्यपालक निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख, बरौनी रिफाइनरी ने कहा कि इतने बड़े संस्थान में इस तरह के आयोजन से समाज में सकारात्मक संदेश जाता है। हम जिस वातावरण में रहते हैं, उसमें सही संदेश का प्रभाव हमारे समाज पड़ पड़ता है। अतः हमें सदैव सही रास्ते पर चलना चाहिए ताकि और भी लोग इसका अनुसरण कर सकें। निश्चित रूप से सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अवसर पर आयोजित इस पदयात्रा का समाज पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

पूर्व मंत्री ने बढ़ते प्रदूषण पर जताई चिंता, डीएम को लिखा पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर ।शहर में बढ़ते प्रदूषण से आम लोगों का जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो गया है। बढ़ते प्रदूषण के कारण लोग बड़े पैमाने पर बीमार हो रहे हैं। शहर के सरकारी एवं निजी अस्पतालों में सांस की बीमारी से प्रभावित लोगों का बढ़ता संख्या इसका स्पष्ट प्रमाण है। जिला प्रशासन प्रदूषण रोकने के लिए यदि समय रहते ठोस कार्रवाई नहीं की तो शहर में रह रहे लोगों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। शहर में बढ़ते प्रदूषण से चिंतित राज्य के पूर्व मंत्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता अजीत कुमार ने इस बाबत मंगलवार को जिला अधिकारी को एक पत्र लिखा है, जिसमें उन्होंने शहर में प्रदूषण का बढ़ते प्रभाव पर चिंता जाहिर करते हुए इसके रोकथाम के लिए सख्त कदम उठाने की मांग की है। श्रीकुमार ने जिलाधिकारी से वैसे सभी सरकारी व गैर सरकारी एजेंसियों पर शक्ति बरतने का आग्रह किया है जिन्हें प्रदूषण नियंत्रण करने की जिम्मेदारी है। उन्होंने पत्र में लिखा है कि मुजफ्फरपुर जैसे छोटे शहर का एयर क्वालिटी इंडेक्स 2.5 होना बेहद खतरनाक है। श्री कुमार ने पत्र में आशंका जाहिर करते हुए लिखा है कि यदि इस पर नियंत्रण का प्रयास नहीं हुआ, तो आने वाले दिनों में इस शहर का प्रदूषण और अधिक बढ़ेगा तथा इसका शिकार छोटे - छोटे बच्चे भी होंगे। श्री कुमार ने जिलाधिकारी को लिखे गए पत्र का प्रती पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार एवं राज्य सरकार को भी भेजा है तथा उनसे अपने स्तर से भी प्रभावी कदम उठाने की मांग की है।

दिवाली एवं छठ पर विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। दिपावली एवं छठ पर्व के अवसर पर छठ घाटों की साफ-सफाई एवं शहर में विधि-व्यवस्था को संधारित करने के लिए आज संबंधित पदाधिकारियों के साथ बैठक की गयी। बैठक जिला पदाधिकारी प्रणव कुमार ने किया। उन्होंने पटाखों की दुकान को गहन जॉच करने का निदेश दिया। उन्होंने बताया कि बिहार के चार जिलों में पूर्णतः प्रतिबंध लगाया गया है, उनमें से एक मुजफ्फरपुर भी है। घाट पर जाने वाले मार्ग की स्थिति को दुरूस्त करने तथा इसका ड्रेसिग करने का निदेश दिया। साफ-सफाई कार्य अभी से करने का निदेश नगर निगम को दिया गया। सम्पर्क पथ एवं गलियों में भी समुचित प्रकाश व्यवस्था करने का निदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त निम्न निदेश दिये गये:- सभी घाटों का समतलीकरण करने, निर्बाध रूप से बिजली की आपूर्ति मुहैया कराने, त्योहारों के अवसर पर अग्निशामक यंत्र एवं जलापूर्ति की व्यवस्था करने, खतरनाक घाटों पर छठ पर्व मनाने पर प्रतिबंध लगाने, छठ पूजा के चिन्हित घाटों पर पानी की गहराई का आकलन करते हुए, बांस बल्ला तथा रस्सियों से बैरकेडिंग कराने आदि का निदेश संबंधित पदाधिकारियों को दिया गया।

विशाल रक्तदान शिविर सह रक्तदाता भव्य सम्मान समारोह का आयेजन किया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी अयाची नगर युवा संगठन फाउंडेशन के तत्वाधान में एक बार फिर से एक विशाल रक्तदान शिविर सह रक्तदाताक भव्य सम्मान समारोह का आयेजन राजे दुर्गा स्थान प्राँगण में किया गया। उक्त शिविर संस्था के सदस्य विकाश साहू के जन्मदिवस पर आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की शुरूआत एम एल एस कॉलेज प्रिंसिपल डॉ विजय मिश्र दरभंगा ब्लड बैंक डायरेक्टर मुकेश सिंह मधुबनी सदर ब्लड बैंक प्रभारी डॉ कुणाल कौशल अजीत मिश्र राजेन्द्र प्रसाद साह मनोज कंठ विकाश साह दीपक कुमार संस्था के संस्थापक विक्की मंडल द्वारा सामुहिक रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। शिविर में कुल 46 लोगों नेय रक्तदान किया। जिसमें 10 महिला रक्तविरांगना ने अपना रक्तदान की। सभी रक्तवीरो को आगुन्तक अतिथि विजय प्रकश धीरज लाभ विनय प्रकाश उदय कुमार झा मदन झा द्वारा मोमेंटो सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह की शुरूआत विक्की मंडल द्वारा और धन्यवादज्ञापन विकाश साह द्वारा किया गया।शिविर में खुशबू सिंह मोहर झा सुनील मंडल दीपक कुमार रंजीत कुमार सुरेश चौपाल गुड्डू गुप्ता रमन कुमार चंदन महतो सुरेश साहू रामकुमार महतो सतीश मंडल नंदू ठाकुर रमेश ठाकुर विकाश साहू मुकेश यादव शिवनारायण ठाकुर अजय कुमार चौपाल रवि रंजन राजा यादव शकलदेव यादव शिवजी साहू मोहब्बद परवेज आलम अमल कुमार झा मनीष कुमार अजीत कुमार झा अंकित मिश्रा,सुधीर ठाकुर,मिलन देवी,आरती देवी,किशुन जी साह, कविता देवी,अभिषेक कुमार,देबाशीष झा,फूलो देवी,सुमित,खुशबू,ललित यादव,कन्हैया कुमार,विजय प्रकश,मोहम्मद मोबिन,विनय कुमार पंडित आदि ने रक्तदान किया।

दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

बखरी, बेगूसराय। बखरी अनुमंडल सभागार में दीपावली, काली पूजा एवं छठ पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक की गई।बैठक की अध्यक्षता करते हुए एसडीएम सन्नी कुमार सौरव ने कहा कि तीनों पर्व को आपसी सहयोग एवं भाईचारे के साथ मनाये। किसी तरह के अफवाह पर ध्यान नहीं दे। उन्होंने कहा कि पर्व के दौरान डीजे अगर पकड़े जाते हैं तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। श्री कुमार ने छठ पूजा के दौरान बैरिकेडिंग करने, गोताखोर की तैनाती से संबंधित आवश्यक निर्देश भी दिये। वही गांव एवं शहर में साफ-सफाई करने, छठ घाटों की सफाई करने तथा प्रकाश की व्यवस्था करने का निर्देश दिया। नगर क्षेत्र के मेला कमिटी को रात्रि दस बजे तथा ग्रामीण क्षेत्रों में ग्यारह बजे के बाद लाउडस्पीकर नहीं बजाने की बात कही है। एसडीपीओ चंदन कुमार ने कहा कि मेला के दौरान हुड़दंग मचाने वाले लोग किसी भी सूरत में बक्शे नहीं जाएंगे। मेला के दरम्यान विशेष गश्ती अभियान चलाया जाएगा। इस दौरान काली पूजा एवं छठ पूजा समितियों के अध्यक्ष एवं सचिव द्वारा पूजा पंडाल एवं विसर्जन कार्यक्रम की जानकारी दी गई। साथ ही अपने-अपने विचार भी प्रकट किए हैं।एसडीपीओ ने कहा कि किसी भी सूरत में बिना अनुमंडल प्रशासन व पुलिस प्रशासन को सूचना दिए बगैर कोई कार्यक्रम आयोजित नही किए जायेंगे। सभी पूजा कमिटी को लाइसेंस लेना जरूरी है। मेला परिसर में करीब 100 वॉलिंटियर को सुरक्षा व्यवस्था में मुस्तैद रखने की बात कही है। किसी प्रकार के उपद्रव या फिर मारपीट की सूचना मिलने पर तुरंत कार्यक्रम को रद्द कर दिया जाएगा। साथ ही मेला कमिटी के सदस्यों पर कार्यवाई की जाएगी।मौके पर डीसीएलआर किशन कुमार, बखरी सीओ शिवेंद्र कुमार, नगर कार्यपालक पदाधिकारी जनार्दन प्रसाद वर्मा, थानाध्यक्ष सह इंस्पेक्टर विकाश कुमार राय, गढ़पुरा बीडीओ हरिमोहन प्रसाद, सीओ स्मिता कुमारी, थानाध्यक्ष मनीष कुमार नावकोठी आरओ धनश्री बाला, बखरी बिजली जेई रवि कुमार, अग्निशमन पदाधिकारी श्रवण रविदास, प्रमुख शिवचंद्र पासवान, जिला परिषद सदस्य घनश्याम राय, सपा जिलाध्यक्ष दिलीप केशरी, उपप्रमुख प्रतिनिधि बलराम सिंह कुशवाहा, मनोरंजन वर्मा,अली राज, पूर्व पंसस पंकज पासवान, कांग्रेस के कमलेश कंचन, व्यापार संघ के मनोज चौधरी, जदयू नेता सुनील चौधरी सहित सभी काली पूजा समिति सदस्य व जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

बरौनी रिफाइनरी में सतर्कता जागरूकता सप्ताह पर कवि गोष्ठी का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। बरौनी रिफाइनरी में 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। इसी कड़ी में 4 नवंबर को बरौनी रिफाइनरी के ऑफिसर क्लब में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के बैनर तले भव्य कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कवि गोष्ठी में कविता पाठ के लिए प्रसिद्ध लेखक, कवि और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कवि नीलोत्पल मृणाल को आमंत्रित किया गया था। इसके अलावे उनका साथ देने के लिए प्रसिद्ध कवि अशांत भोला एवं प्रफुल मिश्रा को भी आमंत्रित किया गया था। अपनी मनमोहक रचनाओं से इन कवियों ने दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। आरके झा, कार्यपालक निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख, बरौनी रिफाइनरी ने सत्य प्रकाश, कार्यपालक निदेशक (तकनीकी), कैलाश पति, कार्यपालक निदेशक (परियोजना-आरएचक्यू), सुनील कुमार सिन्हा, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना-आरएचक्यू), जीआर के मूर्ति, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना), डॉ. प्रशांत राऊत, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन), एसजी वेंकटेश, मुख्य महाप्रबंधक (टीएस एवं एचएसई), महाप्रबंधकगण, उपमहाप्रबंधकगण, ऑफिसर एसोसिएसन के प्रतिनिधि, बीटीएमयू के प्रतिनिधि, टाउनशिप के निवासियों एवं बरौनी रिफाइनरी की अन्य अधिकारियों की उपस्थिति में दीप प्रज्वलित कर कवि गोष्ठी का उद्घाटन किया गया। इस कवि गोष्ठी को देखने व सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। आर के झा, कार्यपालक निदेशक एवं रिफाइनरी प्रमुख, बरौनी रिफाइनरी ने कहा कि किसी देश की संस्कृति और सभ्यता को जानने के लिए वहां के साहित्य का सम्पूर्ण रुप से अध्ययन आवश्यक होता है। साहित्य, देश, जाति, व्यक्ति के विकास का स्रोत है। जिसे काव्य धारा द्वारा जीवंत किया जा सकता है। कविगण कविताओं एवं अन्य माध्यम से जहां एक ओर आनंद की हिलोरें मन मस्तिष्क में पहुँचाते हैं, वहीं कविताएं मानव को कुछ क्षणों के लिए तनाव मुक्त करती हैं। क्योंकि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में हर मानव कहीं न कहीं तनावग्रस्त दिखता है और यही हमारी जीवन शैली बनती जा रही है। हास-परिहास प्रसन्नता की एक सरल और सहज अभिव्यक्ति है। जिसे बड़ी आसानी से समाज के हर तबके के लोग समझ सकते हैं। इसकी जानकारी रवि भूषण कुमार वरिष्ठ प्रबन्धक (कॉपोरेट संचार), बरौनी रिफाइनरी ने दी है।

जिलाधिकारी ने कहा व्यापक जनसहभागिता से ही जल जीवन हरियाली अभियान सफल होगा

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी सूचना एवं जनसंपर्क विभाग मधुबनी के तत्वाधान में जल जीवन हरियाली दिवस पर समाहरणालय सभागार में जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में परिचर्चा आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन जिलाधिकारी डीडीसी अपर समाहर्ता ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित करके किया। सर्वप्रथम जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने जल जीवन हरियाली एवं पर्यावरण संरक्षण को लेकर उपस्थित सभी अधिकारियों को 11 संकल्प भी दिलवाई। इसके पूर्व जिला जनसंपर्क पदाधिकारी परिमल कुमार ने जिलाधिकारी सहित सभी आगत अतिथितियो का स्वागत करते हुए बताया कि बिहार सरकार द्वारा जारी निर्देश के आलोक में जल जीवन हरियाली मिशन की सफलता को लेकर प्रत्येक महीने के प्रथम मंगलवार को अलग अलग विभागों के तत्वावधान में जल जीवन जागरूकता अभियान के विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। इस बार यह अवसर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग को प्राप्त हुआ है। कार्यक्रम के दौरान जिलाधिकारी ने उपस्थित पदाधिका रियो को निम्न 11 संकल्प दिलवाई। प्रत्येक वर्ष कम से कम एक पौधा लगाकर उसकी सुरक्षा एवं देखभाल कर वृक्ष का रूप प्रदान करूंगा। अपने आस पास के तालाब, नदी, पोखर एवं अन्य जलस्रोतों को प्रदूषित नहीं करूंगा।आवश्यकता से अधिक जल का उपयोग नहीं करूंगा करूंगी एवं इस्तेमाल के बाद नल को बंद कर दूंगा।अपने घर विद्यालय पास पड़ोस में वर्षा के जल संचयन हेतु अपने परिवार के सदस्यों को प्रेरित करूंगा।बिजली का उपयोग आवश्यकतानुसार ही करूंगा करूंगी। घर से बाहर निकलते समय बिजली के बल्बपंखा को बंद कर दूंगा।अपने घर विद्यालय एवं आस पड़ोस को स्वच्छ रखते हुए वहां से निकलने वाले कूड़े को कूड़ेदान में ही डालूंगी।प्लास्टिकपॉलीथिन का उपयोग बंद कर कपड़े कागज का उपयोग करूंगा और अन्य लोगों को उसके लिए प्रेरित करूंगा जीव जंतुओं एवं पशु पक्षियों के प्रति प्रेम भाव रखूंगा। इनके लिए यथा संभव दाना पानी की व्यवस्था करूंगा।नजदीक के कार्य पैदल अथवा साइकिल से करूंगा। कागज का अनावश्यक उपयोग नहीं करूंगा करूंगी एवं अन्य लोगों को भी इस हेतु प्रेरित करूंगा। मैं खुले में शौच नहीं कर शौचालय का उपयोग करूंगा। जिलाधिकारी ने कहा कि उक्त सभी संकल्प को सर्वप्रथम हमे अपने जीवन अनिवार्य रूप से अपनाना होगा,ताकि हम अन्य लोगो को प्रभावी रूप से इसे पालन करने हेतु प्रेरित कर सके।जिलाधिकारी ने कहा व्यापक जनसहभागिता से ही जल जीवन हरियाली अभियान सफल होगा। उन्होंने कहा कि व्यापक जनसहभागिता के लिए व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार अत्यंत जरूरी है।जिलाधिलारी ने कहा कि जल-जीवन-हरियाली अभियान को जन-जन का अभियान बनाने में मीडिया की भी अहम भूमिका है।इसके अतिरिक्त डीडीसी अपर समाहर्ता सहित सभी वक्ताओं ने परिचर्चा में अपने-अपने विचार रखे।इस अवसर पर पटना में आयोजित मुख्य समारोह का भी सीधा प्रसारण किया गया। उक्त कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त विशाल राज,अपर समाहर्ता नरेश झा एडीएम आपदा सन्तोष कुमार डीपीआरओ परिमल कुमार,जिला कृषि पदाधिकारी,जिला समन्वयक जल-जीवन-हरियाली पंकज कुमार सहित सभी विभागों के वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

रालोजद और आइसा ने राज्यपाल को कुलसचिव एवं प्रभारी कुलपति द्वारा सौपा मांग पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा राष्ट्रीय लोक जनता दल बिहार के प्रदेश उपाध्यक्ष प्रो.अभिषेक कुशवाहा, आइसा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य सह विश्वविद्यालय अध्यक्ष अरमान अली एवं आइसा विश्वविद्यालय मीडिया प्रभारी राजकिशोर राज ने सयुंक्त रूप से महामहिम राज्यपाल को बी.एन.मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा के कुलसचिव डॉ.मिहिर ठाकुर एवं प्रभारी कुलपति डॉ. राजकुमार सिंह के द्वारा मांग पत्र सौपा। जिसमे कहा गया है कि बी. एन.मंडल विश्वविद्यालय परिसर में 20 दिन से अनिश्चितकालीन हड़ताल चल रहा है जिसके कारण मूल प्रमाण पत्र, माइग्रेशन प्रमाण पत्र सहित छात्र हित के कई मुद्दों का निष्पादन नहीं हो पा रहा है। ज्ञात हो कि बीपीएससी द्वारा दूसरी नई शिक्षक बहाली बिहार सरकार द्वारा निकल चुकी है। अगर ससमय 86 कर्मचारियों का हड़ताल खत्म नहीं होती है तो सभी शिक्षक अभ्यर्थी, छात्र छात्राओ का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। इस आन्दोलन से छात्र छात्राओं में काफी आक्रोश है।साथ ही बीएड सत्र 2020-2022 के 17 छात्रों का रिजल्ट माननीय हाई कोर्ट ने लंबित रखा था जिसका जजमेंट हो चुका है। हाईकोर्ट ने अभिलंब रिजल्ट देने को कहा है। विश्वविद्यालय प्रशासन इस आंदोलन के वजह से रिजल्ट प्रकाशन नहीं कर पा रही है। बीएड के लंबित छात्र छात्राओ के रिजल्ट को अविलंब प्रकाशन किया जाये जिससे सभी नई शिक्षक बहाली में शामिल हो सके। इस आंदोलन की वजह से सत्र नियमितीकरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए छात्र छात्राओ के भविष्य को देखते हुए 86 कर्मचारीयो के मांगों पर पहल करते हुए मूल राशि का भुगतान करते हुए हड़ताल को समाप्त करवाने का आग्रह किया है।

बिहार सरकार के 26.49 एकड़ भूमि को कराया अतिक्रमण मुक्त

प्रात : किरण संवाददाता

आलमनगर प्रखंड के अठगामा वासा स्थित राजकीय बीज गुणनन प्रक्षेत्र के 26.49 एकड भूमि जो आज कई दशक से अतिक्रमित था जिला कृषि पदाधिकारी ,सहित आलमनगर अंचलाधिकारी अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, प्रखंड कृषि पदाधिकारी, कृषि समन्वयक, किसान सलाहकार साथ साथ अनुमंडल पुलिस निरीक्षक, आलमनगर थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार जिला पुलिस बल की उपस्थिति में अतिक्रमण मुक्त कराया गया इस बाबत प्रखंड कृषि पदाधिकारी ने बताया कि राजकीय बीज गुणनन प्रक्षेत्र के 26 . 49 एकड़ भूमि था जिस पर स्थानीय लोगों के द्वारा आज कई वर्षों से खेती की जा रही थी जिसको लेकर कई बार विभाग के द्वरा कार्रवाई होने के साथ-साथ रोक लगाया गया था परंतु अतिक्रमण कार्यों के द्वारा बेप्रवाह होकर इस बार भी धान की फसल लगा लिया था जिसको लेकर विभागीय आदेश पर आज दंडा अधिकारी की मजबूरी में धान की फसल काटकर जमा किया गया है विभागीय आदेश आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी फिलहाल राजकीय बीज गुणनन प्रक्षेत्र के 26 .49 एकड़ पर से अतिक्रमण मुक्त कर लिया गया है वही खेती कर रहे किसानों का कहना था कि राजकीय बीज गुणनन प्रक्षेत्र पूरा का अपना मंत्र 5 एकड़ के आसपास की भूमि है सर्वे के समय 26.49 एकड़ भूमि गलती से सर्वे कर लिया गया है जिसको लेकर अदालत में मुकदमा दर्ज कराई गई है परंतु आज प्रशासन की ओर से पुलिस बल के साथ धान की फसल को काट लिया गया हम लोगों के पास क्या कहेंगे कैसे घर चलेगा इस सब की चिंता सता रही है एक मात्र सहारा था जिस पर घर चल रहा थे।

संक्षिप्त खबरें

संजय केशरी बने एनसीपी के प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता

मुंगेर सदर। एनसीपी श्रमिक प्रकोष्ठ के निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष संजय केशरी को उनके जन्मदिन के अवसर पर एनसीपी के प्रदेश अध्यक्ष मो० राहत कादरी ने पार्टी का प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता मनोनीत किया है। दो नंबर गुमटी स्थित अपने आवासीय कार्यालय में अपने जन्मदिन के अवसर पर केक काटकर प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता के रूप में अपने मनोनयन की खुशी मनाते हुए श्री केशरी ने संकल्प लिया कि मुंगेर संसदीय क्षेत्र को ललन मुक्त करना उनकी प्राथमिकता होगी। श्री केशरी ने आगे कहा कि ललन सिंह के सांसद रहते मुंगेर में ना तो मेडिकल कॉलेज स्थापित हो सकता है और ना ही विकास की कोई इबारत लिखी जा सकती है इसलिए मुंगेर के समग्र विकास के लिए मुंगेर संसदीय क्षेत्र को ललन मुक्त बनाना ही एकमात्र विकल्प है। इसके साथ-साथ राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने तथा पार्टी को बिहार की राजनीति के मुख्यधारा में लाने के लिए प्रदेश अध्यक्ष मो० राहत कादरी के हाथों को मजबूत किया जाएगा। इस अवसर पर अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

भारत स्काउट और गाइड का मना 74 वां स्थापना दिवस समारोह

छपरा। भारत स्काउट और गाइड का 74वां स्थापना दिवस समारोह स्काउट गाइड सारण के जिला कार्यालय दिल्ली प्ले स्कूल प्रभुनाथ नगर के प्रांगण में धूमधाम से मनाया गया. स्थापना दिवस समारोह के मुख्य अतिथि जिला मुख्य आयुक्त हरेन्द्र प्रसाद सिंह थे. इस कार्यक्रम में जिला मुख्यालय दल के स्काउट और गाइड शामिल हुए. कार्यक्रम का नेतृत्व स्काउट मास्टर अमन राज ने किया।विदित हो कि भारत स्काउट गाइड की स्थापना 7 नवंबर 1950 में की गई थी। जिसको लेकर आज 74 वां स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया है। समारोह में भारत स्काउट गाइड से जिला मुख्य आयुक्त हरेन्द्र प्रसाद सिंह, स्काउट मास्टर अमन राज, प्रणव, चंदन,विकाश, आशुतोष एवम युवा समाज सेवी संजीव चौधरी सही जिला मुख्यालय दल के लगभग 75 स्काउट और गाइड शामिल हुए।

रघुनीटोला-मानूपुर पथ की स्थिति हुई जर्जर

दरियापुर।स्थानीय प्रखण्ड क्षेत्र के रघुनीटोला-मानूपुर पथ की स्थिति काफी जर्जर हो चुकी है।जिससे इस रास्ते से गुजरने वाले राहगीरों को हमेशा दुर्घटना होने का भय लगा रहता है।विदित हो की उक्त पथ प्रखण्ड क्षेत्र के पश्चिमी छोर स्थित विश्वंभरपुर,फतेहपुर,ककरहट,प्रतापपुर पंचायत समेत कई अन्य गांवों के ग्रामीणों को प्रखण्ड मुख्यालय से जोड़ने के साथ ही सूबे की राजधानी जाने के लिए फोरलेन से भी जोड़ने का काम करती है।जिस कारण पूरे दिन दो पहिया और चार पहिया वाहनों का आवागमन होता है।ऐसे में कई जगहों पर काफी जर्जर होने के कारण आए दिन छोटी -बड़ी घटनाएं होती रहती है।सामाजिक कार्यकर्ता विश्वंभरपुर गिरी टोला निवासी अरुण गिरी ने बताया की रास्ता की स्थिति खराब होने के कारण कुछ साल पूर्व एक ट्रैक्टर चालक दुर्घटनाग्रस्त होकर वाहन समेत सड़क किनारे पानी भरे गड्ढे में चला गया था।जिससे चालक की मौत हो गई थी। सड़क की स्थिति जहां सबसे खराब है उस जगह पर दोनो किनारे काफी गहरा गड्ढा है जो पानी से भरा रहता है।जबकि ग्रामीणों ने बताया की इस सड़क का निर्माण वर्ष 2015 में लाखों रुपए की लागत से कराया गया था।ऐसे में ग्रामीणों ने उक्त सड़क को शीघ्र बनाने की मांग की है।

बालू से लदे दो ट्रक जब्त

मकेर। थाना क्षेत्र के एनएच 722 पर मकेर बाईपास गौरी टोला से बालू से लदा दो ट्रक को खनिज विकास पदाधिकारी ने औचक जांच के दौरान जप्त कर मकेर थाना को सौप दिया। बालू से लदा दोनों ट्रक छपरा से मुजफ़्फ़रपुर की ओर जा रहा था। जांच के दौरान दोनों ट्रक के चालक के साथ बालू पास कराने वाला दो लाइनर को भी ग्रिफ्तार किया गया। ग्रिफ्तार चालक दरभंगा जिला के फुलबुआ गावँ के कल्लू यादव के पुत्र कमलेश यादव तथा सिमिरी थाना के सिमिरी गावँ के शम्भू यादव का पुत्र सुधीर कुमार को गाड़ी के साथ पकड़ा तथा लाइनर दरभंगा जिला के फुलबुआ गावँ के रामबाबू यादव का पुत्र सुमन यादव एवं मुजफ़्फ़रपुर जिला के गायघाट थाना के शिवनंदन साहनी का पुत्र राहुल कुमार बताया जाता है।

जिला प्रशासन द्वारा जनसंवाद का किया भव्य आयोजन

प्रमंडलीय आयुक्त, जिलाधिकारी व एसएसपी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का किया शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

जगदीशपुर (भागलपुर)। जगदीशपुर प्रखंड परिक्षेत्र अंतर्गत लोकनाथ माध्यमिक विद्यालय जगदीशपुर के प्रांगण के मैदान में जिला प्रशासन द्वारा जन संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भागलपुर प्रमंडलीय आयुक्त संजय कुमार सिंह, जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन, एसएसपी आनंद कुमार, उप विकास आयुक्त, प्रखंड प्रमुख ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

इस दौरान जिला प्रशासन के तमाम विभाग के पदाधिकारीयो ने सरकार द्वारा संचालित विभिन्न महत्वकांक्षी योजनाओं की विस्तृत चर्चा के साथ साथ लाभान्वित होने के विकल्पों पर जानकारी उपस्थित हुए ग्रामीणजन को दिये, साथ ही लोगों के समस्या को भी सुना और उसके निराकरण का भरोसा दिलाया। इस अवसर पर आयुक्त ने बताया कि सरकार का उद्देश्य है कि जन संवाद के माध्यम से सरकार द्वारा चलाए गए जितनी भी महत्वकांक्षी योजनाएं हैं। उसकी जानकारी जन जन तक पहुंचाई जाए और जिस योजनाओं का लाभ आम लोगों तक नहीं पहुंच पा रही है और उनसे वंचित चल रहे हैं वैसे लोगों के बीच उसे किस प्रकार पहुंचाया जाए। ये जनसंवाद का विकल्प शेष है, जिसके जरिये आम जन के बीच अधिकारी, पदाधिकारी व कर्मचारियों की टीम योजना का लाभ किस तरह लिया जाएगा इसका फॉर्म भर के कहां दिया वैसे पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दिये जाय, इस प्रकार की जानकारी जनसंवाद के माध्यम से पहुंचा जा रहा है, साथ ही चल रहे योजनाओं के अलावा और कौन सी योजना चलाया जाय, उसपर भी मंथन किया जाय, जिससे आम जनता लाभान्वित हों सकें। इसकी भी जानकारी जनसंवाद के माध्यम से ली जा रहा है। वही जिलाधिकारी ने बताया कि जन संवाद का मुख्य उद्देश्य है कि जिला स्तर एवं प्रखंड स्तर सभी अधिकारियों को आम लोगों के बीच पहुंचना एवं आम लोगों का विकास की दिशा में सुझाव लेना है, तथा लोगों के समस्याओं का समाधान किस प्रकार होगा। उसकी जानकारी प्राप्त करना संबंधित विभाग से लोगों की समस्याओं का निदान दिलाते हुए उन्हें लाभान्वित करना है। इसके अलावा जिलाधिकारी ने बताया कि सरकार के द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं का लाभ आम जनों को मिलने में क्या कठिनाई हो रही है उसका समाधान करना उन्होंने बताया कि किसानों के हर खेत में पानी पहुंचाने के लिए सरकार ने एक बड़ी योजना बनाई है जिससे कि हर खेत तक पानी पहुंचाया जाएगा। यह काम शीघ्र ही धरातल पर उतर जाएगा। सरकार ने इसके लिए एक बहुत बड़ी राशि बजट में लाया है।

स्थानीय लोगों का मुख्य मांग था कि यहां सिंचाई की व्यवस्था के लिए चादन नदी में चेक डैम बनाया जाए। इसका जवाब देते हुए आयुक्त एवं जिलाधिकारी ने बताया कि चांदन नदी एंव खलखलिया नदी में चेक डैम बनाने के लिए डीपीआर बनाकर सरकार को भेजा गया है जिसमें की एक चेक डैम का कार्य मंगलवार से आरंभ किया जाएगा। जिसकी स्वीकृती मिल चुकी है शेष चेक डैम का कार्य भी शीघ्र ही आरंभ किया जाएगा।वहीं सोनूचक पुरैनी टोला पंचायत के महमदपुर में झील की जमीन पर अमृत सरोवर बनाया जाएगा।इस अवसर पर एसएसपी आनंद कुमार ने बताया कि सरकार द्वारा पुलिस विभाग में इमरजेंसी सेवा 112 चलाया है जो तत्काल शहरी क्षेत्र में ही उपलब्ध है, लेकिन इसका दूसरा फेज भी आरंभ हो रहा है जो ग्रामीण क्षेत्रों में यह सेवा 24 घंटे उपलब्ध रहेगी। 112 से अपराध में नियंत्रण एवं दुर्घटना में किसी भी व्यक्ति घायल होने पर उन्हें तुरंत स्वास्थ्य सेवा का लाभ मिल सके, जिससे लोगों का जान बचाई जा सकें। इसके अलावा साइबर अपराध की रोकथाम के लिए साइबर थाना भी खोला गया है जिससे लोगों को ठगी से बचाया जा सकें। इसका पूरा लाभ लोगों को मिल रहा है। वही जगदीशपुर पंचायत के पूर्व मुखिया घनश्याम मंडल गोपीनाथ मंडल, रणवीर सिंह, संजीव कुमार ने पंचायत के समस्याओं की जानकारी अधिकारियों को दिया। घनश्याम मंडल ने चंदन नदी में चेक डैम बनाने का मांग एंव कॉलेज बनाने का मांग करते हुए बताया कि चेक डैम बन जाने से यहां के किसानों को काफी सुविधा मिलेगी। यहां के किसानों द्वारा पिछले 40-50 वर्षों से इसकी मांग की जा रही है।वही सकते संत विश्वास ने कतरनी धन एवं चावल के बाजार को लेकर समस्या बताया। इस मौके पर सुनील तिवारी ने चांदन नंदी पर बनाने की बात करें जिला कृषि पदाधिकारी जिला सहकारिता पदाधिकारी जिला उद्योग पदाधिकारी जगदीशपुर के अंचलाधिकारी सह प्रभारी प्रखंड विकास अधिकारी सहित जिला के कई अधिकारी एवं प्रखंड अंचल के तमाम कर्मी मौजूद थे।

किसान की पत्नी को मारी चाकू इलाज के दौरान मौत

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। नवगछिया पुलिस जिला परिक्षेत्र के इस्माइलपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत परबत्ता भमरा इलाके में बदमाशों ने एक महिला को चाकू मारकर घायल किये जाने का मामला सामने आया है। घटना को लेकर मिली जानकारी के मुताबिक देर शाम जीरोमाइल स्थित एक प्रशिद्ध चिकित्सक के आवास से काम कर घर लौट रही इस्माइलपुर के नवटोलिया के मनोज मंडल की पत्नी शीला देवी को पूर्व से घात लगाए बदमाशों ने चाकू मार गम्भीर रूप से घायल व जख्मी कर दिया था।

जिसकी सूचना मिलते ही स्थानीय लोगों व पुलिस के सहयोग से त्वरित इलाज के लिए नवगाछिया सदर अस्पताल लेजाया गया जहां7 से चिकित्सक द्वारा हालत की गंभीरता को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए मायागंज अस्पताल भेज दिया गया था। जहां इमरजेंसी सर्जरी वार्ड में भर्ती कर इलाज किया जा रहा था, वही इलाज के दौरान उसकी देर रात अचानक हालत गंभीर हो गई जिसके कुछ समय बाद चिकित्सक द्वारा जांचोपरांत मृत घोषित कर दिया। वही घटना को लेकर स्थानीय बरारी थाना पुलिस पदाधिकारी द्वारा मृतिका के पति के फर्द बयान पर मामला दर्ज कर मृतिका के शव को पोस्टमार्टम के लिए नवलखा भेज दिया। जहां पुलिस ने पोस्टमार्टम कराने के साथ ही मृतिका के शव की अंतिम संस्कार प्रक्रिया को लेकर शव परिजनों को सौंप दिया। वही घटना के पीड़ित मृतिका के पति पेशे से किसान है, जिन्होंने घटना को लेकर बताया कि काम कर मेरी पत्नी रोजाना की तरह अपने घर लौट रही थी तभी परबत्ता भमरा के पास पूर्व से घात लगाए सोनू साह ने उसकी पत्नी को पीछे से चाकू मार दिया था। जिसकी जानकारी मिलने पर स्थानीय लोगों व पुलिस के सहयोग से इलाज मायागंज अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। वही हत्या का कारण जमीनी विवाद से जुड़ा हुआ बताया है, वही उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि सोनू साह के साथ गुड्डू साह, रूपेश साह, चौधरी साह आदि लोग भी इस घटना में संलिप्त हैं। यह लोग गांव के दबंग है और मुझे पूर्व में भी हत्या करने धमकी दे चुके हैं।

एनटीपीसी का मनाया 49वां स्थापना दिवस समारोह, किया कई कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। सुपर थर्मल पावर स्टेशन एनटीपीसी लिमिटेड कहलगाँव का 49वां स्थापना दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन परियोजना प्रमुख (कहलगाँव) नारायण प्रकाश शाहर ने प्रशासनिक भवन प्रांगण में एनटीपीसी ध्वजरोहण के साथ ही उपस्थित कर्मचारियों को स्थापना दिवस की हार्दिक बधाई दी। वही कार्यक्रम के दौरान परियोजना प्रमुख (कहलगाँव) श्री शाहर ने अपने संबोधन में कहा कि एनटीपीसी की स्थापना विगत 7 नवम्बर 1975 को राष्ट्र को निर्बाध और सुनिश्चित बिजली उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गई थी । वही आज एनटीपीसी ने विगत 49 वर्षों में अधिक सशक्त स्वरूप में विकसित हुई है तथा यह विद्युत उत्पन्न के क्षेत्र में वैश्विक रूप से बिजली उत्पाद व्यवसाय की संपूर्ण मूल्य श्रृंखला में अपनी उपस्थिति के साथ खुद को एक प्रमुख विद्युत कंपनी के रूप में स्थापित किया है। इस कार्य में जो एनटीपीसी की टीम व सदस्यों ने अपनी कार्य प्रतिबद्धता, समर्पण, विश्वास, सक्षमता और सृजनात्मकता के कारण ही संभव हो पाया है। विधुत ऊर्जा के दिशा में हमने बिजली उत्पादन के साथ-साथ पर्यावरण-हितैसी अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में प्रगति के लिए महत्वपूर्ण पहल की है, जो भविष्य में निरंतर सफलता सुनिश्चित करेगी। वही

श्री शाहर ने कहा कि कई चुनौतियों के बावजूद, एनटीपीसी के विकास की गति काफी तेजी से आगे बढ़ रही है जो मुझे और आपको आश्वस्त करने में सक्षम बनाती है कि वैश्विक और राष्ट्रीय व्यापार क्षितिज पर उभरने वाले मुद्दों के बावजूद कंपनी लगातार सफलता की ओर बढ़ती रहेगी और समृद्ध होगी। वही उन्होंने बताया कि आज एनटीपीसी लिमिटेड की कुल संस्थापित क्षमता संयुक्त उद्यम सहित 73,874, टह (मेगावॉट) के साथ विश्व की सबसे बड़ी और सर्वोत्तम विद्युत उत्पादक कंपनी बनने की ओर अग्रसर है। कंपनी ने वर्ष 2032 तक 130 गीगावॉट की स्थापित विद्युत क्षमता उत्पादन करने का लक्ष्य स्थापित किया है। वही इसके पूर्व एनटीपीसी ध्वजारोहण के साथ ही सभी एनटीपीसी कर्मियों ने नैगमिक गीत अंधकार की घोर निशा में ज्योति किरण बनकर हम छाये सुस्वर के साथ प्रस्तुत किये गए। इस दौरान एनटीपीसी के बड़ी संख्या में कर्मियों ने अपने संस्थान के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए एनटीपीसी लिमिटेड को ह्यह्यभारत की शक्ति प्रदान करने हेतु संकल्प लिया। इस अवसर पर दीप्तिनगर स्थित सार्वजनिक भवन, द्वार एवं प्लांट परिसर को पुष्प एवं रंगीन बल्बों से सजाया गया है।

इस मौके पर परियोजना प्रमुख श्री शाहर द्वारा अपने अपने कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले 20 कर्मियों को बीयूएच अचीवर व एक कर्मी को मानवीयता पुरस्कार से सम्मानित किया गया है ।

इस दौरान परियोजना प्रमुख (कहलगाँव) श्री शाहर ने एनटीपीसी कहलगाँव टीम के प्रत्येक सदस्य एवं सहयोगी एजेंसी के साथ साथ सीआईएसएफ जिला प्रशासन, अनुमंडल प्रशासन, सामाजिक संगठन, यूनियन एवं एसोशियेशन से मिले निरंतर सहयोग व योगदान की काफी सराहना की। इसी क्रम में प्रशासनिक भवन स्थित नेताजी सुभाष चन्द्र बोसे प्रेक्षागृह में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एनटीपीसी लिमिटेड के गुरदीप सिंह ने विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से सभी एनटीपीसी कर्मियों को स्थापना दिवस की बधाई दी। इस अवसर पर महाप्रबंधक (ओ&एम) अजय शर्मा, महाप्रबंधक (प्रचालन) बी राजेंद्र कुमार, महाप्रबंधक (एस डाइक मेनेजमेंट) राजेश गुप्ता, महाप्रबंधक (एफजीडी) राकेश चौहान, दीपक कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक(टीएडी) हफिजुर रहमान मलिक, महाप्रबंधक (एफएम) प्रभात रंजन बारीक, महाप्रबंधकगण (मैंटेनेंस) एन.डी. आनंद, सीनियर कमांडेंट (सीआईएसएफ) डॉ. सुष्मिता सिंह, सीएमओ (जीवन ज्योति अस्पताल), श्री सौरव शर्मा, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) सभी विभागाध्यक्षगण यूनियन एवं एसोसियेशन के प्रतिनिधिगण एवं बड़ी संख्या में एनटीपीसी कर्मी उपस्थित थे।

नए थाना अध्यक्ष रोहित कुमार सिंह ने किया पदभार ग्रहण

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। नए थानाध्यक्ष के रूप में रोहित कुमार सिंह ने पदभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण के बाद संग्रामपुर थाने के सभी पुलिसकर्मियों से औपचारिक जान-पहचान की। उसके बाद उन्होंने थाने का जायजा लिया। नए थानाध्यक्ष ने थाना क्षेत्र की जानकारी हासिल कर महत्वपूर्ण समस्याओं पर चर्चा करते हुए थाने में पदस्थापित पदाधिकारी व पुलिस बल के साथ बैठक कर विचार विमर्श कर कई दिशा निर्देश दिया। नव पदस्थापित थानाध्यक्ष श्री सिंह ने कहा कि अपराध नियंत्रण, विधि व्यवस्था, के साथ साथ थाना क्षेत्र में आपराधिक गतिविधियों पर नियंत्रण, शराब तस्करों पर शिकंजा ,शांति व्यवस्था कायम रखना व नागरिकों के बीच पुलिस की बेहतर कार्य कुशलता व छवि प्रस्तुत करना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। इस मौके पर संग्रामपुर थाना एस आई शेखर सौरभ, ब्यूटी कुमारी, सत्यम कुमार सिंह, केदार यादव, नवल यादव सहित पुलिसकर्मी एवं पुलिस के जवान आदि मौजूद थे।

तारापुर थाना में की गई शांति समिति की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। तारापुर थाना प्रांगण में दीपावली काली पूजा एवं छठ पूजा समारोह को शांतिपूर्ण एवं सद्भाव के साथ मनाए जाने को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी राकेश रंजन कुमार की अध्यक्षता में विगत सोमवार के दिन बैठक आयोजित किया गया । बैठक में मुख्य रूप से काली पूजा समिति के अध्यक्ष मेढ़पति सहित पंचायत एवं तारापुर नगर पंचायत के सभी प्रतिनिधि गण सामाजिक कार्यकर्ता मुख्य रूप से उपस्थित थे। क्षेत्र के खुदिया परसा महेशपुर सांढी. मोहनगंज एवं उल्टानाथ महादेव जैसे जगहों पर काली प्रतिमा स्थापित से लेकर विसर्जन तक एवं मेला को लेकर सभी जनप्रतिनिधियों ने सर्वप्रथम अपना अपना विचार रखा । खासकर खुदिया परसा एवं सांढी. काली में काली पूजा के दौरान पुलिस बल एवं मजिस्ट्रेट देने की बात पूजा कमेटी के लोगों द्वारा रखा गया । वहीं छठ पूजा को लेकर भी क्षेत्र के सभी

छोटे बड़े घाटों में जहां ज्यादा पानी हो वैसे छठ घाटों को चिन्हित कर बांस बल्ला से बेरिंग बेरिकेटिंग करने का भी सामूहिक रूप से निर्णय लिया गया । क्षेत्र के परसा धनपुरा फजेलीगंज एवं धोबिया पोखर स्थित श्री भगवान की स्थापित होने वाली प्रतिमा के समीप लगने वाले मेला में भी विधि व्यवस्था बनाए रखने को लेकर कई बिंदुओं पर विचार विमर्श किया गया । बैठक में धनतेरस से लेकर छठ पर्व के निस्तार दिन तक सड़क में ट्रैफिक व्यवस्था बेहतर रहे इस पर भी विशेष चर्चा की गई । डीएसपी सिंधु शेखर सिंह ने कहा कि दीपावली काली पूजा एवं छठ पूजा के मौके पर प्रशासन के साथ जनप्रतिनिधियों एवं सामाजिक कार्यकर्ता का सहयोग अपेक्षित है । तभी हम किसी भी बड़े समारोह एवं पर्व त्यौहार को शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न करा सकते हैं । खासकर दीपावली से छठ पर्व तक तारापुर खड़गपुर मुख्य सड़क में बड़ी वाहनों सहित छोटी-छोटी गाड़ियों का पार्किंग आरएस कॉलेज तारापुर से लेकर खुदिया नहर मोड के बीच कराने का भी निर्णय लिया गया जिससे जाम की स्थिति से निपटा जा सके एवं किसी भी प्रकार की अप्रिय घटना नहीं हो । वहीं थाना अध्यक्ष राजेश कुमार रंजन ने काली प्रतिमा स्थापित करने वाले सभी मेढ़पतियों को थाना से लाइसेंस लेने की अपील की । वहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं नाटक कराने के लिए भी थाना से लाइसेंस लेने की जानकारी दी गई । शहर में धमाकेदार पटाखा का कारोबार करने वाले कारोबारीयों पर भी विशेष नजर रखने को लेकर भी चचाएं की गई । बैठक में मुख्य रूप से प्रखंड विकास पदाधिकारी अंचलाधिकारी वार्ड पार्षद सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे ।

प्रधान मंत्री आवास योजना का लाभ पहुंचेगा सही लोगों तक : बैन प्रिया

प्रात : किरण संवाददाता

सौरबाजार/सहरसा- मंगलवार को नगर निगम सहरसा के दयावती लालजी महाविद्यालय बैजनाथपुर वार्ड नंबर 22 में प्रधान मंत्री आवास योजना को लेकर वार्ड कमिश्नर विपीन कुमार की अध्यक्षता में आम सभा आयोजित की गई। मौके पर मेयर बैन प्रिया भी उपस्थित हुई। वही दयावती लालजी महाविद्यालय परिवार बैजनाथपुर के द्वारा पाग और चादर सम्मानित किया गया। इस आम सभा में वार्ड के विभिन्न समस्याओ को लेकर लोगों ने अपनी-अपनी बाते रखी। कुछ लोगो ने वार्ड में जलजमाव निकासी एवं रास्ता को लेकर मेयर का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। रास्ता नहीं रहने के कारण बरसात के दिनों आवागमन के लिए समस्या उत्पन्न हो जाती है। मौके पर उपस्थित सहरसा नगर निगम के मेयर बैन प्रिया ने कहा

की सभी समस्याओं का निदान संभव है और हम जल्द से जल्द समस्या के समाधान की प्रयास करेंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ सही लोगों के हाथों तक पहुंचाया जाएगा। हर गली पक्की सड़क योजना से लाभान्वित होंगे। इस अवसर पर इंजीनियर रविराज कुमार, एमआईएस दीपक कुमार, पूर्व मुखिया चन्दकिशोर कुमार उर्फ चंदन मेहता, केडी शर्मा,शत्रुघन यादव, पुनित कुमार, विष्णुदेव यादव समेत दर्जनों लोग आम सभा में मौजूद थे।

बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम -2015 के तहत अपील की सुनवाई जिला पदाधिकारी के द्वारा की गई

छपरा कार्यालय। जिला पदाधिकारी अमन समीर के द्वारा बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम-2015 के तहत कुल 17 अपीलार्थियों के द्वारा किए गए द्वितीय अपील वाद की सुनवाई समाहरणालय परिसर अवस्थित कार्यालय कक्ष में की गई। जिला पदाधिकारी के द्वारा आज कुल 17 विभिन्न तरह के मामलों के लोक शिकायत निवारण से संबंधित मामलों की द्वितीय अपील की सुनवाई कार्यालय कक्ष में परिवादकर्ता के उपस्थिति में एवं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबंधित पदाधिकारियों के उपस्थिति में की गई। इनमें से 12 मामलों पर अंतिम रूप से आदेश पारित करते हुए शेष 05 मामलों पर संबंधित विभागों के पदाधिकारियों से प्रतिवेदन की मांग करने का आदेश जिला पदाधिकारी महोदय के द्वारा दिया गया।

विश्व संस्कृति संसद में 127 संप्रदायो के प्रमुखों समेत 1500 संत-महंत रूद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर मे जुटे

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। अखिल भारतीय संत समिती और गंगा महासभा के तत्वाधान में आयोजित इस वैश्विक सांस्कृतिक समागम संस्कृति संसद रूद्राक्ष अंतराष्ट्रीय सहयोग एवं सम्मेलन केंद्र वाराणसी मे जिले से महर्षि मेंही योगाश्रम सह रामानंद स्वामी तपोभूमि के आचार्य स्वामी देवव्रत बाबा को भी आमंत्रित किया गया था।सनातन भारत हमेशा से विश्व के लिए पथ प्रदर्शक रहा है।देश भर से 127 संप्रदायो के प्रमुखों समेत 1500 संत-महंत रूद्राक्ष कन्वेंशन सेंटर मे जुटे थे।चार दिनों में विद्वानों व धर्म मर्मज्ञों की चर्चा से निकले तथ्यों के आधार पर अखिल भारतीय संत समिति, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, गंगा महासभा,विश्व हिंदू परिषद व श्रीकाशी विद्वत परिषद ने प्रस्ताव पारित कर नौ सूत्रीय एजेंडा तय किया और सनातन हिंदू धर्मावलंवियो की राजनीतिक दलों से अपेक्षा की प्रेसवार्ता कर घोषणा की। कोई भी शक्ति किसी भी दशा मे समाज को विभाजित करने का कुचक्र न रचे,इसलिए एजेंडा घोषित किया जा रहा है।नौं सूत्री एजेंडा में

संविधान की धारा 30 में संशोधन कर सभी संप्रदायो को शैक्षिक, सांस्कृतिक संस्थान स्थापित करने का अधिकार देने,वक्फ एक्ट 1995 निरस्त कर संपत्ति का अधिकार व प्रक्रिया सभी संप्रदायों के जैसे ही धर्म विशेष को मिलने,संघीय कानून बनाकर समस्त मंदिरो को हिन्दू समाज को वापस देने,पर्यटन से अलग तीर्थाटन मंत्रालय बनाकर तीर्थो की शास्त्रीय मान्यताओं को ध्यान मे रखते हुए विकास करने, लव जिहाद और अवैध मंतातरण रोकने के लिए प्रभावी कानून बनाने,समान नागरिक संहिता लागू कर एक राष्ट्र, एक नागरिक, एक कानून लागू करने,जनजातीय समाज का कोई व्यक्ति मंतानतरित हो जाए तो उसे आरक्षण के दायरे से हटाने,अन्य मतावलंबियो की तरह मंदिर के पूजारियों को भी मानदेय देने तथा संतो को पासपोर्ट, आधार, मतदाता कार्ड आदि बनाने मे जैविक माता-पिता के नाम के वजह से दिक्कत आती है।इसलिए संत सेवा समिति बनाकर संतो की भौतिक कठिनाईयां दूर की जाए। मीडिया प्रभारी चंदन वर्मा ने बताया कि बनारस से लौटने के बाद देवव्रत बाबा का गाजे बाजे के साथ स्वागत किया गया।

दो दिवसीय स्किल डेवलपमेंट कार्यशाला में 90 लोगों को दो पाली में प्रशिक्षण आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। सैनिक चिकित्सा और सैनिक चिकित्सा चिकित्सा सह मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी सह सदस्य सचिव सदर अस्पताल मुकुल कुमार की अध्यक्षता में को कोविड सभा भवन में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजित हुई।जिसका समापन मंगलवार को समापन हुआ।इस अवसर पर सीनियर प्रोग्राम लीडर ने बताया कि इस प्रोग्राम के तहत 90 लोगों को दो पाली में प्रशिक्षित किया गया।बिहार सरकार की मिशन क्वालिटी के अंतर्गत चिकित्सा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य अस्पताल परिसर में बेहतर माहौल

बनाना, कर्मचारियों के बीच आपस में सहयोगात्मक भावना बनाए रखना, कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रशंसा करना, मरीज और स्वास्थ्य कर्मी के बीच सेवा भाव का संबंध स्थापित करना, व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन लाना, जिस कठिन कामों को आसानी से प्राप्त किया जा सके। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ सिविल सर्जन मुकुल कुमार,क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधक अविनाश कुमार, जिला सामुदायिक प्रबंधक राहुल कुमार, जिला अस्पताल प्रबंधक सिंपी कुमारी, पीरामल फाउंडेशन के सीनियर प्रोग्राम लीडर विभूति चंद्र युगल, क्षेत्रीय प्रोग्राम लीडर संदीप कुमार, प्रशिक्षक अवधेश कुमार मिश्रा, अमरेश कुमार एवं प्रोग्राम लीडर धीरज कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रशिक्षण में सदर अस्पताल के डॉक्टर नर्स पैरामेडिकल अकेडमी सफाई कर्मी एवं सुरक्षा गार्ड शामिल थे। पिरामल के गांधी फेलोज प्रियंका ठाकुर, सूरज कुमार,तरुण सेन, सौरभ काली, अनुराग सिंह, नम्रता कुमारी एवं मोहम्मद अशफाक ने कार्यशाला में सराहनीय योगदान दिया।

भारत स्काउट एंड गाइड का 73वां स्थापना दिवस धूमधाम से आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

सहरसा। जिला स्कूल के प्रांगण में अवस्थित भारत स्काउट गाइड ,कार्यालय में मंगलवार को 73 वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया ।इस अवसर पर सर्वप्रथम सर्वधर्म प्रार्थना आयोजित किया गया। तत्पश्चात बेडेन पावेल के प्रतिमा पर जिला मुख्य आयुक्त नुनुमणी सिंह द्वारा माल्यार्पण किया गया। इस अवसर पर जिला सचिव, भारत स्काउट & गाइड शंभू प्रसाद यादव,

जिला उपाध्यक्ष अरुण कुमार सिंह ,जिला स्कूल के प्राचार्य कपिल देव प्रसाद यादव, सुधा कुमारी आजीवन सदस्य तारा सिंह, उच्च माध्यमिक विद्यालय महपूरा के प्रधानाध्यापक रंजन कुमार सिंह, जिला सहायक सचिव स्काउट & गाइड ,रोशन सिंह धोनी, जिला संगठन आयुक्त भारत स्काउट & गाइड रवि रंजन कुमार एवं कई स्काउट मास्टर्स उपस्थित थे।भारत स्काउट & गाइड के सहरसा जिला सहायक सचिव रौशन सिंह धोनी ने बताया कि इस अवसर पर भारत स्काउट एंड गाइड की रैली निकालकर जिला शिक्षा पदाधिकारी कार्यक्रम पदाधिकारी स्थापना, क्षेत्रीय शिक्षा उप निदेशक कार्यालय एवं आयुक्त के सचिव के कार्यालय पहुंचकर उन्हें भारत स्काउट एंड गाइड का स्स्टीकर लगाया गया।उसके बाद रैली केंद्रीय विद्यालय के होते हुए नया बाजार अस्पताल होते हुए पुनः अपने क

संक्षिप्त खबरें

चिकत्सक के जन्मदिन पर लोगों ने दी बधाई

गया ।मगध प्रमंडल में आइबीएफ निः संतान मां को मातृत्व सुख प्रदान करने वाली महिला डा तेजस्वी नंदन के जन्मदिन पर सभी मगध प्रमंडल के महिलाओं के साथ साथ किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष राहुल रंजन और धीरज गुप्ता ने डॉ तेजस्वी नंदन को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं ।डा तेजस्वी नंदन ने अपने मेडीवर्स हास्पिटल मे डा तेजस्वी नंदन एवं डा मंजूल वीजय और सभी डा स्टाफ के साथ अपने जन्मदिन मनाई गई है ।इस अवसर पर डा तेजस्वी नंदन ने कहा कि आप सभी बढो और सभी स्टाफ,मरिजो और मगध प्रमंडल में अपने शुभचिंतकों और चाहने वालों,मेम्बर्स के आशीर्वाद से अपने नये उम्र में प्रवेश कर रही है यह सब आपके आशीर्वाद और दुआ का असर है इसे बढायुगी, जितना होगा करुगी यह कहा है ।सभी को आभार प्रकट की डा तेजस्वी नंदन ने।

वर्ष से चल रहे नाली व रास्ता का विवाद मुखिया ने किया निदानः मनोज कुमार

वंशी (अरवल) स्थानीय प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत अनुवा पंचायत स्थित कस्तूरीपुर एवं भगवतीपुर में वर्षों से चल रहे नाली रास्ता विवादित समस्या का स्थानीय मुखिया मनोज कुमार ने निदान किया, वहीं मुखिया मनोज कुमार ने बताया कि कई वर्षों से इस गांव में रास्ते और नाली के लेकर विवाद चल रहा था जिसे आम जनता का काफी परेशानी हो रही थी आने-जाने में, मुखिया ने समस्या निदान करने के बाद जेसीबी लगवा कर रास्ते को साफ कराया और उन्होंने कहा कि बहुत जल्द ही नाली का निर्माण कार्य किया जाएगा, स्थानीय ग्रामीण ने बताया कि नाली नहीं रहने के कारण पूरी सड़क कीचड़ में तब्दील रहता था जिसे आने-जाने में काफी परेशानी होती थी ,समस्या का समाधान होने पर ग्रामीण में खुशी दिखी।

पुलिस ने देसी महुआ शराब के साथ एक कारोबारी को किया गिरफ्तार

आरा ।भोजपुर जिले के चांदी थाना की पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर छापेमारी कर बाइक पर लदे देसी महुआ शराब के साथ एक शराब कारोबारी को धर दबोचा।गिरफ्तार शराब करबारी की पहचान बहीरों गांव निवासी अंबिका यादव का पुत्र पप्पू कुमार के रूप में हुई अपर थानाध्यक्ष राजविजय सिंह यादव ने बताया कि सूचना मिली कि थाना क्षेत्र के रामडीहल टोला गांव से एक शराब कारोबारी बाइक पर शराब लेकर आ रहा पुलिस ने सलेमपुर मोड़ से उसे 40 लीटर देसी महुआ शराब की गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार शराब कारोबारी के खिलाफ शराब अधिनियम के तहत प्राथमिक की दर्ज कर न्यायिक हिरासत के लिए जेल भेज दिया गया।

बीज वितरण में धांधली को लेकर किसानों ने किया हंगामा

चरपोखरी ।भोजपुर जिले के चरपोखरी प्रखंड मुख्यालय स्थित ई-किसान भवन मंगलवार को बीज वितरण के दौरान अचानक रणक्षेत्र में तब्दील हो गया। विभागीय कर्मियों और किसानों के बीच तू-तू, मैं-मैं से शुरू हो गई ।किसानों के द्वारा बताया गया कि दूसरे प्रखंडों में निर्धारित मूल्य पर ही बीज का वितरण किया जा रहा है लेकिन चरपोखरी प्रखंड के ई-किसान भवन में किसानों को 10 रुपये प्रति किलो ज्यादा मूल्य पर दिया जा रहा है इस संबंध में प्रखंड कृषि पदाधिकारी शंभू शरण से फोन के द्वारा संपर्क करने की कोशिश की गई लेकिन संपर्क नहीं हो पाया जिसकी ज्यादा जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई।

विभिन्न छठ घाटों का अधिकारियों ने लिया जायजा

चरपोखरी।लोक आस्था के महापर्व कार्तिकी छठ को लेकर अधिकारी काफी मुस्तैद है ।छठ के दौरान चरपोखरी प्रखंड अंतर्गत विभिन्न छठ घाटों पर जुटने वाली छठ व्रतियों की भीड के मद्देनजर देखते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी मोनिका कुमारी,थानाध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा,चरपोखरी राजद अध्यक्ष सत्यनारायण यादव,सियाडीह पंचायत के मुखिया लालमुक्ति पासवान के द्वारा छठ घाटों का दौरा कर भौतिक स्थिति का जायजा लिया गया ।जिसमें धनौती,नगरी,चरपोखरी,सियाडीह,बरनी सहित अन्य छठ घाटों का जायजा लेकर कई दिशा निर्देश दिया गया उस दौरान राजद के प्रधान महासचिव हरि यादव, कृष्ण मुरारी,अजय कुमार, विकास कुमार सहित कई अन्य पदाधिकारी व कर्मी मौजूद थे।

सीयूएसबी में बायोइन्फरमेटिक्स के माध्यम से औषधि खोज पर कार्यशाला

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ बिहार सीयूएसबी में ड्रग डिस्कवरी थ्रू बायोइन्फरमेटिक्स बायोइन्फरमेटिक्स के माध्यम से औषधि खोज पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला विशेषज्ञों के विचार-मंथन सत्रों के बाद संपन्न हुई है। सीयूएसबी के जन संपर्क पदाधिकारी पीआरओ ने बताया कि कार्यशाला का आयोजन बायोइन्फरमेटिक्स विभाग द्वारा किया गया था। गौरतलब हो कि सीयूएसबी के बायोइन्फरमेटिक्स विभाग ने हाल ही में डीएसटी-एफआईएसटी समर्थन अर्जित किया है, जो बिहार और कई पूर्वी राज्यों में बायोइन्फरमेटिक्स के क्षेत्र में एक अग्रणी केंद्र है।

कार्यशाला का आयोजन आणविक औषधि खोज के अग्रणी क्षेत्रों में छात्रों और युवा शोधकताओं को आवश्यक कौशल और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह के मार्गदर्शन में किया गया था। जैव सूचना विज्ञान विभाग के प्रमुख और कार्यशाला के संयोजक प्रो. आशीष शंकर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि कंप्यूटर एडेड ड्रग डिजाइन सीएडीडी जैव प्रौद्योगिकी और फार्मास्युटिकल उद्योगों में एक उभरता हुआ और सबसे अधिक मांग वाला क्षेत्र है। सीएडीडी विधियों का उद्देश्य किसी बीमारी के इलाज के लिए उचित दवा अणुओं को विकसित करने के लिए आणविक संरचनाओं और बलों के सूक्ष्म ज्ञान का उपयोग करना है। भारत में अधिक से अधिक फार्मास्युटिकल कंपनियां नई दवाओं की खोज के लिए अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों में अपने राजस्व का एक बड़ा हिस्सा निवेश कर रही हैं, जिससे इस क्षेत्र में कुशल छात्रों के लिए नौकरी की आवश्यकता तेजी से बढ़ने की उम्मीद है ।इसके अलावा विशेषज्ञों ने ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिए और व्यावहारिक सत्र आयोजित किए जिससे प्रतिभागी नवीनतम टूल और सॉफ्टवेयर से रूबरू हुए हैं। प्रो. आर. एस. राठौड़ ने अणुओं की वर्चुअल स्क्रीनिंग और दवा डिजाइन में उपयुक्त सीसा अणुओं की पहचान के लिए उद्योग में नियोजित नवीनतम तकनीकों पर व्याख्यान दिए और व्यावहारिक सत्र आयोजित किए हैं। व्याख्यान देते हुए उन्होंने इस कौशल के अत्यधिक महत्व पर प्रकाश डाला है। अनुमान है कि दुनिया में 10,000 बीमारियाँ मौजूद हैं, और एक आश्चर्यजनक विपरीत में हमने इन आधुनिक तकनीकों सामूहिक रूप से तर्कसंगत दवा डिजाइन तकनीकों के रूप में संदर्भित का उपयोग करके केवल 3000 दवाओं की खोज की है।

इसलिए इस छेत्र में अधिक से अधिक अनुसंधान की आवश्यकता है` आगे डॉ. अजय कुमार सिंह और डॉ. दुर्ग विजय सिंह ने डसॉल्ट सिस्टम्स बीआईओवीआईए डिस्कवरी स्टूडियो जैसे कई अत्याधुनिक उपकरण और सॉफ्टवेयर पर अपने प्रेजेंटेशन पेश किए गए हैं। दोपहर के सत्र में, मोलसॉफ्ट एलएलसी, पुणे और स्कूब साइंटिफिक सॉफ्टवेयर सॉल्यूशंस, नई दिल्ली के विशेषज्ञों ने दवा खोजों के लिए अपने सबसे हालिया सॉफ्टवेयर और प्रौद्योगिकियों पर सॉफ्टवेयर डेमो प्रस्तुत किया है। कार्यशाला को संकाय सदस्यों, डॉ. के.के. ओझा, डॉ. अनिल कुमार, डॉ. वी.के. सिंह, स्टाफ श्री प्रियतम और ज्ञान प्रकाश राय, मयंक कुमार, कृष्णेंदु बेरा और निहारिका सहित कई पीएचडी छात्रों के सामूहिक प्रयासों से सफल बनाया गया है। प्रो प्रधान पार्थ सारथी, डीन, एसईबीईएस ने स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित कार्यशाला आयोजित करने के लिए टीम के प्रयास को बधाई दी और सराहना की है।

डीएम गया को चैंबर ऑफ कॉमर्स चैरिटेबल ट्रस्ट ने किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

गया। विश्व प्रशिद्ध पितृपक्ष मिला महासंगम 2023 में बड़ी संख्या में आए तीर्थयात्रियों की उसकी सेवा तथा कुशल निर्देशन के लिए चेंबर ऑफ कॉमर्स चैरिटेबल ट्रस्ट गया द्वारा जिला पदाधिकारी डॉ० त्यागराजन एस एम को पुष्पगुच्छ, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र द्वारा सम्मानित किया गया है। जिला प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं सेवाओं द्वारा इस साल प्रशंसनीय प्रयास किया गया है। इस अवसर पर ट्रस्ट के चेयरमैन डा अनूप केडिया, सचिव डा कौशलेंद्र प्रताप, महासचिव आलोक नन्दन, पूर्व अध्यक्ष विपेन्द्र अग्रवाल आदि उपस्थित थे। जिला पदाधिकारी ने सभी को धन्यवाद देते हुए कहा कि जिले के सभी सामज सेवी और अधिक बढ़ चढ़ कर पितृपक्ष मेला अवधि में यात्रियों को पूरी सेवा भाव से मदद करे।

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा : सदर अस्पताल, आरा के जी.एन.एम. भवन परिसर में " राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. के.एन. सिन्हा, ए.सी.एम.ओ. और डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा एन.सी.डी.ओ. भोजपुर, प्राचार्य ए. एन. एम. स्कूल, आरा डॉ. स्नेहिल स्नेहा एवं डॉ. सुहानी भारद्वाज ने सम्मिलित रूप से किया। इस अवसर पर डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा ने बताया कि हमारे देश में कैंसर के मरीजों को बढ़ते हुए देश के केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री हर्स वर्धन द्वारा सितम्बर सन् 2014 में एक उच्च स्तरीय बैठक के उपरांत सर्वसम्मति से 7 नवंबर को देश में "राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस" मनाने की प्रक्रिया शुरू हुई, तब से हर वर्ष इस दिन को कैंसर जागरूकता के रूप में मनाया जाता है। कैंसर एक जान लेवा बिमारी है, एक बार हो गया तो समय के साथ दिन व दिन बढ़ता ही जाता है। इसका इलाज भी काफी खचीर्ला होता है और अनेकों प्रकार का शारीरिक पीड़ा दे जाता है। आयोजन का मुख्य आकर्षण था - ए.एन.एम. स्कूल की छात्राओं ने पेन्टिगं कर सभी प्रकार के कैंसर को प्रदर्शित किया और मुख्य मुख्य लक्षण, कारण एवं इलाज के संबंध में लिखा और माईक द्वारा सभी को अवगत कराया। डॉ. प्रवीण कुमार सिन्हा ने सभी प्रतिभागियों को एक-एक खूबसूरत कलम गिफ्ट स्वरूप भेंट कर सबों का हौसला अफजाई की।

छात्राओं के जोश से पूरा पंडाल उत्साहित हो गये। इस अवसर पर डॉ. सुहानी भारद्वाज एवं डॉ स्नेहिल स्नेहा ने कैंसर स्क्रीनिंग पर जोर देते हुए शुरूआती दौर में कैंसर का डायग्नोसिस कराने की सलाह दी। इस अवसर पर ए.एन.एम. की शिक्षिका श्रीमती रिन्सी ने भी कैंसर के संबंध में जानकारी साझा किया।

लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन की समीक्षा

प्रात : किरण संवाददाता

गया ।मुख्य सचिव, बिहार के अध्यक्षता में लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन की समीक्षा की गई है। जिसमें निदेश दिया गया कि ग्राम पंचायतों में ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन अंतर्गत हो रहे कचरा उठाव का उपयोगिता शुल्क 30रू०, अधिक से अधिक घरों में संग्रह करने का निदेश दिया गया है। ताकि ग्राम पंचायतों में स्वच्छता बरकरार रखा जा सके। इसके साथ हीं सभी ग्राम पंचायतों में अपशिष्ट प्रबंधन इकाई का निर्माण जल्द से जल्द करने का निदेश दिया गया है। ग्राम पंचायतों से कचरा से धन इक्ट्ठा करने हेतु गीला एवं सूखा कचरा को पृथक्करण कर उसे बेच कर राशि ग्राम पंचायत के खाते में जमा करने का निदेश दिया गया है। जिससे ग्राम पंचायतों को स्वच्छ बनाने में सहयोग मिल सके। इस बैठक में जिला पदाधिकारी, उप विकास आयुक्त, निदेशक डीआरडीए, जिला समन्वयक, जिला सलाहकार आदि उपस्थित थे।

मध्य विद्यालय अखगांव के प्रांगण में प्रोजेक्ट बेस्ट लर्निंग प्रदर्शनी का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिले के संदेश प्रखंड अंतर्गत मध्य विद्यालय अखगांव के प्रांगण में प्रोजेक्ट बेस्ट लर्निंग प्रदर्शनी का उद्घाटन भोजपुर जिला शिक्षा पदाधिकारी मोहम्मद अहसन ने दीप प्रज्वलित कर किया। भारत की नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत बच्चों को विशेष ध्यान देने की योजना बनाई गई है ताकि बच्चे कबाड़ से जुगाड करके विज्ञान विषय में जानकारी प्राप्त कर सकें।

इसी मद्देनजर आज मध्य विद्यालय अखगांव में विज्ञान शिक्षक राजेश कुमार एवं विजेन्द्र सिंह के नेतृत्व में वर्ग छः से आठ के बच्चों ने दर्जनों प्रोजेक्ट बनाकर विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया जिसमें 20 प्रतिभागियों को जिला शिक्षा पदाधिकारी मोहम्मद अहसन के द्वारा पुरस्कृत भी किया गया। जिसमें प्रथम आदित्य कुमार, सिमरन, खुशी द्वितीय विकास कुमार,भावना,अलिना एवं तृतीय समीक्षा एवं अंजली समेत 20 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। जिला शिक्षा पदाधिकारी ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा की आने वाला समय विज्ञान का युग होगा और आज हम सभी जो कल्पना करते थे की चांदा मामा दुर के लेकिन वैज्ञानिकों ने उसके पास भी चन्द्रयान को भेजकर नजदीक कर दिया। इसलिए नई शिक्षा नीति में संशोधन कर बचपन से ही विज्ञान के प्रति बच्चों को जागरूक करने की जरूरत है। इसमें बच्चों एवं शिक्षकों को ईमानदारी से कार्य करने पर भी बल दिया। मंच संचालन कुमार गौरव एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाध्यापक अरविंद कुमार सिंह ने किया ।कार्यक्रम में उपस्थित राजेश रौशन, शैलेन्द्र सिंह, जीतेन्द्र सिंह, अमृता कुमारी, प्रियंका कुमारी, चंद्रशेखर सिंह,आशिया बेगम,रजिया,प्रिया, इरशाद,गुफराना,रिहा, घनश्याम,अनुराग,शिवम,प्रमिला देवी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

नगर आयुक्त ने मानपुर घाट पर स्लैब को ठीक कराने का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

गया। बिहार के विश्व प्रसिद्ध छठ पर्व को ध्यान में रखते हुए नगर निगम आयुक्त अभिलाषा शर्मा,,गया नगर निगम द्वारा मंगलवार को गया नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न छठ घाटों का निरीक्षण किया गया है।

सिंगारा स्थान के निरीक्षण के दौरान अच्छी तरह से साफ सफाई कराने एवं पहुंच पथ के गड्ढे को स्टोन डस्ट से भरवाने का निर्देश दिया गया है ।झारखंडी घाट के निरीक्षण के क्रम में नाली की सफाई कराने ,अच्छी तरह से पहुंच पथ एवं घाट की सफाई कराने एवं किशोर प्रसाद कनीय अभियन्ता को निर्देश दिए,वही पहुंच पथ में टूटे हुए नाली स्लैब को बनवाने का निर्देश दिया गया है ।सीताकुंड के निरीक्षण के क्रम में पानी की सफाई के लिए पाच मजदूर कल से प्रतिदिन लगाने का निर्देश दिया गया है ।मानपुर दिनकर घाट के निरीक्षण के दौरान पहुंच पथ में नाली की मरम्मती, नाली स्लैब का निर्माण आवश्यक पाया गया है जिसपर किशोर कुमार कनीय अभियन्ता को नाली निर्माण, नाली कवर बनवाने तथा पार पथ का निर्माण कराने का निर्देश दिया गया है। शैलेंद्र कुमार सिन्हा, नोडल पदाधिकारी सफाई को दिनकर घाट पर कुंड का निर्माण कराने का निर्देश दिया गया है। इसके साथ ही सभी आवश्यक घाट पर कल से साफ सफाई हेतु अतिरिक्त मजदूर देने का निर्देश दिया गया है ।इस निरीक्षण में शिवनाथ ठाकुर उप नगर आयुक्त, आसिफ सेराज नगर प्रबंधक, नोडल पदाधिकारी, सफाई शैलेंद्र सिन्हा, कनीय अभियंता एवं वार्ड निरीक्षक मौजूद थे।

लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत कचरा अपशिष्ट प्रबंधन यूनिट का किया गया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

तरारी : भोजपुर जिला क्षेत्र अंतर्गत तरारी प्रखण्ड के कुरमुरी पंचायत मे लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के अपशिष्ट प्रसंस्करण का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन तरारी बीडीओ अशोक कुमार जिज्ञासु ,कुरमुरी मुखिया गौरी शंकर, तरारी मध्य जिला परिषद सदस्य गिरिश नन्दन उर्फ राकेश सिंह,मनरेगा पीओ रामानुज सिंह,चकिया मुखिया मुन्ना सिंह , भकुरा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि रामईश्वर यादव द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित व फीता काट कर उद्घाटन किया गया।

कार्यक्रम उद्घाघाटन के बाद सभी अतिथियों को अगं बस्त्र देकर सम्मानित किया गया। वही अपशिष्ट ढोने वाली इ-रिक्शा व ठेला को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य कुरमुरी पंचायत को स्वच्छ रखना है। प्रत्येक वार्ड में एक ठेला दिया गया,जिसमें 6 डब्बा,तीन सूखा और तीन गीला के लिए।

वहीं एक इ-रिक्सा जो कि सभी कचरे को समुचित जगह पर लाकर रखेगा। मौके तरारी मध्य जिला परिषद सदस्य गिरिश नन्दन उर्फ राकेश सिंह ने पंचायत के ग्रामीणों से अपील की गाँवो को स्वच्छ रखने के उदेश्य से ही सरकार ने पंचायत स्तर पर कचरा अपशिष्ट प्रबंधन का कार्य शुरू किया है जो स्थानीय लोगों के सहयोग ही सफल हो सकता है। वही मुखिया गौरी शंकर ने कहा कि हम चाहते है कि मेरा पंचायत स्वच्छ रहे। मौके पर प्रखण्ड समन्वयक कृष्णा सिंह , मुनि सिंह ,बिनोद कुमार ,पंचायत पर्यवेक्षक, सहित पंचायत के सभी कमीयी समेत हजारो ग्रामीण मौजूद थे।

भारत स्काउट और गाईड का मनाया गया स्थापना दिवस

प्रात : किरण संवाददाता

बारुण(औरंगाबाद)। बारुण प्रखंड के कृष्ण कोचिंग सेंटर में मंगलवार को भारत स्काउट और गाइड का स्थापना दिवस स्काउट प्रशिक्षक राष्ट्रपति पुरस्कार सम्मानित आचार्य मयंक शास्त्री की अध्यक्षता में मनाया गया। कार्यक्रम में स्काउट और गाइड के संस्थापक बेडेन पावेल के चित्र पर माल्यार्पण श्रद्धा सुमन अर्पित कर व सलामी देकर सभी स्काउट गाईड ने उनके योगदान को याद किया। स्काउट प्रशिक्षक आचार्य मयंक शास्त्री द्वारा स्काउट-गाइड के महत्व, बेडेन पावेल के व्यक्तित्व के बारे में बताया गया। बच्चों से कहा कि राष्ट्रप्रेम, अनुशासन व समाजसेवा जो भावना स्काउट-गाइड में देखने को मिलती है। वह काबिल- ए- तारीफ होती है। 7 नवंबर 1950 को आजादी के बाद भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री अब्दुल कलाम आजाद के अध्यक्षता में विधिवत रूप से भारत स्काउड गाइड की स्थापना की गई थी। बताया कि स्थापना दिवस पर जिला संगठन आयुक्त स्काउट श्रीनिवास कुमार के निर्देश पर बभंडी प्रशिक्षण केंद्र, दाउदनगर, गोह,हसपुरा बारुण में धूमधाम से स्थापना दिवस मनाया गया। श्रीनिवास कुमार द्वारा बताया गया कि आज के समय में स्काउटिंग की शिक्षा को अति आवश्यक है। भारतीय संस्कृति को संजोकर रखने में और विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देने में स्काउड-गाइड की भूमिका सबसे अहम है। बताया कि कार्तिक छठ देवा मेला में जिलापदाधिकारी के आदेशानुसार 400 स्काउट गाईड देव में 17 नवम्बर से 20 नवम्बर तक सुरक्षा विधि व्यवस्था बनाने में सहयोग प्रदान करेंगे।

जिला आपूर्ति शाखा की समीक्षा बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला पदाधिकारी श्रीकांत शास्त्री द्वारा समाहरणालय सभा कक्ष में जिला आपूर्ति शाखा की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। समीक्षा के क्रम में यह पाया गया कि माह अक्टूबर 2023 से प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी बारुण, मदनपुर, गो ह एवं हसपुरा द्वारा जन वितरण प्रणाली विक्रेताओं का निरीक्षण विभागीय निदेश के अनुरूप नहीं किया गया है। प्रखंड स्तर पर राशन कार्ड निर्गत करने हेतु प्राप्त ऑनलाइन आवेदन पत्र काफी संख्या में लंबित है। जिला पदाधिकारी द्वारा बैठक में उपस्थित सभी प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी को विभागीय निदेश के अनुसार उचित मूल्य की दुकानों का निरीक्षण करने एवं राशन कार्ड निर्गत करने हेतु प्राप्त आवेदन पत्रों का ससमय निस्तारण करने का निर्देश दिया गया। इस बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी विजयंत, दाउदनगर अनुमंडल पदाधिकारी मनोज कुमार, प्रभारी जिला आपूर्ति पदाधिकारी श्वेतांक लाल, वरीय उप समाहर्ता आलोक कुमार, जिला सहकारिता पदाधिकारी, जिला प्रबंधक राज्य खाद्य निगम एवं अन्य पदाधिकारी एवं कर्मी उपस्थित रहे।

मन का दीपक जब जले, जगमग जग संसार : जनार्दन जलज

प्रात : किरण संवाददाता

औरंगाबाद। राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था 'शब्दाक्षर' की औरंगाबाद जिला इकाई के तत्त्वावधान में शहर के बिराटपुर स्थित ज्ञान कुंज विद्यालय के सभागार में एक काव्य-संध्या का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता उक्त संस्था के बिहार संगठन मंत्री विनय मामूली बुद्धि तथा संचालन जिला संगठन सचिव अनिल अनिल ने किया। गोष्ठी की शुरूआत मंत्रध्वनि के साथ दीप प्रज्वलित कर की गई।

राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि प्रताप सिंह, प्रवक्ता डा रश्मि प्रियदर्शिनी एवं बिहार प्रदेश अध्यक्ष प्रो मनोज मिश्र 'पद्मनाभ' ने दूरभाष द्वारा संस्था के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना की। 'शब्दाक्षर' के कुटुंबा प्रखंड अध्यक्ष कुमार सानू मौर्य ने सरस्वती वंदना के साथ कवि-गोष्ठी की विधिवत शुरूआत की। कविता पाठ के दौरान उन्होंने कहा- 'मत हंसा कर अश्कों पर कभी किसी के, आंसू हमेशा दर्द के सबूत ना होते।' संचालन के दौरान अनिल अनल द्वारा पढ़ी गई इन पंक्तियों पर खूब तालियां बरसीं -"वारि वायु की बातें करे क्या कोई, जब प्रदूषित यहां आदमी हो गया। है सिसकती खड़ी आदमीयत कहीं, आदमी में यहां आदमी खो गया।" उपाध्यक्ष जनार्दन मिश्र जलज ने आनेवाली दीपावली पर्व पर लोगों को नसीहत देते हुए कहा- "ज्ञान ज्योति का पर्व है, हृदय करो उजियार। मन का दीपक जब जले, जगमग जग संसार।।" कवि की इस प्रस्तुति पर तालियों की गड़गड़ाहट से परिसर गूंजायमान हो गया।

नागेंद्र कुमार केसरी की प्रस्तुति- "एक नन्हा बच्चा सोया था,६ मीठे सपनों में खोया था" पर दर्शन-श्रोता भाव-विह्वल होकर आंसू पोंछते नजर आए। नवोदित शायर हिमांशु चक्रपाणि ने एक गजल प्रस्तुत करते हुए कहा -"जब किसी रोज मेरे दिल की गली तू आई, तो लगा जैसे किसी बाग से खुशबू आई।" कवि अनुज बेचैन ने-'प्रेमचंद तुम्हारी याद आती है आज भी' नामक कविता के माध्यम से प्रेमचंद की अधिकतर रचनाओं से संबंधित घटनाओं का विहगावलोकन ही करा दिया।

जिलाध्यक्ष धनंजय जयपुरी की श्रृंगार रस से ओत-प्रोत कवित्त -"द्वार खड़ी इक सुन्दर नार लगे जस मन्मथ की यह जाया, है कच रम्य कपोल सुरम्य कुचादि अनन्य व कंचन काया" ने उपस्थित जन सामान्य के मन में प्रेम रस का संचार कर दिया। अध्यक्षीय उद्बोधन में मामूली बुद्धि ने उक्त संस्था के माध्यम से लोगों को साहित्यिक गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इस गोष्ठी में उपरोक्त लोगों के अलावा और सुरेश विद्यार्थी, राहुल कुमार, अनिल कुमार सिंह, मनोज कुमार सिंह, मोहम्मद परवेज सहित लगभग दो दर्जन लोग उपस्थित थे।

जदयू कार्यकर्त्ता ने जाती अधारित गणना के लिए मुख्यमंत्री का जताया आभार

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। सर्किट हाऊस छपरा में जद(यू) जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू के अध्यक्षता में जाति आधारित गणना जैसे ऐतिहासिक कदम के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का आभार कार्यक्रम आयोजित की गई कार्यक्रता को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री मुनेश्वर चौधरी ने जाति आधारित गणना रिपोर्ट पर कहा है कि जाति आधारित गणना रिपोर्ट सार्वजनिक होने के बाद जहां सर्वप्रिय नेता माननीय नीतीश कुमार की दूरदर्शी सोच को बल मिला है वहीं भाजपाइयों में हताशा का माहौल फैला हुआ है । संकीर्ण मानसिकता की धनी भाजपा जाति आधारित गणना रिपोर्ट से इतनी विवेक शून्य हो गई है कि फिर मिथ्या वोट की राजनीति की शुरूआत कर रही है।

प्रदेश उपाध्यक्ष वैधनाथ प्रसाद सिंह विकल ने कहा की भाजपा का एक सूत्री कार्यक्रम है हिंदू-मुसलमान ' कर समाज को बांटना। किंतु अब देश की जनता जागरुक हो रही है अब लोग माननीय मुख्यमंत्री की दूरदर्शिता से प्रभावित होकर भाजपा के मकड़जाल से बाहर निकल रहे हैं नीतीश कुमार में लोगों का विश्वास बढ़ा है। जदयू जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू ने कहा की समाजवाद में सांप्रदायिकता का कोई स्थान नहीं है यहां समता मूलक समाज की स्थापना होती है । हमारे समाजवादी नेता का उद्देश्य है कि जाति आधारित गणना रिपोर्ट से प्राप्त आंकड़े के अनुसार समाज के हर वर्ग के सापेक्ष विकासात्मक एवं लोक कल्याणकारी योजना बनायी जाए ताकि समाज के हर वर्ग के लोगों के समानुपातिक लाभ मिल सके।

आनंदकीशोर सिंह ,सत्यप्रकाश यादव , बालमुकुंद चौहान,जयप्रकाश यादव ,महेश्वर चौधरी,ओमप्रकाश शर्मा,पसुपतिनाथ पटेल , मदन सिंह कुशवाहा,जावेद अब्बास पप्पू, मनोज पटेल,काजिम राजा रिजवी ,जयप्रकाश महतो,सकील सिद्दीकी,ई0 प्रभास शंकर, चांदनी सिंह ,हरेंद्र महतो, डा0 रीता भारती,बरजेश सिंह ,कुसुम देवी , कंचन कुशवाहा ,जहागिर आलम मुन्ना , भगवान दास, निर्मल कुमार,संजय राम ,विकास सिंह,संभू मांझी, सत्य नारायण सिंह , इम्तियाज परवेज,कुसुम रानी, गुड्डी जयसवाल,हरेंद्र सिंह , सम्भू सिंह , शिव नारायण सिंह पटेल, गुड्डू सिंह, अजय सिंह ,हसनैन अंसारी,सोहाग सिंह,संजीव सिंह , अजय साह , मन्नूलाल बैठा, नीतीश पटेल,ज्वाला प्रसाद, जितेंद्र कुमार सोनी,मनोज सिंह , शाबुद्दीन मंसूरी,आदि उपस्थित थे।

अग्निशमन कर्मियों ने बच्चों को आग से बचाव का दिया प्रक्षिक्षण

मांझी ।स्थानीय प्रखंड स्थित कन्या मध्य विद्यालय माँझी कंचनपुर में मंगलवार को इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी छपरा द्वारा आयोजित अग्निशमन के पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह, मुकुल राय, सुधीर कुमार, नेहा कुमारी, ज्योति कुमारी एवं अभिषेक कुमार द्वारा स्कूली बच्चों के बीच मार्क ड्रिल किया गया अग्निशमन विभाग के कर्मियों ने आग से सुरक्षा को लेकर जागरूकता अभियान चलाया स्कूली बच्चों को आग से बचाव के विभिन्न उपाय का प्रदर्शन मार्क ड्रिल के माध्यम से किया गया अग्निशमन दस्ता के सदस्यों ने सिलेंडर से निकले गैस में लगी आग पर नियंत्रण पाने के लिए पानी से भीगे हुए कपड़े को गैस सिलेंडर पर लगाकर आग बूझकर दिखाए एवं विभिन्न प्रकार के एक्टिविटी कर आग पर कैसे काबू पाया जा सके इसकी जानकारी बच्चों को दी अग्निशमन कर्मियों ने बताया कि आपदा से निपटने के लिए हर व्यक्ति में जागरुकता जरूरी है हम जागरूकता फैला कर आग से होने वाले नुकसान को कम कर सकते हैं इस सम्बंध में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव जीनत मसीह ने बताया कि खासकर दीपावली के त्योहार मौके आग से बचाव की जानकारी हरेक लोगों में होनी चाहिए आज अग्निशमन विभाग के कर्मियों ने दिये जलाने पटाखे जलाने की भी जानकारी बच्चों को दी।

एक टीचर जो ट्यूशन पढ़ाते-पढ़ाते बन गया अरबपति, खड़ी कर दी अरबों डॉलर की कंपनी

▶▶ 25,000 स्टूडेंट्स को स्टेडियम में मैथ्य पढ़ाते थे बायजू रवींद्रन ▶▶ कोचिंग पढ़ाने के लिए हर हफ्ते 9 शहरों की यात्रा करते थे रवींद्रन

रवींद्रन के 2 बार आईआईएम के एंट्रेंस में आए 100 पर्सेंटाइल

नईदिल्ली, एजेंसी। केरल के कन्नूर जिले में अझीकोड नाम से एक छोटा सा गांव है। गांव भले ही छोटा सा है, लेकिन इस गांव को आज केरल में सब लोग जानते हैं। कारण है बायजू रवींद्रन। वे इसी गांव के हैं। रवींद्रन की शुरुआती एजुकेशन इसी गांव में मलयालम मीडियम स्कूल से हुई थी। इसी स्कूल में रवींद्रन के पेरेंट्स टीचर थे। रवींद्रन पढ़ाई में शुरू से ही आगे थे। साथ ही स्पोर्ट्स में भी उनकी बहुत रुचि थी। उस समय कोई सपने में भी नहीं सोच सकता था कि रविंद्रन एक दिन अरबों डॉलर की कंपनी का मालिक बनेगा। पढ़ाई पूरी हुई तो वे यूके की एक शिपिंग कंपनी में इंजीनियर बन गए।

बायजू मैथ्स में बहुत अच्छे थे। छुट्टियों में रविंद्रन जब भारत आए, तो उन्होंने अपने कुछ दोस्तों की आईआईएम के एंट्रेंस एग्जाम की तैयारी में मदद की। बायजू को लगा कि उन्हें भी आइआइएम देना चाहिए। उन्होंने एंट्रेंस दिया। रिजल्ट आया तो पता चला कि उन्हें

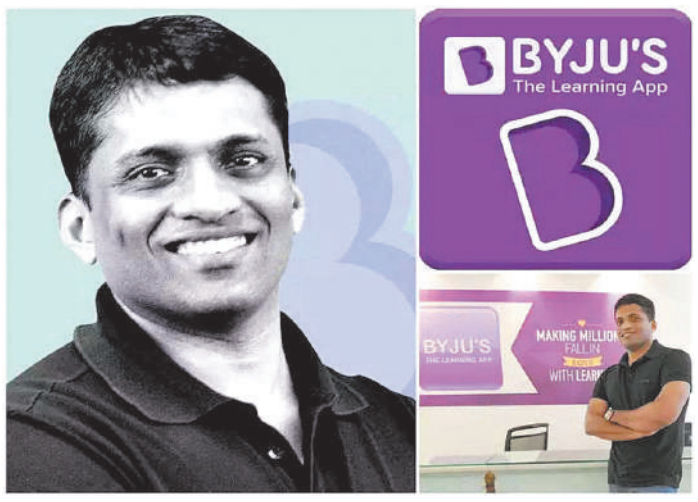

100 पर्सेंटाइल मिले थे। बायजू को लगा कि यह शायद कोई संयोग होगा। उन्होंने फिर से आईआईएम का एंट्रेंस टेस्ट दिया और फिर से उनका स्कोर 100 पर्सेंटाइल था। अब उन्होंने आईआईएम जॉइन करने के बजाय कोचिंग क्लास शुरू करने का फैसला किया।

हर हफ्ते करते थे 9 शहरों की यात्रा

रवींद्रन को कोचिंग में मजा आ रहा था। इसलिए उन्होंने इसके लिए नौकरी भी छोड़ दी। शुरुआत में बायजू छोटे कमरों में छोटे ग्रुप्स को कोचिंग देते थे। रवींद्रन का पढ़ाने का तरीका इतना मजेदार था कि स्टूडेंट्स की संख्या बढ़ती ही चली गई। रवींद्रन की पत्नी और बायजूस की को-फाउंडर दिव्या गोकुलनाथ ने एक इंटरव्यू में कहा था, रवींद्रन हर हफ्ते 9 शहरों की यात्रा करते थे और स्टेडियम में स्टूडेंट्स को मैथ पढ़ाते थे।

25,000 स्टूडेंट्स को स्टेडियम में एक साथ पढ़ाते थे मैथ्स

गोकुलनाथ ने शुरुआती दिनों को याद करते हुए कहा, हमने एक किराये के कमरे और 40 स्टूडेंट्स के साथ बायजूस की जर्नी शुरू की थी। वे कहती हैं, हमारा पढ़ाने का तरीका इतना यूनीक था कि स्टूडेंट्स की संख्या बढ़ती चली गई। स्टूडेंट्स इतने आने लगे कि बायजू क बड़े ऑडिटोरियम में शिफ्ट होना पड़ा। बायजूस ने स्टेडियम किराए पर लिये। वे 6 स्क्रीन के बीच खड़े रहकर बच्चों को मैथ्स पढ़ाते थे। रवींद्रन ने दिल्ली के इंदिया गांधी इनडोर स्टेडियम में भी स्टूडेंट्स को पढ़ाया था। यहां 25,000 स्टूडेंट्स आए थे। इस तरह यह दुनिया का सबसे बड़ा क्लासरूम बन गया था।

जब व्यस्तता ज्यादा बढ़ने लगी तो बायजू ने सोचा कि क्यों ना एक ही जगह रहकर सभी स्टूडेंट्स तक पहुंचा जाए। इसके बाद उन्होंने साल 2009 में ष्टञ्ज के ऑनलाइन वीडियो बेस्ड लर्निंग प्रोग्राम शुरू किया । इसके बाद साल 2011 में उन्होंने थिंक एंड लर्न नाम से एक स्टार्टअप लॉन्च किया, जो कि बायजूस की मूल कंपनी है। साल 2015 में उन्होंने बायजूस- द लर्निंग ऐप शुरू किया। यह स्टार्टअप के लिए गेमचेंजर साबित हुआ। इसका असर यह था कि रविंद्रन सिर्फ 7 साल में अरबपति बन गए थे। और फिर यह सिलसिला चलता ही गया।

22 से घटकर 5.1 अरब डॉलर पर आ गई वैल्यूएशन

आज बायजूस देश की सबसे बड़ी एजुकेशन टेक्नोलॉजी कंपनी है। सितंबर 2023 तक बायजूस की वैल्यूएशन 5.1 अरब डॉलर थी। कंपनी का दावा है कि उसके पास 15 करोड़ रजिस्टर्ड स्टूडेंट्स हैं। हालांकि, साल 2023 बायजूस के लिए अच्छा नहीं रहा। कंपनी की वैल्यूएशन 22 अरब डॉलर से घटकर 5.1 अरब डॉलर पर आ गई।

जयप्रकाश एसोसिएट्स नहीं चुका पाया 4258 करोड़ रुपये का कर्ज

नईदिल्ली, एजेंसी। संकटग्रस्त जेपी समूह की प्रमुख कंपनी जयप्रकाश एसोसिएट्स ने सोमवार को कहा कि उसने मूलधन और ब्याज राशि सहित 4,258 करोड़ रुपये के कर्ज का भुगतान नहीं किया है। शेयर बाजारों को भेजी सूचना में जयप्रकाश एसोसिएट्स लिमिटेड (जेएएल) ने कहा कि कंपनी 31 अक्टूबर को 1,733 करोड़ रुपये की मूल राशि और 2,525 करोड़ रुपये के ब्याज का भुगतान करने में विफल रही। ऋण विभिन्न बैंकों से संबंधित हैं और ये फंड-आधारित कार्यशील पूंजी, गैर-फंड-आधारित कार्यशील पूंजी, सावधि ऋण और एफसीसीबी (विदेशी मुद्रा परिवर्तनीय बांड) के रूप में हैं।

जेएएल ने कहा, कंपनी की कुल उधारी (ब्याज सहित) 29,272 करोड़ रुपये है, जिसे 2037 तक चुकाया जाना है, जिसके मुकाबले 4 अक्टूबर, 258 तक केवल 31,2023 करोड़ रुपये बकाया हैं। जेएएल ने कहा, कंपनी की कुल उधारी (ब्याज सहित) 29,272 करोड़ रुपये है, जिसे 2037 तक चुकाया जाना है, जिसके मुकाबले 31 अक्टूबर, 2023 तक केवल 4,258 करोड़ रुपये की देनदारी है। 29,272 करोड़ रुपये की उक्त उधारी में से 18,682 करोड़ रुपये प्रस्तावित विशेष प्रयोजन वाहन (एसपीवी) को हस्तांतरित करने पर और कम हो जाएंगे। कंपनी ने बताया है कि इसके लिए सभी हितधारकों की ओर से विधिवत अनुमोदित व्यवस्था की योजना एनसीएलटी के पास मंजूरी के लिए लंबित है। जेएएल की ओर से कहा गया है कि उसका पूरा ऋण पुनर्गठन के अधीन है। कंपनी ने कहा कि वह उधारी कम करने के लिए ठोस कदम उठा रही है।

रॉक्स हाई-टेक लिमिटेड का आईपीओ खुला

मुंबई, एजेंसी। एक ग्राहक केंद्रित आईटी सॉल्यूशंस प्रदाता, रॉक्स हाई-टेक लिमिटेड ने 07 नवंबर, 2023 को इनिशियल पक्ब्लिक आफरिंग के साथ पब्लिक में जाने की अपनी योजना की घोषणा की है. कंपनी का इरादा आईपीओ के मार्फत अप्पर बैंड प्राइस पर 54.49 करोड़ जुटाने का है और कंपनी के शेयरों को एनएसई इमर्ज प्लेटफार्म पर लिस्ट किया जाएगा. आईपीओ से प्राप्त शुद्ध धनराशि का उपयोग पूंजी खर्च का वित्त पोषण करने, कार्यशील पूंजी की जरूरत पूरी करने और आम कॉरपोरेट कार्यों का वित्त पोषण करने के लिए किया जाएगा. एंकर पोर्शन की बिडिंग 06 नवंबर, 2023 को खुलेगी और इश्यू 09 नवंबर, 2023 को बंद होगा. इश्यू की बुक रनिंग लीड मैनेजर स्वराज शेयर्स एंड सिक्योरिटीस प्राइवेट लिमिटेड है और इश्यू की रजिस्ट्रार पूर्वा शेयरजिस्ट्री इंडिया प्राइवेट लिमिटेड है. रॉक्स हाई-टेक लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर, श्री जिम राकेश ने कहा, हम रॉक्स हाई-टेक लिमिटेड को पब्लिक में ले जाकर इस उत्साहजनक यात्रा पर आगे बढ़ते हुए रोमांचित है. यह माइलस्टोन अपवादात्मक आईटी सॉल्यूशंस प्रदान करने और इनोवेशन के प्रति हमारे समर्पण की प्रतिबद्धता से प्रदर्शित होता है. हमें विश्वास है कि यह आईपीओ हमें हमारी क्षमताएं और बढ़ाने और हमारे ग्राहकों की उत्कृष्ट सेवा करने में समर्थ बनाएगा. इस आईपीओ से प्राप्त शुद्ध धनराशि हमारे पूंजी खर्च का वित्त पोषण करने और हमारी कार्यशील पूंजी की जरूरत पूरी करने में सहायक रहेगी. फंड का यह व्यूहात्मक आवंटन निरंतर ग्रोथ और इनोवेशन करने के हमारे विजन के अनुरूप है और हमें एक प्रमुख आईटी सॉल्यूशंस प्रदाता के रूप में हमारी स्थिति बरकरार रखने की अनुमतिदेता है. स्वराज शेयर्स एंड सिक्योरिटीस प्राइवेट लिमिटेड की डायरेक्टर, सुश्री पंकिता पटेल ने कहा, पब्लिक में जाने का रॉक्स हाई-टेक लिमिटेड का निर्णय उनकी यात्रा में एक महत्वपूर्ण पल को दर्शाता है. अपवादात्मक आईटी सॉल्यूशंस प्रदान करने और इनोवेशन के प्रति समर्पण की उनकी प्रतिबद्धता ने उन्हें उद्योग का एक खास खिलाड़ी बना दिया है. यह आईपीओ ना सिर्फ उनकी क्षमताओं में उसके विश्वास को दर्शाता है बल्कि नए सुअवसरों और ग्रोथ के द्वार भी खोलता है।

790 पर जाएगा एसबीआई का शेयर, 41 में से 37 एक्सपर्ट्स ने कहा-तुरंत खरीदो

नईदिल्ली, एजेंसी। आने वाले दिनों में भारत के सबसे बड़े सरकारी बैंक एसबीआई के शेयर 790 रुपये तक पहुंच सकते हैं। यह मौजूदा रेट 574.35 रुपये से करीब 37 फीसद ऊपर है। घरेलू ब्रोक्रेज फर्म बीएनपी परिबास सिक्योरिटिज ने सोमवार को जारी अपने एक नोट में एसबीआई को बाय रेटिंग देते हुए 790 का टार्गेट दिया है।

एक दिन पहले 5 नवंबर को प्रभुदास लीलाधर ने इसका टार्गेट प्राइस 770 रुपये रखा था और खरीदारी की सलाह दी थी, जबकि इसी दिन एक अन्य ब्रोक्रेज फर्म जेएम फाइनेंशियल ने भी 710 रुपये लक्ष्य के साथ बाय रेटिंग दी थी। अगर अन्य एनॉलिस्टों की बात करें तो कुल 41 में से 24 ने स्टेट बैंक के शेयरों में स्ट्रांग बाय की सलाह दी है। जबकि, 13 विश्लेषकों ने भी बाय रेटिंग दी है। इस लिहाज से देखें तो मार्केट एक्सपर्ट्स एसबीआई को लेकर बुलिश हैं। इन 41 एनॉलिस्ट्स में से केवल 2 ने होल्ड और इतने ही लोगों ने बेचने की सलाह दी है। अगर एसबीआई के स्टैंड अलोन रिटर्न ऑन इक्विटी पर नजर डालें तो यह शेयर पिछले पांच साल से लगातार उछल रहा है। 2019 में इसका आरओई 0.35 फीसद था। 2020 में बढ़कर 6.74 फीसद हो गया। वहीं, 2021 में 9.02 और 2022 में 12.91 फीसद पर पहुंच गया।

तूफानी तेजी से बढ़ेगी भारत की अर्थव्यवस्था, फिच ने बढ़ाई ग्रोथ रेट, चीन की जीडीपी को लग सकता है बड़ा झटका

नईदिल्ली, एजेंसी। अमेरिकी रेटिंग एजेंसी एजेंसी फिच का कहना है कि भारत की आर्थिक वृद्धि दर टॉप-10 उभरती अर्थव्यवस्थाओं में सबसे ज्यादा रहने वाली है। यही नहीं फिच ने सोमवार को भारत के मिड टर्म ग्रोथ अनुमान को 0.7 प्रतिशत बढ़ाकर 6.2 प्रतिशत कर दिया। इससे पहले ग्लोबल एजेंसी का अनुमान 5.5 प्रतिशत का था। फिच की मानें तो हालिया महीनों में भारत में रोजगार दर में सुधार हुआ है। वर्किंग एज पॉपुलेशन के फोरकास्ट में भी सुधार आया है। फिच के अनुसार, भारत की श्रम उत्पादकता का अनुमान भी अन्य देशों की तुलना में बेहतर है।

वहीं, इसने 10 उभरते देशों के ग्रोथ अनुमान को पहले के 4.3 प्रतिशत से घटाकर 4 प्रतिशत कर दिया है। इसके लिए फिच ने चीन की अर्थव्यवस्था में गिरावट को जिम्मेदार ठहराया है। ग्लोबल रेटिंग एजेंसी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 'यह कमी मुख्य रूप से चीन की सप्लाई-साइड ग्रोथ पोटेंशियल के अनुमान में 0.7 प्रतिशत अंक की बड़ी कमी के कारण आई है। चीन के मिड टर्म ग्रोथ अनुमान को 5.3 फीसदी से घटाकर 4.6 फीसदी कर दिया गया है। 'हमने भारत और मैक्सिको को बड़े पैमाने पर अपग्रेड किया है।

भारत के ग्रोथ अनुमान को 5.5 प्रतिशत से बढाकर 6.2 प्रतिशत जबकि मेक्सिको के ग्रोथ अनुमान को 1.4 प्रतिशत से बढाकर 2 प्रतिशत किया गया है। फिच ने कहा है कि 2023-24 के लिए भारत की विकास दर 6.3 प्रतिशत रहने की उम्मीद है। फिच ने मध्यम अवधि 2023 से 2027 को माना है। रेटिंग एजेंसी के अनुसार, भागीदारी दर में नकारात्मक वृद्धि के अनुमान को देखते हुए भारत की अनुमानित श्रम आपूर्ति वृद्धि 2019 की तुलना में कम है। हालांकि, भागीदारी दर अपनी कोविड-19 महामारी की नरमी से उबर गई है, लेकिन यह 2000 के दशक की शुरुआत में दर्ज स्तर से काफी नीचे बनी हुई है। महिलाओं के बीच रोजगार दर कम है।

कलर्स ने महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के साथ हाथ मिलाया

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की अग्रणी हिंदी जीईसी, कलर्स ने अपने नए फिक्शन शो डोरी को लॉन्च करके बालिका परित्याग के मुद्दे को संबोधित करने के लिए, आज महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' पहल के साथ अपने सहयोग की घोषणा की। टेलीविज़न ने एक माध्यम के रूप में समाज को आइना दिखाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है और कई महिलाओं को बदलाव का स्रोत बनने के लिए प्रेरित किया है। सामाजिक बदलाव लाने और बालिकाओं के प्रति लैंगिक पक्षपात को दूर करने के उद्देश्य से, इस सहयोग के माध्यम से कलर्स का उद्देश्य बालिका परित्याग की सामाजिक बुराई के बारे में जागरूकता फैलाना है। इस विषय पर एक प्राइमटाइम शो लॉन्च करने के अलावा, इस सहयोग के तहत, कलर्स देश भर में किसी भी परित्यक्त बालिका हेतु सहायता चाहने वालों के लिए 24 घंटे की आपातकालीन टोल फ्री चाइल्डलाइन इंडिया हेल्पलाइन नंबर (1098) का प्रचार करेगा। कलर्स पर हर सोमवार से शुक्रवार रात 9ः00 बजे प्रसारित होने वाले शो 'डोरी' का उद्देश्य लोकप्रिय संवाद पैदा करना और इस तरह से बालिका परित्याग के मुद्दे पर जागरूकता फैलाना है।

एचडीएफसी इर्गो ने रबी सीजन में मध्य प्रदेश के किसानों के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू की

बड़वानी , एजेंसी। भारत में निजी क्षेत्र की अग्रणी सामान्य बीमा कंपनी, एचडीएफसी इर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को मध्य प्रदेश सरकार ने रबी, 2023 सीजन के लिए अलीराजपुर, बड़वानी, बुरहानपुर, धार, झाबुआ, खंडवा और खरगोन जिलों में ऋषी और गैर-ऋषी किसानों के लिए प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाई) लागू करने के लिए अधिकृत किया है। इन जिलों में इस योजना का क्रियान्वयन मध्य प्रदेश सरकार द्वारा योजना के अंतर्गत अधिसूचित निम्नलिखित फसलों के लिए किया जाएगा, जिनके लिए फसलों के अनुसार कट-ऑफ तिथियाँ निम्नलिखित हैं-पीएमएफबीवाई योजना में किसानों को तूफ़ान, ओलावृष्टि, बाढ़, तूफ़ानी बारिश, बेमौसम बारिश, बादल फटने, प्राकृतिक कारणों से लगी आग जैसे कई बाहरी ख़तरों के कारण फसल को होने वाले नुकसान से बीमा की सुरक्षा मिलती है। फसल के नुक़सान का आकलन करने के लिए, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल कटाई प्रयोग (सीसीई) की योजना बनाकर संचालन करेगी। यदि सीसीई में फसल के कम आँकड़े पाए जाते हैं, तो माना जाएगा कि फसल की पैदावार कम हुई है, जिसके लिए किसान को क्लेम दिया जाएगा। इस योजना के अंतर्गत फसल चक्र के हर चरण के लिए बीमा कवर मिलेगा, जिसमें बुआई से पहले, कटाई और कटाई के बाद के जोखिम भी शामिल हैं।

अज़ीम प्रेमजी विवि के बेंगलूरु और भोपाल कैम्पस में यूजी और पीजी कोर्सेस में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित

भोपाल एजेंसी। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय स्नातक और स्नातकोत्तर कोर्सेस में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। इनमें एम.ए.एजुकेशन, एम.ए.डेवलपमेंट स्टडीज़, मास्टर ऑफ़ पब्लिक हेल्थ और एम.ए. अर्थशास्त्र स्नातकोत्तर के दो वर्षीय कोर्सेस हैं। स्नातक में बी.ए. ऑनर्स और बी.एससी.ऑनर्स कोर्सप्रस्तुत किए जा रहे हैं। स्नातक कोर्स ड्युअल-डिग्री हैं, जो बी.एड. के साथ हमारे कैम्पस में रहकर ही किए जाने हैं। विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। पहले आवेदकों की लिखित परीक्षा ली जाएगी। लिखित परीक्षा में शॉर्टलिस्ट किए गए आवेदकों को साक्षात्कार लिया जाएगा। आवेदकों को परीक्षा और साक्षात्कार के प्रदर्शन के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। एडमीशन के पहले राउण्ड के अंतरगत आवेदन करने की आख़िरी तारीख़ 22 नवम्बर 2023, राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा 24 दिसम्बर 2023, साक्षात्कार जनवरी 2024, एडमीशन फरवरी 2024 रखी गई हैं। यह कोर्स अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के बेंगलूरु और भोपाल स्थित कैम्पस में चलाए जाएंगे। विद्यार्थियों को बेहतरीन शिक्षा उपलब्ध कराते हुए उनमें विषय विशेषज्ञता व सामाजिक प्रतिबद्धता का निर्माण करना इन कोर्सेस का लक्ष्य है। उन्हें सार्थक करिअर की तलाश के लिए प्रेरित करना और शिक्षा की राह पर आगे बढ़ाना इन कोर्सेस का उद्देश्य है। विद्यार्थी हमारे विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जाकर आवेदन कर सकते हैं। पहले आवेदकों की लिखित परीक्षा ली जाएगी। लिखित परीक्षा में शॉर्टलिस्ट किए गए आवेदकों को साक्षात्कार लिया जाएगा। आवेदकों को परीक्षा और साक्षात्कार के प्रदर्शन के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा।

सनरेस्ट लाइफसाइंस लिमिटेड ने आईपीओ से रु. 10.85 करोड़ रुपए जुटाने की योजना बनाई

अहमदाबाद एजेंसी। अहमदाबाद स्थित फार्मास्युटिकल कंपनी, सनरेस्ट लाइफसाइंस लिमिटेड अपने एसएमई पब्लिक इश्यू से रु. 10.85 करोड़ जुटाने की योजना बना रही है। आईपीओ 7 नवंबर को सदस्यता के लिए खुला। कंपनी को नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के इमर्ज प्लेटफॉर्म पर अपना आईपीओ लॉन्च करने की मंजूरी मिल गई है। आईपीओ से प्राप्त राशि का उपयोग कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्य को पूरा करने सहित कंपनी की विस्तार योजनाओं को निधि देने के लिए किया जाएगा। मार्क कॉरपोरेट एडवाइजर्स प्राइवेट लिमिटेड इस इश्यू के लीड मैनेजर है। पब्लिक इश्यू 09 नवंबर को बंद हो जाएगा।

आईपीओ में रु. 10 के अंकित मूल्य के रु. 84 प्रति शेयर (रु. 74 प्रति इक्विटी शेयर के प्रीमियम सहित) के 12.91 लाख इक्विटी शेयरों का फ्रेश इश्यू शामिल है, जिसका मूल्य

कुल मिलाकर रु. 10.85 करोड़ है। एप्लिकेशन के लिए न्यूनतम लॉट साइज 1,600 शेयर है जो प्रति एप्लिकेशन रु. 1.34 लाख के निवेश के बराबर है। आईपीओ के लिए रिटेल आवंटन प्रत्येक इश्यू का 50त्न रखा गया है। मार्केट मेकर आरक्षण भाग 65,600 इक्विटी शेयर है।

2017 में स्थापित, सनरेस्ट लाइफसाइंस लिमिटेड स्वास्थ्य देखभाल और व्यक्तिगत देखभाल उत्पादों की एक विविध श्रृंखला प्रदान करता है। कंपनी की उत्पाद श्रृंखला में कैप्सूल, टैबलेट, सिरप, मलहम, जेल, माउथवॉश, सॉल्यूशन, सस्पेंशन, ड्राई पाउडर और टूथपेस्ट शामिल हैं। सनरेस्ट लाइफसाइंस के उत्पाद पोर्टफोलियो में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-डायरियल, एंटी-फंगल, एंटी- मलेरियल, एंटी-डायबिटिक, डेंटल क्योर, एंटी-प्रोटोजोल, एंटी-हिस्टामाइन, एंटी-हाइपरटेंसिव ड्रग्स, कॉस्मेटिक, एंटी-पैरासिटिक, मल्टीविटामिन, मल्टीमिनरल, न्यूट्रास्युटिकल और एंटी-इन्फ्लेमेटरी जैसी दवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। 32 उत्पादों के लिए 18 पंजीकृत ट्रेडमार्क के साथ, सनरेस्ट लाइफसाइंस अपने ग्राहकों को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद वितरित करने के लिए प्रतिबद्ध है। कंपनी अपने उत्पादों का निर्माण थर्ड पार्टी फार्मा उत्पाद निर्माताओं से कराती है, जिसमें सनरेस्ट समूह की कंपनी ट्रिलेंड फार्मास्यूटिकल्स प्राइवेट लिमिटेड (ट्राइलेंड) भी शामिल है। कंपनी के गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और मध्य प्रदेश में थर्ड पार्टी निर्माता हैं।

श्री निखिलकुमार ठक्कर, श्री अमितभाई ठक्कर, श्री भाग्येश पारेख और श्री भरतकुमार ठक्कर कंपनी के प्रमोटर हैं। इश्यू के बाद प्रमोटर की हिस्सेदारी 69.91त्न होगी। वित्त वर्ष 22-23 के लिए कंपनी ने रु. 24.67 करोड़ का कुल राजस्व और रु. 2.04 करोड़ का शुद्ध लाभ दर्ज किया। 30 जून 2023 तक, रिजर्व्स और सरप्लस रु. 86.6 लाख, कुल संपत्ति रु. 17.06 करोड़ और नेटवर्थ रु. 3.86 करोड़ है। कंपनी के शेयर एनएसई इमर्ज प्लेटफॉर्म पर लिस्ट होंगे।

अडानी विल्मर में अपनी पूरी हिस्सेदारी बेचेगा गौतम अडानी! कई कंपनियों से चल रही बात

नईदिल्ली, एजेंसी। ऐसी रिपोर्ट है कि गौतम अडानी का अडानी ग्रुप, अडानी विल्मर लिमिटेड में अपनी पूरी 43.97 प्रतिशत हिस्सेदारी बेचना चाहता है। इसके लिए कई मल्टीनेशनल कंज्यूमर गुड्स कंपनियों के साथ बातचीत चल रही है। अडानी विल्मर लिमिटेड, अडानी ग्रुप और सिंगापुर की विल्मर इंटरनेशनल का जॉइंट वेंचर है। इसके प्रोडक्ट्स में फॉर्च्यून ब्रांड एडिबल ऑयल प्रमुख है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, एक महीने के अंदर सौदे पर मुहर लगने की संभावना है। अडानी ग्रुप, अडानी विल्मर लिमिटेड में अपनी हिस्सेदारी की बिक्री के लिए 2.5-3 अरब डॉलर की मांग कर रहा है। विल्मर इंटरनेशनल की भी कंपनी में 43.97 प्रतिशत हिस्सेदारी है। अडानी विल्मर को 1999 में स्थापित किया गया था। फरवरी 2022 में अडानी विल्मर का आईपीओ आया था। उसके बाद दोनों कंपनियों की शेयरहोल्डिंग कम होकर 43.97 प्रतिशत हो गई। अडानी विल्मर को चालू वित्त वर्ष की सितंबर तिमाही में 131 करोड़ रुपए का घाटा हुआ है। एक साल पहले इसी अवधि में कंपनी को 49 करोड़ रुपए का मुनाफा हुआ था। मुनाफे के घटने का कारण पिछले वर्ष के दौरान रेवेन्यू में गिरावट थी, जिसका असर कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन पर पड़ा। सितंबर 2023 तिमाही में अडानी विल्मर का रेवेन्यू सालाना आधार पर 13.3 प्रतिशत की गिरावट के साथ 12,267.15 रुपए रहा। हालांकि कंपनी कुल खर्चों को घटाकर 12,439.45 करोड़ रुपए करने में सफल रही लेकिन रेवेन्यू में गिरावट इतनी बड़ी थी कि इसके चलते 131 करोड़ रुपए का शुद्ध घाटा हो गया।

नोर्बिन ने भारत में अपनी पेशकश के लिए बीएएसएफ का क्राउडसोर्सिंग डिजिटल टूल, रिफिनिश हब पेश किया

मुंबई, एजेंसी। बीएएसएफ के कोटिंग डिवीज़न ने भारत में नोर्बिन ग्राहकों के लिए अपना लोकप्रिय डिजिटल क्राउडसोर्सिंग कलर फ़ॉर्मूला सर्च सिस्टम पेश किया है। इस बीएएसएफ रिफिनिश हब मोबाइल वेब एप्लिकेशन द्वारा भारत में नोर्बिन ग्राहक फ़ॉर्मूले को तेज़ी से सर्च करने, सेव करने और अपलोड करने में समर्थ बनेंगे और क्षेत्र के अन्य यूज़र्स के साथ उसे साझा कर सकेंगे। यह सुविधाजनक प्लेटफ़ॉर्म सबसे अच्छे फ़ॉर्मूलों की पहचान करके कलर एक्सपर्ट्स का एक शक्तिशाली समुदाय बनाता है। इस साझा ज्ञान से यूज़र्स को फ़ॉर्मूला खोजने में लगने वाले समय और बर्बादी को कम करने में मदद मिलेगी, जिससे उनकी एफिशिएंसी में सुधार आएगा। सुसान क्लूज़, वाईस प्रेसिडेंट, सेल्स मैनेजमेंट, ऑटोमोटिव रिफ़िनिश कोटिंग्स सॉल्यूशंस एशिया पैसिफ़िक, बीएएसएफ ने कहा, हम भारत में अपना सफल बीएएसएफ रिफिनिश हब लाने के लिए बहुत उत्साहित हैं।

शाकिब अल हसन वनडे विश्व कप 2023 से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश के कप्तान शाकिब अल हसन बाईं तर्जनी में चोट के कारण मंगलवार को आईसीसी वनडे विश्व कप 2023 के शेष मैच से बाहर हो गए। शाकिब को सोमवार को श्रीलंका के खिलाफ बांग्लादेश के अंतिम लीग चरण के खेल में बल्लेबाजी करते समय चोट लगी थी।

मैच के बाद एक्स-रे में फ्रैक्चर की पुष्टि हुई जिससे वह पुणे में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बांग्लादेश के टूर्नामेंट के आखिरी मैच से बाहर हो गए। राष्ट्रीय टीम के फिजियो बायजेदुल इस्लाम खान ने चोट के बारे में अधिक जानकारी देते हुए कहा, शाकिब को उनकी पारी की शुरुआत में बाईं तर्जनी पर चोट लगी थी, लेकिन उन्होंने सहायक टेपिंग और दर्द निवारक दवाओं के साथ बल्लेबाजी करना जारी रखा। उनके बाएं पीआईपी जोड़ पर फ्रैक्चर की पुष्टि हुई। रिकवरी तीन से चार सप्ताह में होने का अनुमान है। वह अपना पुनर्वास शुरू करने के लिए आज बांग्लादेश रवाना होंगे।

शाकिब ने 65 गेंदों में 12 चौकों और दो छक्कों की मदद से 82 रन की मैच जिताऊ पारी खेली और अपनी टीम को श्रीलंका पर तीन विकेट से जीत दिलाई। इससे पहले दिन में उन्होंने गेंद से 2/57 का आंकड़ा दर्ज किया था। उनके बेहतरीन प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार भी दिया गया।

भारत के विदित वैशाली नें रचा इतिहास बने फीडे ग्रांड स्विस चैम्पियन

डगलस , आइल ऑफ मैन (एजेंसी)। फीडे ग्रांड स्विस के अंतिम और फाइनल 11वें राउंड में सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा भारत चाहता था , पुरुष वर्ग में विदित गुजराती और महिला वर्ग में आर वैशाली नें खिताब जीतकर एक नया इतिहास बना दिया । इस जीत के साथ इन दोनों खिलाड़ियों नें फीडे कैंडिडैट में जगह बना ली और ऐसा करने वाले विदित आनंद और प्रज्ञानन्दा के बाद तीसरे खिलाड़ी के बन गए तो वैशाली ऐसा करने वाली कोनेरु हम्पी के बाद दूसरी भारतीय खिलाड़ी बन गयी है ।

परूष वर्ग में अंतिम दिन जब मैच शुरू हुआ तो विदित 7.5 अंको के साथ यूएसए के हिकारु नाकामुरा और रूस के आन्द्रे एसीपेंकों के साथ सयुंक्त बढ़त पर तो थे पर टाईब्रेक में वह तीसरे स्थान पर चल रहे थे पर अंतिम दिन विदित के हाथ में सिर्फ उनकी जीत ही थी और विदित नें एक शानदार एंडगेम खेलते हुए सर्बिया के अलेक्ज़ेंडर प्रेडके को पराजित करते हुए 8.5 अंक बना लिए वहीं पहले बोर्ड पर यूएसए के हिकारु नाकामुरा और भारत के अर्जुन एरिगासी के बीच बाजी ड्रॉ रही तो नीदरलैंड के अनीश गिरि नें एसीपेंकों को मात दे दी और ऐसे में विदित सबसे आगे निकल गए , 8 अंक बनाकर नाकामुरा दूसरे तो 7.5 अंको पर सबसे बेहतर टाईब्रेक के आधार पर एसीपेंकों तीसरे स्थान पर रहे । 7.5 अंको पर टाईब्रेक के आधार पर भारत के अर्जुन एरिगासी , जर्मनी के विन्सेंट केमर , ईरान के परहम मघसूदलू और नीदरलैंड के अनीश गिरि क्रमशः चौंथे से सातवें स्थान पर रहे ।

वर्ल्ड कप 2023 में आज इंग्लैंड और नीदरलैंड्स के बीच मुकाबला

पुणे (एजेंसी)। आईसीसी वनडे वर्ल्ड कप 2023 अपने अंतिम चरण में चल रहा है। जल्द ही सेमीफाइनल के लिए टॉप 4 टीमें सिलेक्ट हो जाएंगी। वहीं गत विजेता इंग्लैंड के लिए यह वर्ल्ड कप किसी बुरे सपने से कम नहीं रहा। वह 7 में से 6 मैच हार कर टूर्नामेंट से भी बाहर हो गए हैं। इतना ही नहीं बल्कि इस वक्त उनके चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए क्वालिफाइ करने के लिए भी लाले पड़े हैं। वह अंक तालिका में 2 पॉइंट्स के साथ आखिरी स्थान पर हैं। वहीं अब उनका अगला मैच 8 नवंबर को नीदरलैंड्स से पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम में हैं। इंग्लैंड को चैंपियंस ट्रॉफी के लिए क्वालिफाइ करने के लिए किसी भी हाल में यह मैच जीतना होगा। वहीं डच टीम भी ऑफिशियली इस वक्त सेमी की रेस में बनी हुई है। तो दोनों टीमें यह मैच जीतने में पूरी जान लगा देंगी। आइये ऐसे में जानते हैं कि इस रोचक मुकाबले में पिच का मिजाज कैसा रहने वाला है।

इंग्लैंड-नीदरलैंड्स की पिच रिपोर्ट

पुणे के महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन स्टेडियम की पिच बल्लेबाजी के लिए स्वर्ग मानी जाती है। यहां गेंद बल्ले पर सही

तरह से आती है और बल्लेबाज जमकर रन बनाते हैं। गेंदबाजों को यहां खास मदद नहीं मिलेगी। पिछले 10 में से 6 वनडे मैच में पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम ने 300 से अधिक रन बनाए हैं। इतना ही नहीं बल्कि दूसरी बल्लेबाजी करने वाली टीम ने भी गजब बल्लेबाजी की है। पहली पारी का औसत स्कोर पुणे में 300 है। इस मैदान पर अब तक कुल 10 वनडे मैच खेले गए हैं, जिसमें से 5 पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम और 5 दूसरी बल्लेबाजी करने वाली टीम ने जीते हैं। पुणे में ड्यू फैक्टर आने की संभावना ना के बराबर है। ऐसे में इस मैदान पर टीमें चेज करना पसंद करेंगी।

दोनों टीमें इस प्रकार हैं-

इंग्लैंड- जोस बटलर (कप्तान), मोइन अली, गस एटकिंसन, जॉनी बेयरस्टो, सैम करन, लियाम लिविंगस्टोन, डेविड मलान, आदिल राशिद, जो रूट, हैरी ब्रूक, बेन स्टोक्स, ब्रायडन कार्स, डेविड विली, मार्क वुड और क्रिस वोक्स।

नीदरलैंड- स्कॉट एडवर्ड्स (कप्तान और विकेटकीपर), कोलिन एकरमैन, वेस्ले बारेसी (विकेटकीपर), बास डी लीडे, आर्यन दत्त, साइब्रांड एंगेलब्रेक्ट, रेयान क्लेन, तेजा निदामानुरु, मैक्स ओडोड, साकिब जुल्फिकार, शारिज अहमद, लोगान वान बीक, रोल्फ वान डर मर्वे, पॉल वान मीकेरेन और विक्रमजीत सिंह।

श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त करने का फैसला रद्द हुआ

कोर्ट करेगा मामले की सुनवाई, तब तक के लिए पुराने बोर्ड मेंबर्स को जगह दी

कोलंबो (एजेंसी)। वर्ल्ड कप में खराब प्रदर्शन के बाद सोमवार को खेल मंत्री रोशन रणसिंघे द्वारा बर्खास्त किए गए श्रीलंकाई क्रिकेट बोर्ड को कोर्ट का दरवाजा खटखटाना पड़ा। श्रीलंका की अपील पर अदालत ने देश के क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त करने के खेल मंत्री के फैसले को रद्द कर दिया और पूरी सुनवाई होने तक मंगलवार को फिर बोर्ड मेंबर्स को उनकी जगह दी। कोर्ट ने सोमवार को बोर्ड अध्यक्ष शम्मी सिल्वा की याचिका स्वीकार कर ली। बोर्ड की बहाली दो सप्ताह के लिए है जब अदालत मामले की दोबारा सुनवाई करेगी।

खेल मंत्री ने बोर्ड को बर्खास्त किया था – वर्ल्ड कप में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद श्रीलंका के खेल मंत्रालय ने सोमवार, 6 नवंबर, को श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को बर्खास्त कर दिया था।श्रीलंका क्रिकेट के लिए एक अंतरिम बोर्ड का गठन भी किया था। खेल मंत्री रोशन रणसिंघे के कार्यालय ने एक बयान में कहा था कि, देश के 1996 वर्ल्ड कप विजेता कप्तान अर्जुन रणतुंगा को नए अंतरिम बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। सोमवार को श्रीलंका को वर्ल्ड कप में पहली बार बांग्लादेश के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। बांग्लादेश ने श्रीलंका को रोमांचक मुकाबले में 3 विकेट से हराया।

बोर्ड पर भ्रष्टाचार के भी आरोप लगे थे – बोर्ड पर भ्रष्टाचार के भी आरोप लगे थे। इससे पहले, भारत से मिली हार के बाद खेल मंत्री रोशन रणसिंघे ने शुक्रवार के अपने एक बयान में श्रीलंका क्रिकेट बोर्ड को देशद्रोही और भ्रष्ट कहा था। उन्होंने बोर्ड के सदस्यों से इस्तीफा देने की मांग की थी। इसके बाद, श्रीलंका क्रिकेट के सचिव मोहन डी सिल्वा ने शनिवार, 4 नवंबर को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था।

श्रीलंका को 2 मैच में जीत और 6 में हार मिली – श्रीलंका आठ मैच में दो जीत के साथ 4 पॉइंट्स लेकर पॉइंट्स टेबल में सातवें स्थान पर है। श्रीलंका को साउथ अफ्रीका ने 102 रन से, पाकिस्तान ने 6 विकेट से, ऑस्ट्रेलिया ने 5 विकेट से, अफगानिस्तान ने 7 विकेट से भारत ने 302 रन से और बांग्लादेश ने 3 विकेट से हराया था। वहीं श्रीलंका ने नीदरलैंड को 5 विकेट से और इंग्लैंड को 8 विकेट से हराया था।

भारत से मिली 302 रन से हार के बाद बोर्ड था नाराज – वर्ल्ड कप में 2 नवंबर को खेले गए मैच में श्रीलंका को भारत ने 302 रन से हराया था। इस मैच में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 8 विकेट के नुकसान पर 357 रन बनाया। 358 रन के टारगेट का पीछा करने उतरी श्रीलंका टीम 55 रन ही बना सकी थी। श्रीलंका की आधी टीम केवल 14 बनाकर आउट हो गई थी। टॉप ऑर्डर पूरी तरह फेल हो गया था। भारत से हार के बाद श्रीलंका बोर्ड ने टीम के खराब प्रदर्शन पर चिंता जाहिर की थी।

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन, मिलेगा फल

रियान पराग की हो सकती है भारतीय टीम में एंट्री

नईदिल्ली (एजेंसी)। असम के ऑलराउंडर रियान पराग मौजूदा सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 2023 में शानदार प्रदर्शन किया है और अब तक टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन (510 रन) बनाने वाले खिलाड़ी हैं। 21 वर्षीय खिलाड़ी का बल्ले से औसत 85 है और उन्होंने टूर्नामेंट में 182.79 की स्ट्राइक रेट से सात अर्द्धशतक बनाए हैं। पराग के असाधारण प्रदर्शन से भारतीय टीम के लिए उनका रास्ता साफ होने की संभावना है क्योंकि रिपोर्टों के अनुसार उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 23 नवंबर से शुरू होने वाली आगामी टी20 सीरीज में पहली बार टीम में शामिल किए जाने की संभावना है। पराग को अपनी शानदार बल्लेबाजी के अलावा दस मैचों में 24.54 की औसत और 7.29 की इकोनॉमी से 11 विकेट भी लिए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, पराग इस सीजन में घरेलू क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। उनके हरफनमौला प्रदर्शन को नजरअंदाज करना मुश्किल है। उनकी योग्यता के अलावा, वह एक बेहतरीन फील्डर भी हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, चयनकर्ता ऑस्ट्रेलिया श्रृंखला के लिए मौजूदा वनडे विश्व कप 2023 में खेल रहे अधिकांश खिलाड़ियों को आराम देंगे और हाल ही में संपन्न एशियाई खेलों में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतने वाले युवाओं का चयन करने की संभावना है। अपने चयन के लिए एक मजबूत दावा पेश करने के लिए पराग देवधर ट्रॉफी के अग्रणी रन-स्कोरर भी थे, जिन्होंने पांच मैचों में 88.50 के औसत और 136.67 के स्ट्राइक रेट के साथ दो शतक और एक अर्धशतक के साथ 354 रन बनाए थे। उनके अलावा अनुभवी भारतीय सीमर भुवनेश्वर कुमार की भी आगामी श्रृंखला में वापसी की संभावना है। सभी वरिष्ठ गेंदबाजों को आराम दिए जाने के बाद भुवनेश्वर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय तेज आक्रमण का नेतृत्व कर सकते हैं। 33 वर्षीय खिलाड़ी ने आखिरी बार नवंबर 2022 में न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20आई के दौरान भारत के लिए खेला था।

विश्व कप की एक पारी में 10 से ज्यादा छक्के उड़ाने वाले बल्लेबाज, यह है शामिल

नईदिल्ली (एजेंसी)। फखर जमां जब भारत आए तो वह सबसे बड़े खतरनाक बल्लेबाजों में शामिल थे, लेकिन कुछ ही मैचों बाद बाबर आजम ने उन्हें प्लेइंग-11 से आउट कर दिया। जब हार पर हार होने लगी तो मजबूरन उन्हें वापस लाना पड़ा। उन्होंने इसके बाद न्यूजीलैंड के खिलाफ पारी में

11 छक्के जड़ते हुए ष्ठरू से जीत दिलाई और टूर्नामेंट में पाकिस्तान की वापसी हो गई। इस विश्व कप में एक ही पारी में वह सबसे अधिक छक्के जड़ने वाले बल्लेबाज हैं। आइए जानते हैं विश्व कप इतिहास में एक पारी में 10 से अधिक छक्के उड़ाने वाले बल्लेबाजों के बारे में...

इयोन मोर्गन के नाम विश्व रिकॉर्ड – इंग्लैंड के तत्कालीन कप्तान इयोन मोर्गन ने 2019 में अफगानिस्तान के खिलाफ 17 छक्के उड़ाए थे। उस मैच में मोर्गन ने 71 गेंदों में 148 रनों की ताबड़तोड़ पारी खेली थी। यह किसी भी वनडे मैच का भी वर्ल्ड रिकॉर्ड है।

क्रिस ने डबल सेंचुरी में उड़ाए थे 16 छक्के – क्रिस गेल ने कैनबरा में जिम्बाब्वे के खिलाफ बल्ले से आग बरसाई थी। उन्होंने 147 गेंदों में 10 चौके और 16 छक्के उड़ाते हुए 215 रनों की पारी खेली थी। यह मैच विश्व कप 2015 में खेला गया था।

मार्टिन गुप्टिल ने बनाया था सबसे बड़ा स्कोर – न्यूजीलैंड के मार्टिन गुप्टिल ने विश्व कप 2015 में वेस्टइंडीज के खिलाफ 11 छक्के उड़ाए थे। उन्होंने इस पारी में 163 गेंदों में 237 रनों की पारी खेली थी, जो विश्व कप की सबसे बड़ी पारी है।

फखर जमां भी लिस्ट में – फखर जमां ने इस विश्व कप में 4 नवंबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ 103 गेंदों में 8 चौके और 11 छक्के के दम पर नाबाद 126 रनों की पारी खेली थी। वह 10 या उससे अधिक छक्के जड़ने वाले विश्व कप में इकलौते पाकिस्तानी और आखिरी बल्लेबाज हैं।

लिस्ट में कोई नहीं है भारतीय – इस खास लिस्ट में कोई भी भारतीय बल्लेबाज शामिल नहीं है। हालांकि, वनडे पारी की बात करेंगे तो इसमें रोहित शर्मा का नाम है। हिटमैन ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 209 रनों की पारी के दौरान 16 छक्के उड़ाए थे।

बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के लिए न्यूजीलैंड टीम का ऐलान, विश्व कप के बाद शुरू होगी सीरीज

ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) (एजेंसी)। न्यूजीलैंड की सीनियर पुरुष टीम के चयनकर्ताओं ने इस महीने के अंत में बांग्लादेश में शुरू होने वाली दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला के लिए स्पिन-भारी टीम का चयन किया है जिसमें काइल जैमीसन, रचिन रवींद्र और मिशेल सेंटनर की वापसी होगी। यह श्रृंखला ब्लैक कैप्स के लिए आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के तीसरे चक्र की शुरुआत है और इसमें ल्यूक रोंची के नेतृत्व में एक कोचिंग टीम शामिल होगी जो नियमित मुख्य कोच के रूप में है, क्योंकि गैरी स्टीड भारत में आईसीसी क्रिकेट विश्व कप के बाद घर लौट रहे हैं।

श्रृंखला में रोंची को गेंदबाजी कोच जैकब ओरम (तेज गेंदबाज) और सकलैन मुश्ताक (स्पिन) के साथ-साथ डैनियल फ्लिन द्वारा सहायता प्रदान की जाएगी जो पहली बार बल्लेबाजी कोच के रूप में टीम में शामिल हुए हैं। बांग्लादेश में स्पिन के अनुकूल परिस्थितियों की उम्मीद के साथ चयनकर्ताओं ने बाएं हाथ के स्पिनर अजाज पटेल और लेग स्पिनर ईश सोढ़ी को शामिल करने के लिए सफेद गेंद के विशेषज्ञ रचिन रवींद्र, जैमीसन और मिशेल सेंटनर को वापस लाया है।

सेंटनर 2021 में इंग्लैंड के खिलाफ लॉर्ड्स में अपने 24 टेस्ट मैचों में से आखिरी मैच खेलने के बाद टीम में लौट आए हैं और फ्रंट-लाइन स्पिनरों के रूप में अजाज पटेल और ईश सोढ़ी के

साथ शामिल हो गए हैं। सेंटनर का चयन 2022/23 में नॉर्दर्न डिस्ट्रिक्ट्स के लिए उनके सबसे सफल प्लंकेट शील्ड सीजन के बाद हुआ है जहां 31 वर्षीय ने 26 की औसत से 15 विकेट लिए और बल्ले से 52 की औसत से रन बनाए।

ऑफ-स्पिनिंग ऑलराउंडर रचिन रवींद्र और ग्लेन फिलिप्स द्वारा स्पिन विकल्पों को और बढ़ावा दिया गया है जो भारत में आईसीसी क्रिकेट विश्व कप में प्रभावशाली प्रदर्शन के बाद टेस्ट टीम में लौट आए हैं। विश्व कप में तीन शतक लगाने वाले रवींद्र जनवरी 2022 में बे ओवल में बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट के बाद से टेस्ट में अपनी पहली टीम में लौट आए हैं, जबकि फिलिप्स को दिसंबर में पाकिस्तान की यात्रा के बाद एक बार फिर टेस्ट टीम में शामिल किया गया है।

फरवरी में पीठ की सर्जरी के बाद काइल जैमीसन की भी टेस्ट टीम में स्वागतयोग्य वापसी हुई है और वह तीन सदस्यीय तेज आक्रमण में कप्तान टिम साउदी और मैट हेनरी के साथ शामिल हो गए हैं। 28 वर्षीय तेज गेंदबाज ने केवल 16 टेस्ट मैचों में 19 की औसत से 72 विकेट लिए हैं जिससे वह सबसे तेज 50 टेस्ट विकेट (9 टेस्ट में) तक पहुंचने वाले न्यूजीलैंड के खिलाड़ी बन गए और उन्हें सफल 2021 आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप में प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

न्यूजीलैंड के चयनकर्ता सैम वेल्स ने कहा कि टीम का चयन दौरे की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया गया है। उन्होंने कहा, एजाज, ईश, मिच, ग्लेन और रचिन के साथ हमारे पास एक मजबूत स्पिन समूह है जो श्रृंखला के दौरान अच्छी विविधता और विकल्प प्रदान करेगा। पिछली गर्मियों में मिच के पास प्लंकेट शील्ड अभियान का एक मजबूत हिस्सा था और उसने लाल गेंद की गेंदबाजी में अच्छी प्रगति की है। उनके पास उपमहाद्वीप की परिस्थितियों में भरपूर अनुभव है और एक वास्तविक ऑलराउंडर के रूप में बल्लेबाजी क्रम में गहराई जोड़ते हैं।

बांग्लादेश सीरीज के लिए न्यूजीलैंड टीम

टिम साउथी (कप्तान), टॉम ब्लंडेल (विकेटकीपर), डेवोन कॉनवे, मैट हेनरी, काइल जैमीसन, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, हेनरी निकोल्स, अजाज पटेल, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, मिशेल सेंटनर, ईश सोढ़ी, केन विलियमसन, विल यंग

बांग्लादेश बनाम न्यूजीलैंड टेस्ट सीरीज

दो दिवसीय अभ्यास मैच - 23-24 नवंबर - सिलहट

पहला टेस्ट - 28 नवंबर - 2 दिसंबर - सिलहट

दूसरा टेस्ट - 6-10 दिसंबर - शेर-ए-बांग्ला नेशनल क्रिकेट स्टेडियम, ढाका

यह शर्मनाक, खेल की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा: एंजेलो मैथ्यूज

नई दिल्ली (एजेंसी)। श्रीलंका के ऑलराउंडर एंजेलो मैथ्यूज ने बांग्लादेश के खिलाफ उनके 'टाइम आउट' के लिए विरोधी टीम और कप्तान शाकिब अल हसन की अपील को 'शर्मनाक' करार दिया और कहा कि इससे खेल की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा है। मैथ्यूज अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 'टाइम आउट' होने वाले पहले बल्लेबाज बने। मैथ्यूज जैसे ही क्रीज पहुंचे और हेलमेट लगाने लगे तो उसका स्ट्रैप टूट गया।

उन्होंने ड्रेसिंग रूम से दूसरा हेलमट लाने का इशारा किया लेकिन इसमें दो मिनट से अधिक का समय लग गया। इस बीच शाकिब ने मैथ्यूज के खिलाफ टाइम आउट की अपील की और अंपायर मराइस इरासमस ने उन्हें आउट करार दे दिया मैथ्यूज ने कहा कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया था और यह सिर्फ साजो सामान के खराब होने से जुड़ी समस्या थी।

मैथ्यूज ने श्रीलंका की तीन विकेट की हार के बाद कहा, 'मैंने कुछ भी गलत नहीं किया था। मेरे पास क्रीज पर पहुंचने और खुद को तैयार करने के लिए दो उपकरण की खराबी थी। और मुझे नहीं पता कि सामान्य समझ कहां गई। अगर वे इस तरह क्रिकेट खेलना चाहते हैं तो जाहिर तौर पर यह शाकिब और बांग्लादेश के लिए शर्मनाक है। अगर वे उस स्तर तक गिर गए हैं तो मुझे लगता है कि कुछ बहुत गलत है।%

उन्होंने कहा, 'नियम कहता है कि आपको दो मिनट के भीतर तैयार रहना होगा और मैं वहां दो मिनट 45 या 50 सेकेंड तक था। मेरा हेलमेट टूटने के बाद भी मेरे पास पांच सेकेंड और थे और अंपायरों ने भी हमारे कोच से कहा है कि उन्होंने मेरा हेलमेट टूटते नहीं देखा। मेरा मतलब है, मैं सिर्फ अपना हेलमेट मांग रहा था। मैथ्यूज ने कहा, 'यह सिर्फ सामान्य समझ है। मैं मांकडिंग या क्षेत्ररक्षण में बाधा डालने की बात नहीं कर रहा हूं। यह बिल्कुल सामान्य समझ है। खेल की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया गया। यह बेहद शर्मनाक है।

मैच के बाद श्रीलंका के खिलाड़ियों ने बांग्लादेश के खिलाड़ियों के साथ हाथ नहीं मिलाया, टीम के इस बर्ताव के बारे में पूछे जाने पर मैथ्यूज ने कहा,

सम्मान करते हैं। मेरा मतलब है कि हम सभी इस खूबसूरत खेल के दूत हैं जिनमें अंपायर भी शामिल हैं। तो फिर यदि आप सम्मान नहीं करते हैं और यदि आप आप और क्या मांग सकते हैं?

मैथ्यूज ने कहा कि अब उनके मन में शाकिब और बांग्लादेश की टीम के लिए कोई सम्मान नहीं है। बांग्लादेश टीम का काफी सम्मान था। जाहिर है आप सभी जीतने के लिए खेलते हैं। और यदि यह नियम के अंतर्गत है तो ठीक है। लेकिन नियम स्पष्ट रूप से कहता है, आज मेरे मामले में मैं दो मिनट के भीतर वहां था। हमारे पास वीडियो सबूत हैं। हम बाद में एक बयान देंगे। हमारे पास वीडियो सबूत हैं, फुटेज हैं, सब कुछ देखा गया। मैं यहां सिर्फ आकर बातें नहीं कह रहा हूं। मैं सबूत के साथ बात कर रहा हूं।

मैथ्यूज ने कहा, 'हमारे पास वीडियो सबूत हैं जहां कैच लेने के समय से लेकर और फिर जब मैं क्रीज में चला गया, तब भी मेरे पास हेलमेट टूटने के बाद पांच सेकेंड का समय था। हम खिलाड़ियों की सुरक्षा के बारे में बात करते हैं- आप लोग मुझे बताएं कि क्या मेरे लिए बिना हेलमेट के गार्ड लेना सही है?

मैथ्यूज ने अंपायरों को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा कि वे उन्हें आउट देने से पहले तकनीक का इस्तेमाल कर सकते थे। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि उस समय अंपायरों की बड़ी जिम्मेदारी थी खिलाड़ी की सुरक्षा के बारे में बात करते हैं। वे स्पिनर के खिलाफ विकेटकीपर को बिना हेलमेट के विकेटकीपिंग नहीं करते देते तो मैं बिना हेलमेट के गार्ड कैसे ले सकता हूं। यह पूरी तरह से उपकरण की खराबी है।

मैथ्यूज ने कहा कि उन्होंने अपने 15 साल के करियर में किसी टीम को इतना नीचे गिरते हुए नहीं देखा और वे स्तब्ध थे कि इस मामले में समझदारी से काम नहीं लिया गया। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि अपने 15 साल के करियर में मैंने कभी किसी टीम को उस स्तर तक नीचे जाते नहीं देखा क्योंकि जाहिर तौर पर अंपायरों ने भी स्वीकार किया कि यह उपकरण की खराबी थी और वे तीसरे अंपायर से इसे दिखा सकते थे।

मैथ्यूज ने कहा, 'उस समय ऐसा नहीं करने और फिर बाद में कहने का क्या मतलब है? मैं यह नहीं कह रहा हूं कि अगर मैं वहां होता तो हम मैच जीत सकते थे। यह एक अलग कहानी है लेकिन फिर भी, तकनीक का उपयोग करने के लिए आपके अंदर सामान्य समझ जरूरी है। साथ ही यह स्पष्ट रूप से एक खराबी थी। मेरा मतलब है कि यह बस टूट गया। मेरा इरादा इसे खींचकर तोड़ने का नहीं था। मेरे पास फिर भी समय था और मैं पूरी

सुबह-सुबह वोट डालने पहुंचे सीएम जोरमथांग, बैरंग लौटना पड़ा

अइज़ोल, एजेंसी। मिजोरम में विधानसभा की 40 सीटों के लिए मतदान कराए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री जोरमथांग सुबह-सुबह अपना वोट डालने पहुंच गए थे लेकिन मतदान केंद्र से उन्हें बैरंग लौटना पड़ गया। बूथ पर ईवीएम में कुछ खराबी आ गई थी और इसलिए वह काम नहीं कर रही थी। मुख्यमंत्री को एक जरूरी बैठक में शामिल होना था इसलिए वह लौट गए। बाद में उन्होंने मतदान किया। मुख्यमंत्री ने बताया, मशीन काम नहीं कर रही थी। हमने कुछ समय इंतजार किया लेकिन मशीन चल नहीं पाई। अब मैं बाद में अपना वोट

डालूंगा।

सरकार बनाने का विश्वास: मुख्यमंत्री और मिजो नेशनल फ्रंट के चीफ जोरमथांग ने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि उनकी पार्टी बहुमत की सरकार बना लेगी। उन्होंने कहा कि सरकार बनाने के लिए 21 सीटों की जरूरत है जबकि उनकी पार्टी को 25 से ज्यादा सीटें मिलने जा रही हैं। उन्होंने कहा, कोरोना की चुनौती के बाद भी राज्य में विकास कार्य हुए हैं। इसलिए जनता को उनकी सरकार पर भरोसा है।

मुख्यमंत्री जोरामथांग ने कहा कि राज्य में वह भाजपा के साथ गठबंधन में नहीं हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र में वह एनडीए के साथ हैं। राज्य में भी वैचारिक रूप से एनडीए के साथ हैं लेकिन इस चुनाव में उनका भाजपा से गठबंधन नहीं है। उन्होंने कहा कि अब तक ना तो भाजपा ने गठबंधन के लिए कहा है और ना ही उन्होंने ही भाजपा से कोई आग्रह किया है। बता दें कि जोरामथांग ऐजॉल ईस्ट - 1 से चुनाव लड़ रहे हैं। इस बार 40 सीटों के लिए 174 उम्मीदवार मैदान में हैं। चुनाव परिणाम का ऐलान 3 दिसंबर को किया जाएगा। मिजोरम के अलावा आज छत्तीसगढ़ में भी पहले चरण का मतदान करवाया जा रहा है। मिजोरम में चुनाव के दौरान तीन राज्यों से जुड़ी सीमाओं को सील कर दिया गया है। इसके अलावा मिजोरम की सीमा म्यांमार और बांग्लादेश से भी लगती है। इसे भी सील किया गया है।

ममता बनर्जी ने कसा तंज- मैंने अपने नाम पर कोई सड़क या स्टेडियम नहीं बनवाया

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने केंद्र सरकार की ओर से कई स्कीमों के लिए फंड न जारी किए जाने पर एक बार फिर हमला बोला। उन्होंने भवानीपुर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे किसी पब्लिसिटी की जरूरत नहीं है। ममता ने कहा कि मेरे नाम पर कोई स्टेडियम या फिर रोड नहीं है। ममता बनर्जी ने किसी का नाम नहीं लिया, लेकिन माना जा रहा है कि पीएम नरेंद्र मोदी पर उन्होंने तंज कसा है। उन्होंने कहा कि गरीब लोगों को 100 दिनों के काम के बाद भी पेमेंट नहीं मिल पा रही है। ममता ने कहा, हमें मनरेगा के लिए फंड नहीं मिल रहा है। पीएम

आवास और सड़क योजना के लिए भी केंद्र सरकार की ओर से फंड अटका है।

उन्होंने कहा दुर्गा पूजा के एक आयोजन में कहा कि हम सद्भाव और धार्मिक एकता का संदेश दे रहे हैं। हम विभाजनकारी राजनीति नहीं करते। यहां किसी से भी धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं होता और सभी को साथ लेकर चलते हैं। पूरी दुनिया ही वैश्विक ग्राम है। मैं अपनी जन्मभूमि से प्यार करती हूं। इसलिए मैं ज्यादातर चुप ही रहती हूं और किसी भी नेता पर निजी हमले नहीं करती। उन्होंने कहा कि यह धरती तो संस्कृति, एकता और सद्भाव की है। यही वह धरती है, जहां से आजादी का संघर्ष शुरू हुआ था। सीएम ने कहा कि देश की आजादी के संघर्ष में बंगाली और सिख समुदाय ने अपना सर्वश्रेष्ठ बलिदान दिया था। लोकसभा चुनाव 2024 से पहले बंगाल में टीएमसी मुश्किलों का सामना कर रही है। एक तरफ राशन घोटाले के आरोप में ज्योतिप्रिय मलिक को ईडी ने अरेस्ट कर लिया है तो वहीं महुआ मोइत्रा के खिलाफ संसदीय समिति जांच कर रही है। उन पर कैश के बदले सवाल पूछने का आरोप लगा है। इसके अलावा ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के खिलाफ भी ईडी की जांच चल रही है और उनसे पूछताछ भी की जा चुकी है। इसके अलावा कई अन्य मंत्री भी अरेस्ट हो चुके हैं। ऐसे में भ्रष्टाचार के मामलों में घिरी टीएमसी क्या रणनीति अपनाएगी, यह देखने वाली बात होगी।

सनातन धर्म पर उदयनिधि स्टालिन की बयानबाजी जारी, फिर बोले- हमेशा करूंगा विरोध

चेन्नई, एजेंसी। सनातन धर्म को लेकर तमिलनाडु सरकार में मंत्री और मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के बेटे उदयनिधि की टिप्पणियां जारी हैं। उन्होंने साफ कर दिया है कि वह सनातन धर्म को लेकर अपना रुख नहीं बदलेंगे। साथ ही उदयनिधि का कहना है कि उन्होंने कुछ गलत नहीं कहा है। इधर, मद्रास हाईकोर्ट ने कार्रवाई नहीं करने को लेकर पुलिस की भी आलोचना की है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, मैंने जो कहा, उसमें कुछ भी गलत नहीं था। हम कानूनी रूप से मामले का सामना करेंगे। मैं अपना रुख नहीं बदलूंगा। मैंने केवल अपनी विचारधारा के बारे में बात की है। मद्रास उच्च न्यायालय की टिप्पणी के बारे में एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने अपना रुख दोहराया।

उदयनिधि ने कहा, मैंने कुछ भी गलत नहीं कहा है। मैंने जो भी कहा सही कहा है और कानूनी रूप से इसका सामना करूंगा। मैं अपना बयान नहीं बदलूंगा। मैंने अपनी विचारधारा की बात की है। जो भी आंबेडकर, पेरियार या तिरुमावलावन से ज्यादा कुछ नहीं कहा है मैं विधायक, मंत्री या युवा

मोर्चा का सचिव हो सकता हूं और शायद कल न रहूं। इंसान होना ज्यादा जरूरी है।

डीएमके नेता ने कहा, हम कई सालों से सनातन धर्म की बात कर रहे हैं। जबकि, नीट 6 साल पुराना मुद्दा है। यह सदियों पुराना मुद्दा है। हम इसका हमेशा विरोध करेंगे। सितंबर में ही उदयनिधि ने सनातन धर्म को उखाड़ने की बात कही थी। साथ ही सनातन की तुलना बीमारियों से की थी। अदालत ने एक संबंधित याचिका पर कहा था कि यह पुलिस की ओर से कर्तव्य में लापरवाही थी क्योंकि उसने उदयनिधि स्टालिन और हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग के मंत्री पीके शेखरबाबू के खिलाफ कार्रवाई नहीं की, जिन्होंने यहां दो सितंबर को सनातन धर्म उन्मूलन सम्मेलन में भाग लिया था।

लखनऊ की 2.6 हजार सेक्स वर्कर भी चुनेंगी सांसद, मतदाता सूची में शामिल

लखनऊ , एजेंसी। लखनऊ में करीब 2.6 हजार सेक्स वर्कर हैं। चुनाव आयोग के निर्देश पर तीन सरकारी एजेंसियों की मदद से इनको चिह्नित कर मतदाता सूची में शामिल किया गया है। सेक्स वर्कर भी इस बार सांसद चुनने केलिए मताधिकार का प्रयोग कर सकेंगी। चुनाव आयोग ने इस संबंध में विशेष निर्देश जारी किए थे। इसके बाद एड्स कंट्रोल सोसाइटी, राज्य टीबी नियंत्रण और समाज कल्याण विभाग के समन्वय से विभिन्न इलाकों में रहने वाली सेक्स वर्कर को चिह्नित किया गया।

50 साल के कांग्रेस विधायक ने बिना तलाक के किया दूसरा निकाह, चुनावी एफिडेविट में जिक्र

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में कांग्रेस विधायक अमीन कागजी ने हिंदू युवती से दूसरी शादी है। 50 साल के विधायक कागजी ने बिना तलाक के दूसरा निकाह किया है। चुनावी हलफनामे में इसका जिक्र किया है। विधायक कागजी ने नामांकन के अंतिम दिन सोमवार को जयपुर की किशनपोल से पर्चा दाखिल किया है। कागजी ने 2018 का चुनाव किशनपोल से ही जीता था। कांग्रेस ने दूसरी बार फिर से टिकट दिया है। विधायक कागजी की पहली पत्नी का नाम रेशमा है, जिनसे उनके चार पुत्र-पुत्रियां हैं। इसका जिक्र उन्होंने 2018 के विधानसभा चुनाव के दौरान किया था। इस बार जब चुनावी नामांकन पत्र भरा गया तो उसमें दूसरी पत्नी का जिक्र भी है। शपथ पत्र में मोनिका शर्मा कागजी के नाम से दूसरी पत्नी का जिक्र किया गया है। वहीं, बात करें कागजी की संपत्ति की तो 5 साल में 95.78 लाख संपत्ति कम हुई है। साल 2018 में कुल सम्पत्ति (चल व अचल) 7.82 करोड़ सम्पत्ति, जो इस बार 95.78 लाख रुपए कम होकर 6.86 करोड़ रह गई।चुनावी हलफनामे के अनुसार दोनों पत्नियों रेशमा और मोनिका के नाम भी सम्पत्ति है। रेशमा के नाम 13.73 लाख और मोनिका के नाम 12.73 लाख की चल सम्पत्ति हैं। दोनों के पास 21-21 तोला सोना, 15-15 हजार नकदी और बैंक में जमा राशि है। बता दें जयपुर की किशनपोल से कांग्रेस विधायक अमीन कागजा गहलोत सरकार के नं. दो माने जाने वाले मंत्री शांति धारीवाल से भिड़ चुके हैं। कागजी ने आरोप लगाया था कि धारीवाल ने कोटा का विकास कराया। जयपुर का नहीं है। कोटा से कांग्रेस की सरकार नहीं बनेगी। इस तरह का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। इस तरह एक बार गहलोत के स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीणा के आवास पर जमकर बवाल काटा था। दरअसल, विधायक कागजी का आरोप था कि उनके विधानसभा क्षेत्रों के चिकित्सकों का तबादला धर्म के आधार पर किया गया है। इस पर हंगामा कर दिया। हालांकि, बाद में विवाद बढ़ने पर स्वास्थ्य मंत्री ने तुरंत ही तबादले के आदेश निरस्त कर दिए थे।

राजस्थान के तीतर सिंह, 78 साल की उम्र, घर का सामान बेच भरा पर्चा

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान के तीतर सिंह ने 78 साल की उम्र में 32 वीं बार नामांकन पत्र दाखिल किया है। चुनाव लड़ने का ऐसा जुनून की घर का सामान बेचकर नामांकन पत्र भरा है। श्रीकरणपुर विधानसभा क्षेत्र के गांव 25 एफ गुलाबेवाला निवासी तीतर सिंह पुत्र सौदागर सिंह मजहबी सिख दिहाड़ी मजदूरी से जुड़े हैं। पहली बार 1985 में विधानसभा चुनाव में पहला नामांकन दाखिल किया था। इसके बाद उन्होंने हर विधानसभा व लोकसभा चुनाव के साथ सरपंच व पंचायत समिति सदस्य के लिए नामांकन-पत्र दाखिल किया। खास बात ये है कि तीतर सिंह की हर बार जमानत जब्त हुई लेकिन उन पर चुनाव लड़ने का जुनून सवार है। उनका कहना है कि जनप्रतिनिधि बनकर वो गरीबों का उत्थान करना चाहते हैं और यह भी ख्वाहिश है कि इतने नामांकन दाखिल करने पर उसका नाम गिनीज बुक में दर्ज हो। तीतर सिंह को श्रीकरणपुर का धरतीपकड़ भी कहा जाने लगा है। पत्नी गुलाब कौर के साथ नामांकन जमा कराने के बाद तीतर सिंह ने बताया कि उसने केवल पांचवीं तक पढ़ाई की लेकिन उम्र बीतने के साथ अब वह पढना-लिखना भूल गया है लेकिन हस्ताक्षर कर लेता है। विधानसभा चुनाव-2013 में तितर सिंह को 427 तथा विधानसभा चुनाव-2018 में उसे 653 वोट मिले थे। तीतर सिंह ने बताया कि जीविका उपार्जन के लिए उसका परिवार दिहाड़ी मजदूरी कर काम चलाता है। ऐसे में नामांकन-पत्र दाखिल करने के लिए उसे कई बार अपनी बकरियां और घर का सामान भी बेचना पड़ा। उनके पास करीब दो दर्जन बकरियां थी जो अब केवल तीन रह गई हैं। इस बार उन्होंने उधार और चंदा एकत्र कर पैसे एकत्र किए और नामांकन दाखिल किया।

राजस्थान में बीजेपी ने गलती से मुस्लिम को दिया टिकट? फिर वापस ले लिया

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में बीजेपी ने इस बार एक भी मुस्लिम को टिकट नहीं दिया है। अजमेर की मसूदा सीट से गलती से टिकट दे दिया, वह भी वापस ले लिया है। मसूदा विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी रहे अभिषेक सिंह चौहान का टिकट काट दिया है। बीजेपी ने राजपूत समझकर टिकट दिया था। ऐसा कहा जा रहा है कि अभिषेक चौहान मुस्लिम है। धर्मांतरण कर मुस्लिम बने है। अजमेर में विश्व हिंदू परिषद धर्म परिवर्तित कर मुस्लिम बने लोगों के हिंदू धर्म में वापसी के लिए काम कर रही है, लेकिन बीजेपी ने राजपूत समझ कर टिकट दे दिया। अभिषेक सिंह के ऊपर तथ्यों को छुपाने का आरोप है, इसलिए उनका नाम बीजेपी आलाकमान ने काट दिया है। अब उनकी जगह पर मसूदा से पूर्व प्रधान वीरेंद्र सिंह कानावत को टिकट देकर चुनावी मैदान में उतारा है। मसूदा में 30 हजार मुस्लिम वोट है। हार-जीत में निर्णायक भूमिका निभाते है। दरअसल, अजमेर की मसूदा सीट से भाजपा को प्रत्याशी बदलना पड़ गया। पूर्व घोषित अभिषेक सिंह चौहान के धर्म को लेकर विवाद के बाद टिकट बदल दिया गया। बीजेपी के कुछ नेताओं का आरोप है कि अभिषेक सिंह मुस्लिम है। अभिषेक के मेहरात्र गोत्र होने की वजह से विवाद हो गया। हालांकि, अभिषेक ने मीडिया से बात करते हुए इससे इंकार किया है। अभिषेक सिंह का कहना है कि वह पृथ्वीराज के वंशज है। वह पहले कांग्रेस से जुड़े थे। लेकिन बाद में बीजेपी में शामिल हो गए। ऐनवक्त पर बीजेपी के बैकफुट पर आना पड़ा। बता दें भाजपा ने तय किया था कि मुस्लिम को टिकट नहीं देंगे।

राजस्थान में बीजेपी ने एक भी मुस्लिम को टिकट नहीं दिया है। विधानसभा चुनाव 2018 में बीजेपी ने युनूस खान को टिकट दिया था। लेकिन सचिन पायलट के सामने हार का सामना करना पड़ा था। बीजेपी के एकमात्र मुस्लिम चेहरे युनूस खान ने इस बार बीजेपी छोड़ दी है। नागौर जिले की डीडवाना से निर्दलीय चुनाव लड़ रहे है। सियासी जानकारों का कहना है कि राजस्थान में 9 प्रतिशत मुस्लिम आबादी है। जो कि 36 सीटों पर असर डालती है। लेकिन इसके बावजूद बीजेपी ने एक भी मुस्लिम को प्रत्याशी नहीं बनाया है। अजमेर की मसूदा में करीब 30 हजार मुस्लिम है। राजपूत भी बड़ी संख्या में है। गुर्जर भी बड़ी संख्या में है। पिछली बार कांग्रेस के राकेश पारीक चुनाव जीते थे। सचिन पायलट गुट के माने जाते है। सियासी जानकारों का कहना है कि 30 हजार मुस्लिम होने के बावजूद बीजेपी ने मुस्लिम प्रत्याशी का टिकट काट दिया है।

कांग्रेस ने बंपर टिकट दिए

कनाडा में सिख फॉर जस्टिस पर बैन लगाने की मांग, पीएम जस्टिन ट्रूडो को लिखा गया भावुक पत्र

ओटावा, एजेंसी। प्रसिद्ध मीडिया संगठन रेडियो इंडिया (सरे) के प्रबंध निदेशक मनिंदर सिंह गिल ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो को पत्र लिखकर किसी विशेष पार्टी के बजाय पूरे पंजाबी सिख समुदाय के हितों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि एक मीडिया हस्ती के रूप में, यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे कनाडा में भारतीय-कनाडाई समुदाय के सामने आने वाली सुरक्षा चिंताओं को सक्षम सरकार के ध्यान में लाएं।

गिल ने कहा, कनाडा में भारतीय-कनाडाई समुदाय के खिलाफ नफरत और धमकी की हरकतें खतरनाक स्तर पर पहुंच गई हैं। कनाडा में दिनदहाड़े इंडो-कनाडाई समुदाय पर शारीरिक हमले आम हो गए हैं। सरे में भारतीय उच्चायुक्त संजय कुमार वर्मा के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम को लेकर उन्हें खुद भी शारीरिक हमले और जान से मारने की धमकियों का सामना करना पड़ा है, लेकिन देश में कानून के तहत उन्हें अभी तक कोई न्याय नहीं मिला है, जबकि ये हमले 19 मार्च 2023 को पुलिस अधिकारियों की मौजूदगी में हुए थे। पन्नू की धमकियां कर रहीं परेशान उन्होंने कहा कि सुरक्षा संबंधी

खतरे अब खुला आतंकवाद बन गए हैं क्योंकि सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) के गुरपतवंत पन्नू ने भारतीय समुदाय को एयर इंडिया पर हमला करने की खुलेआम धमकी दी है। पन्नू ने सिख समुदाय को खुलेआम चेतावनी दी है कि वे एयर इंडिया से यात्रा न करें क्योंकि उनकी जान को खतरा हो सकता है। यह आतंकी धमकी गुरपतवंत पन्नू की हिंदू समुदाय को दी गई धमकी के बाद आई है, जिसमें उन्होंने हिंदू समुदाय से कनाडा छोड़कर भारत वापस जाने को कहा था। उन्होंने कहा कि ये आतंकी धमकियां एयर इंडिया आतंकी हमले के 329 कनाडाई पीड़ितों को परेशान करती हैं, जिनके परिवार के सदस्य इस घटना में मारे गए थे। गिल ने कहा कि पन्नू की हालिया धमकियां उन परिवारों के घावों पर नमक छिड़कने के समान हैं जिन्हें आज तक न्याय नहीं मिला है।

कानून के बारे में बात करते हुए गिल ने कहा, झूठी सूचना फैलाकर किसी विमान की सुरक्षा को खतरे में डालना कनाडाई आपराधिक संहिता की धारा 77 के तहत आजीवन कारावास की सजा वाला अपराध है। कनाडा की आपराधिक संहिता की धारा 319(2) के तहत लोगों के एक समूह के खिलाफ जानबूझकर नफरत भड़काना एक गंभीर अपराध है। उन्होंने कहा कि भारतीय समुदाय इस बात से व्यथित है कि गुरपतवंत पन्नू जैसे लोग कनाडा में कानूनी छूट का आनंद क्यों ले रहे हैं।

पाकिस्तान ने अब तक 1.70 लाख से अधिक अफगानों को जबरन देश से निकाला

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान अपने प्रवासियों को वापस भेजने के अभियान के तहत अब तक 1.70 लाख से अधिक अफगानों को जबरन देश से निकाल चुका है।पाकिस्तान में अवैध रूप से रहे विदेशी नागरिकों को निकालने के अभियान के तहत रविवार को 6,500 से अधिक और अफगानिस्तानी नागरिकों ने तोरखम सीमा के रास्ते देश छोड़ दिया। इन्हें मिला कर पाकिस्तान छोड़ने वाले अफगान नागरिकों की कुल संख्या 1,70,000 से अधिक हो गई है। सीमा सरकार ने अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों को एक नवंबर तक पाकिस्तान छोड़ने का आदेश देते हुए कहा था कि ऐसा न करने पर उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।उसके इस कृत्य की अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार निकायों द्वारा जमकर आलोचना की जा रही है।

पाक सरकार के आदेश के बाद से ही इन नागरिकों की वापसी जारी है। समाचार पत्र डॉन ने अधिकारियों के हवाले से बताया कि 17 सितंबर से कुल 1,74,358 अफगान नागरिक अपने देश रवाना हो चुके हैं। स्वैच्छिक वापसी जारी है और हर बीतते दिन के साथ वापस जाने वालों की संख्या घट रही है। पाकिस्तान से प्रवासियों को वापस भेजने के अभियान में शामिल एक अधिकारी ने कहा, प्रवासियों को दी गई समय सीमा के खत्म होने तक देश की सीमा पर प्रवासियों की बड़ी संख्या थी लेकिन अब यह घट रही है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं और बच्चों समेत 6,584 अफगान नागरिकों ने रविवार को पाकिस्तान छोड़ दिया। वहीं शनिवार को खैबर पख्तूनख्वा और पंजाब की विभिन्न जेलों से 209 कैदियों को 46,936 पुरुषों, 35,507 महिलाओं और 85,331 बच्चों के साथ वापस भेजा गया।

पाकिस्तान से तीन नवंबर को 148 कैदियों, 44,718 पुरुषों, 33,699 महिलाओं और 82,221 बच्चों को वापस भेजा गया। आधिकारिक आंकड़ों में बताया गया कि अपनी इच्छा से अफगानिस्तान लौटने वाले लोगों के अलावा छोटे-मोटे अपराधों के कारण जेल में बंद कैदियों को भी वापस भेजा जा रहा है। कार्यवाहक सूचना मंत्री जान अचकजई के अनुसार, चमन सीमा से अफगानिस्तान के लगभग 700 नागरिक अपने देश गए।

मंत्री ने रविवार को क्वेटा के आयुक्त हमजा शफकत के साथ एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि अफगानिस्तान के 54,000 से अधिक नागरिक अपने देश लौट गए हैं। अधिकारियों ने अफगान परिवारों को यह भी आश्वासन दिया है कि स्वदेश वापस जाने का सारा खर्च सरकार उठाएगी।

हिमाचल में पकड़ा गया सवा दो करोड़ का गहना, विभाग ने वसूला 13 लाख का जुर्माना

शिमला, एजेंसी। सोमवार को एक्साइज विभाग ने हिमाचल प्रदेश में बड़ी कार्रवाई की है। विभाग ने दो जिलों में जांच के दौरान दो करोड़ रुपए से ज्यादा के गहने जब्त किए हैं। राज्य के उत्पाद शुल्क आयुक्त यूनुस ने इस बारे में जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि गहने बिना वैध डॉक्यूमेंट के थे। इस दौरान टीम ने 13 लाख रुपए का जुर्माना भी वसूला है। विभाग द्वारा यह कार्रवाई एक गुप्त सूचना के बाद की गई है। इसके साथ ही आयुक्त ने लोगों से शिकायत करने के लिए एक टोल फ्री नंबर भी साझा किया है। अवैध शराब भी जब्त की गई है। विभाग ने यह बड़ी कार्रवाई हिमाचल के दो जिलों में की है।। शिमला एक्साइज टीम ने 1.33 करोड़ रुपये और सोलन टीम ने 84 लाख रुपये के गहने जब्त किए गए हैं। राज्य के उत्पाद शुल्क आयुक्त ने सोमवार को यहां जारी एक बयान में कहा कि दोनों टीमों ने वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) अधिनियम, 2017 के तहत कुल 13 लाख रुपये का जुर्माना भी वसूला है। उन्होंने बताया कि टीम ने राज्य के कई जिलों में अवैध शराब विक्रेताओं के खिलाफ उत्पाद अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए 200 लीटर शराब भी नष्ट की है। इस दौरान 23 पेटी अंग्रेजी शराब भी जब्त की गई है।

ईरान की जेल में कैद नोबल पुरस्कार विजेता नरगिस मोहम्मदी भूख हड़ताल पर बैठीं

दुबई, एजेंसी। नोबल शांति पुरस्कार विजेता नरगिस मोहम्मदी ने उनके साथ-साथ अन्य कैदियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने से रोकने और देश में महिलाओं के लिए हिजाब अनिवार्य किए जाने के विरोध में सोमवार को भूख हड़ताल शुरू की। मानवाधिकार कार्यकर्ता को मुक्त करने के लिए चलाए जा रहे अभियान के सदस्यों ने एक बयान जारी कर यह जानकारी दी। मोहम्मदी (51) के इस फैसले ने उन्हें कैद करने को लेकर ईरान के 'धर्मतन्त्र (धर्म के नाम पर नियम बनाना) पर दबाव बढ़ा दिया है। मोहम्मदी को एक महीने पहले ही, उनके वर्षों पुराने अभियान के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित करने का ऐलान किया गया था। मोहम्मदी ने सरकार के हिजाब अनिवार्य करने के फैसले के खिलाफ अभियान चलाया है, जिसपर ईरान सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया।

इस बीच, जेल में कैद एक अन्य कार्यकर्ता अधिवक्ता नसरीन सोतौदेह को भी चिकित्सा सुविधा की जरूरत है लेकिन अभी तक उन्हें मदद नहीं मिली है। नसरीन को एक नाबालिग लड़की के अंतिम संस्कार समारोह में शामिल होने के लिए गिरफ्तार किया गया था, जिसकी मौत तेहरान मेट्रो में हिजाब नहीं पहनने की वजह से विवादास्पद हालात में हुई थी। नरगिस मोहम्मदी को मुक्त करने के लिए चलाए जा रहे अभियान 'फ्री नरगिस मोहम्मदी के एक कार्यकर्ता ने विदेश में रह रहे उनके परिवार के एक बयान का हवाला देते हुए कहा कि नरगिस ने सोमवार को एविन जेल से एक संदेश भेजकर अपने परिवार को सूचित किया है कि उन्होंने कई घंटों पहले भूख हड़ताल शुरू कर दी है। बयान के मुताबिक, मोहम्मदी और उनके वकील कई सप्ताह से उन्हें

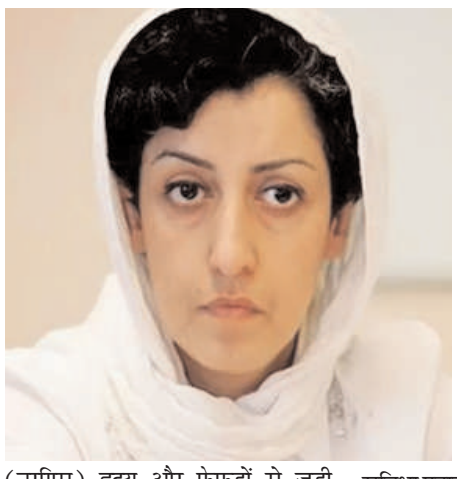

(नरगिस) हृदय और फेफड़ों से जुड़ी समस्याओं के लिए किसी विशेषज्ञ अस्पताल में भर्ती कराए जाने की मांग कर रहे हैं।

कुछ दिन पहले मोहम्मदी के परिवार ने बताया कि उनकी तीन नसें अवरुद्ध हैं और फेफड़ों में भी समस्या है। इसके बावजूद जेल अधिकारियों ने हिजाब पहनने से मना करने के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराने से इंकार कर दिया। बयान के मुताबिक, नरगिस दो चीजों के विरोध में आज (सोमवार) से भूख हड़ताल पर हैं। पहली, बीमार कैदियों को चिकित्सा सुविधा प्रदान करने में विलंब और उन्हें सुविधा प्रदान नहीं करने की ईरान की नीति, जिसके परिणामस्वरूप लोगों की मौत हो रही है। दूसरी, ईरानी महिलाओं के लिए हिजाब अनिवार्य करने की नीति। बयान में कहा गया है, ''अगर हमारी प्रिय नरगिस को कुछ भी होता है तो इस्लामिक राष्ट्र उसके लिए जिम्मेदार होगा। मोहम्मदी सिर्फ पानी, चीनी और नमक ले रही हैं । उन्होंने दवाइयां लेने से इंकार कर दिया है।

नरगिस मोहम्मदी को शांति पुरस्कार से सम्मानित करने वाली नॉर्वे की नोबल समिति ने उनके स्वास्थ्य को लेकर गंभीर चिंता जाहिर की है। समिति के प्रमुख बेरित रीज एंडरसन ने कहा ''महिला बंदियों को अस्पताल में भर्ती कराने के लिए हिजाब की अनिवार्यता अमानवीय और नैतिक रूप से अस्वीकार्य है। नरगिस ने स्थिति की गंभीरता बताने के लिए अनशन शुरू किया है। नार्वे नोबेल समिति ईरान के प्रशासन से नरगिस और अन्य महिला बंदियों को तत्काल आवश्यक चिकित्सा सुविधाएं मुहैया कराने का अनुरोध करती है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129